B2

मानक पाठ्य पुस्तक

हिन्दी

힌디어 표준교재 B2

한국외국어대학교 인도어과 · 인도학과

मज़ा आएगा

한국외국어대학교
HANKUK UNIVERSITY OF FOREIGN STUDIES

CFL 특수외국어교육진흥사업

पाठ
01

हिन्दू और सनातन संस्कार

पाठ उद्देश्य

हिन्दू जीवन शैली से जुड़े संस्कार की अवधारणा को समझ सकते हैं और उनसे संबंधित विषयों पर हिन्दी में बात कर सकते हैं।

도입 질문

- भारतीय लोग किन धर्मों का अनुसरण करते हैं?
- क्या आपने कभी 16 संस्कार के बारे में सुना है?
- किस धर्म को सनातन धर्म कहा जाता है?
- भारत के प्रसिद्ध धार्मिक विचारक कौन-कौन हैं?

16 संस्कार

हिन्दू धर्म भारत का प्राचीन धर्म है। इसे ही 'सनातन धर्म' भी कहा जाता है। इसमें जीवन के विभिन्न पड़ावों पर सोलह संस्कार संपन्न किए जाते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक के ये पवित्र सोलह संस्कार जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए हैं। ये सोलह संस्कार निम्नानुसार हैं :-

1. गर्भाधान : गर्भाधान संस्कार पहला संस्कार है। जीवन की उत्पत्ति या उत्तम संतान हेतु सबसे पहले गर्भाधान-संस्कार होता है। माता-पिता के रज एवं वीर्य के संयोग से गर्भस्थापन होता है। गर्भस्थापन के बाद अनेक प्राकृतिक दोषों के आक्रमण होते हैं, जिनसे गर्भ को सुरक्षित रखने के लिए यह संस्कार किया जाता है।

2. पुंसवन : पुंसवन संस्कार गर्भधारण के तीन महीने पश्चात होता है। तीन महीने के पश्चात गर्भस्थ शिशु का मस्तिष्क विकसित होने लगता है। इस पुंसवन संस्कार के द्वारा गर्भ में पल रहे शिशु में आदतों की नींव रखी जाती है।

3. सीमन्तोन्नयन : सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भ के चौथे, छठे और आठवें महीने में किया जाता है। इस समय गर्भ में पल रहा बच्चा सीखने के काबिल हो जाता है। उसमें अच्छे गुण, स्वभाव और कर्म का ज्ञान आए, इसके लिए मां उसी प्रकार आचार-विचार, रहन-सहन और व्यवहार करती है।

4. जातकर्म : बालक का जन्म होते ही जातकर्म संस्कार किया जाता है। जातकर्म संस्कार से शिशु के कई प्रकार के दोष दूर होते हैं। इसमें वैदिक मंत्रों का पाठ किया जाता है ताकि बच्चा स्वस्थ और दीर्घायु हो।

5. नामकरण : शिशु के जन्म के बाद 11वें दिन नामकरण संस्कार किया जाता है। इसमें ज्योतिष गणना के अनुसार शिशु का नाम रखा जाता है। उचित और सारगर्भित नाम रखने से उसका प्रभाव बालक शिशु के संपूर्ण जीवन पर पड़ता है।

6. निष्क्रमण : शिशु के जन्म के चौथे माह में निष्क्रमण संस्कार किया जाता है। निष्क्रमण का अर्थ होता है- 'बाहर निकालना'। मान्यता है कि मानव-शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और

आकाश, इन पांच तत्त्वों से बना है जिन्हें पंचभूत कहा जाता है। निष्क्रमण संस्कार द्वारा शिशु का पिता पंचभूत के देवताओं से बच्चे के कल्याण की प्रार्थना करता है।

7. अन्नप्राशन : अन्नप्राशन संस्कार 6-7 महीने की उम्र में किया जाता है। इस संस्कार के साथ बच्चे को अन्न खिलाने की शुरुआत हो जाती है।

8. चूड़ाकर्म : शिशु के सिर से जब प्रथम बार बाल उतारे जाते हैं, तब वह चूड़ाकर्म या मुण्डन संस्कार कहलाता है। यह संस्कार एक वर्ष या तीन वर्ष या पांच वर्ष या सात वर्ष की आयु में किया जाता है। मान्यता है कि गर्भ में आने के बाद शिशु के सिर पर माता-पिता के दिए बाल ही रहते हैं जिन्हें काटने से शुद्धि होती है।

9. कर्णवेध : कर्णवेध संस्कार का अर्थ कान को छेदना है । इस संस्कार के पांच उद्देश्य बताए जाते हैं- आभूषण पहनने के लिए, ग्रहों के बुरे प्रभावों को समाप्त करने के लिए, मस्तिष्क तक जाने वाली नसों में रक्त का प्रवाह ठीक करने के लिए, श्रवण शक्ति बढ़ाने के लिए और यौन इन्द्रियों को पुष्ट करने के लिए।

10. यज्ञोपवीत : यज्ञोपवित यज्ञोपवीत को उपनयन या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। उपनयन संस्कार का अर्थ गुरु के पास ले जाना है। मान्यता है कि इस संस्कार से शिशु को बल, ऊर्जा और तेज की प्राप्ति होती है।

11. वेदारम्भ : इस संस्कार द्वारा शिशु की शिक्षा-दीक्षा का काम शुरु होता है। उससे वेदों का अध्ययन आरम्भ कराया जाता है।

12. केशांत : केशांत संस्कार विद्या अध्ययन से पूर्व किया जाता है। जिसका अर्थ है बालों का अंत करना। मान्यता है कि केशांत या कहें मुंडन द्वारा शिक्षा-प्राप्ति के पहले शुद्धि ज़रूरी है, ताकि मस्तिष्क ठीक दिशा में काम करे। प्राचीनकाल में गुरुकुल से शिक्षा-प्राप्ति के बाद भी केशांत संस्कार किया जाता था।

13. समावर्तन : समावर्तन संस्कार का अर्थ है वापसी। आश्रम या गुरुकुल से शिक्षा प्राप्ति के बाद व्यक्ति को फिर से समाज में लाने के लिए यह संस्कार किया जाता था। इसके द्वारा व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से जीवन के संघर्षों के लिए तैयार किया जाता था।

14. विवाह : विवाह संस्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। इसके अंतर्गत वर और वधू दोनों साथ रहकर धर्म के पालन का संकल्प लेते हुए परिणय करते हैं। विवाह द्वारा सृष्टि के विकास में योगदान देने की अवधारणा है।

15. आवसथ्याधाम : इस संस्कार द्वारा व्यक्ति को पारिवारिक दायित्वों से मुक्त कर उसके जीवन को समाज के प्रति समर्पित करने का संकल्प दिया जाता है।

16. श्रोताधाम या अंत्येष्टि : यह मनुष्य का अंतिम संस्कार होता है। शास्त्रों के अनुसार इंसान की मृत्यु यानि देहत्याग के बाद उसके मृत शरीर कोअग्नि में समर्पित किया जाता है। संस्कार की प्रक्रिया से मृत शरीर की विधिवत क्रिया करने से जीव की अतृप्त वासनाएँ शान्त हो जाती हैं।

सारिका आज सनातन धर्म के संस्कार बहुत खास नहीं लगते हैं। कुछ कुछ क्रियाएँ कर देने से क्या होता है?

नीलाक्ष मेरी राय अलग है। संस्कार को सिर्फ़ कुछ क्रियाएँ ही समझना अनुचित है। सभी संस्कारों के साथ जीवन का एक पड़ाव जुड़ा हुआ है। आपके कर्तव्य व दायित्व का भी निदर्शन संस्कारों में हुआ है। मनुष्य के संपूर्ण जीवन का एक व्यवस्थित क्रम संस्कारों में है।

सारिका ऐसा किस तरह से समझा जा सकता है? हर संस्कार की अवधारणा अलग-अलग प्रसंग के लिए पृथक दिखती है।

नीलाक्ष आप सभी प्रसंगों को एक मनुष्य के जीवन क्रम के सोपानों से जोड़कर देखेंगे तो स्पष्ट होने में कोई कठिनाई नहीं होगी। गर्भाधान संस्कार में जहाँ मनुष्य के आगमन की सूचना मिलती है वहीं अन्त्येष्टि संस्कार के साथ मनुष्य के गमन की सूचना मिलती है। सभी संस्कार का नियोजन इस आने-जाने के बीच है और सभी संस्कारों में एक सातत्य है।

सारिका तो आप यह प्रतिपादित करना चाहते हैं कि सनातन धर्म के संस्कारों की संकल्पना जीवन के विभिन्न सोपानों के अनुरूप है?

नीलाक्ष हाँ बिलकुल, उन संस्कारों के गहरे मायने हैं और वो जीवन को सुंदर और संतुलित करते हैं।

सारिका आप इन गहरे मायने को थोड़ा स्पष्ट करेंगे तो उचित होगा।

नीलाक्ष देखिए, संस्कारों को मनुष्य के व्यक्तित्व -विकास में बड़ी भूमिका निभाते पाया गया है। जीवन को संस्कारों ने परिष्कृत और शुद्ध किया तथा उसकी भौतिक तथा आध्यात्मिक आकांक्षाओं को भी पूर्ण किया है। मसलन गर्भाधान तथा अन्य प्राक्- जन्म संस्कार, यौनविज्ञान और प्रजनन-शास्त्र की दृष्टि से एकदम सही और संतुलित कार्य-योजना है।

नीलाक्ष इस संदर्भ में किसी सनातन धर्म के गंभीर अध्येता के पास ज़्यादा विस्तार से जानकारी होगी।

सारिका एक बात तो तय है कि प्राणी के जन्म के समय परमात्मा उसे ज्ञान देता है और यह बात समझ में आ रही है कि वह आधार ज्ञान मनुष्य में सुप्त रूप में होता है। अन्य प्राणियों में वह अनुभूत होती है। गाय का शिशु जन्म लेते ही कूदने लगता है, शरीर की सफ़ाई कैसे की जाए उस बछड़े को सिखाना नहीं पड़ता। मनुष्य के साथ वैसी बात नहीं होती। मनुष्य को शरीर साफ़ करना, खाना खाने आदि का अनुभव करवाना पड़ता है। उसे जो ज्ञान दिया जाता है वही संस्कार हैं। मानव को पहले शरीर, फिर बुद्धि, फिर प्रकृति और फिर समाज का ज्ञान देना होता है। यही सारी बातें संस्कार में होती हैं ।

नीलाक्ष वाह ! अब प्रतीत हो रहा है कि आपको संस्कार, उनके प्रभाव व महत्व की की बात समझ में आ रही है। आपने बिलकुल सही शब्दों में उसे पहचानने की कोशिश की है।

सनातन संस्कार

आज हम जिसे हिन्दू धर्म के नाम से जानते हैं, उसका प्राचीनतम नाम सनातन धर्म है। सनातन धर्म की विविधता तथा इसके रीति-रिवाजों का विशालतम स्वरूप ही इसकी पहचान है। सनातन धर्म में मनुष्य के समस्त क्रियाकलापों के लिए कई शाश्वत नियमों का उल्लेख किया गया है। उन्हीं नियमों में से एक सोलह संस्कार संदर्भी नियम हैं। एक मनुष्य को जीवन में उसे किन-किन पड़ावों से होकर गुज़रना पड़ता है इसका उल्लेख एवं क्रिया-विधि, इन सोलह संस्कारों के जरिए बताई गई है। यदि उन 16 संस्कारों की प्रासंगिकता की बात करें तो हम कह सकते हैं कि सनातन धर्म के समस्त विधि एवं नियम किसी न किसी रूप में वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हैं। हाँ, ये ज़रूर कह सकते हैं कि अन्य संस्कृति व व्यवहार के लोगों को उसकी प्रासंगिकता नहीं दिखती । लेकिन, अगर बात करें; भारतीय परिप्रेक्ष्य व देश, काल परिस्थिति की तो उन विधियों एवं नियमों का बहुत ही महत्व है।

महर्षि वेदव्यास ने 'संस्कार' शब्द को परिभाषित करते हुए बताया है कि संस्कार अपने भीतर कई गुणों को समाए हुए होता है। व्यक्ति के जीवन को ठीक करना, दोष, त्रुटि का निकाला जाना, मन में सकारात्मक विचारों को पैदा करना, ख़ुद को पवित्र करना, शिष्टता, धार्मिक कृत्य आदि सभी संस्कार का ही हिस्सा हैं। संस्कार सनातन धर्म की वह चेतना है, जो उस धर्म के मानने वालों को जीने का सलीका सिखाती है। संस्कार, धार्मिक और सामाजिक जीवन की पहचान प्रदान करते हैं। हिंदुओं ने जिन 16 संस्कारों का प्रावधान रखा है, माना जाता है कि उनका पालन करने से गुणों में वृद्धि होती है। वास्तव में, मनीषियों ने व्यक्ति को सुसंस्कृत तथा सामाजिक बनाने के लिए पहले शोध किए और फिर परिणाम देखने के बाद नियमों का संकलन कर उसे संस्कार का नाम दिया है। हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों को सामाजिक शास्त्र और मनोविज्ञान से जुड़े चिकित्सक और वैज्ञानिकों ने भी मान्यता दी है।

सनातन धर्म में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, विद्यारंभ, केशांत, समावर्तन, विवाह, आवसश्याधाम और अन्त्येष्टि के क्रम में बंधे 16 संस्कारों का पालन करने के बाद ही, धरती पर मनुष्य के जीवन को पूर्ण माना गया है। हर संस्कार को निभाने के लिए निश्चित आयुसीमा तय की गई है। सभी संस्कारों का जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। लेकिन संसार में कोई भी विषय या वस्तु ऐसा नहीं है जिसमें केवल गुण या फिर केवल दोष ही व्याप्त हों। इसी प्रकार सनातन धर्म के सोलह संस्कारों में भी व्यक्ति कोई न कोई गुण-दोष निकाल ही लेगा। लेकिन अगर संपूर्णता में देखे तो अपने देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप सोलह संस्कारों का एक वैज्ञानिक एवं सामाजिक अस्तित्व रहा है और वर्तमान में भी इसका बहुत ही ज़्यादा महत्व है। सोलह संस्कारों के जरिये एक मनुष्य अपने और अपने वंश के जीवन-क्रम को एक विधि के साथ समाज में साझा करता है और अपना और अपने वंश को समाज और जीवन के लिए उपादेय बनाता है।

प्रश्न 1. सोलह संस्कारों के माध्यम से क्या बताया गया है?

प्रश्न 2. पाठ के अनुसार सोलह संस्कारों द्वारा मनुष्य क्या करता है?

प्रश्न 3. किन लोगों को संस्कारों की प्रासंगिकता नहीं दिखती?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

स्वामी विवेकानंद जी का जग प्रसिद्ध शिकागो भाषण हिंदी में

धरती पर सबसे प्राचीन सन्यासी समाज की ओर से मैं आपको धन्यवाद करता हूँ। सभी धर्मों की जन्मभूमि भारत एवं सभी वर्ग और समुदाय के लाखों-करोड़ो हिंदुओं की ओर से मैं पुनः आपका धन्यवाद करता हूँ।

मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्ताओं को भी है जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूँ जिसने इस धरती के सभी देशों और धर्मों के परेशान और सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इजराइलियों की पवित्र स्मृतियाँ सँजो कर रखी हैं जिनके धर्म स्थलों को रोमन हमलावरों ने तोड़ तोड़ कर खंडहर बना दिया था।

प्रश्न 1. किसने किनकी स्मृतियों को तोड़-तोड़ कर खंडहर बना दिया था?

प्रश्न 2. वक्ता के अनुसार उनका देश धर्मों को किस रूप में स्वीकार करता है?

प्रश्न 3. दुनिया में सहनशीलता का विचार कहाँ से फैला है?

मेमो

पाठ
02

स्वास्थ्य समस्याओं के निदान

पाठ उद्देश्य

स्वास्थ्य के संदर्भ में मोटापा जैसी अनेक बीमारी के मूल कारणों और उनके निदान के बारे में चर्चा कर सकते हैं।

도입 질문

- क्या आपने कभी वज़न घटाने के लिए प्रयास किया है?
- आप स्वस्थ रहने के लिए क्या करते हैं?
- क्या भारत में पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली है?
- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कब है?

स्वास्थ्य

मोटापा आधुनिक संस्कृति का अभिशाप है। कम श्रम और ज़्यादा भोजन इसका मुख्य कारण है। आजकल बच्चे भी मोटापे से ग्रस्त हो रहे हैं। मोटापे के कारण मधुमेह (Diabetes), उच्च रक्तचाप (High blood pressure), हृदय-विकार (Heart disease), जोडों का दर्द (Arthritis) आदि रोग बढ़ रहे हैं।

जानकारी

मोटापे का प्रमुख कारण वर्तमान का रहन-सहन है। आहार ज़्यादा और काम कम की संस्कृति के कारण मोटापा होता है। बढ़ती उम्र में मोटापे का आना सहज प्रवृत्ति होती है लेकिन उससे खुद को बचाकर शरीर को हल्का रखना जरुरी है। भोजन में ज़्यादा चावल-गेंहूँ जैसे अनाज, आलू, चीनी, मिठाईयाँ, तेल और घी शरीर में वसा का निर्माण-विकास करते हैं। कहते हैं शरीर से वसा निकालना बहुत ही मुश्किल काम है। कुछ लोगों को अनुवांशिक कारण से भी मोटापा होता है। कुछ में हॉर्मोन के असंतुलित होने से मोटापा बढ़ता है।

निदान

सामान्य वैज्ञानिक वजन से वजन ३०% ज़्यादा होना मोटापा कहलाता है। इसका अच्छा मानदंड बॉडी मास इंडेक्स या बी.एम.आई. है। बी.एम.आई. तय करने के लिये कि.ग्रा. की संख्या को उँचाई मीटर के वर्ग से विभाजित करना होता है। बी.एम.आय. का १८-२५ के बीच रहना अच्छा माना जाता है। १८ से कम बी.एम.आय. कुपोषण की कोटि में आ जाता है। २६ से ३० तक का बी.एम.आय. मोटापा-पूर्व स्थिति मानी जाती है। ३०-३५ बी.एम.आय. मोटापा का वर्ग -१ है। ३५ -४० तक बी.एम.आय मोटापा वर्ग-२ में आता है। ४० के उपर बी.एम.आय. होना वर्ग ३ का मोटापा है। यह मानदंड महिला और पुरुष दोनों पर लागू होता है।

लेकिन बी.एम.आय. के नियम के कुछ अपवाद भी हैं। कुछ स्त्री-पुरुष ज़्यादा सघन या चौड़े कद के होते हैं। गठीला बदनवाले स्त्री-पुरुषों का बी.एम.आय. ३० तक सामान्य माना जाता है। कुस्तिथा वेट लिफ्टिंग करनेवाले खिलाडी ऐसे ही अपवाद हैं।

शरीर का वजन उँचाई से जुड़ा होता है। आदर्श उँचाई-वजन के लिए तालिकाएँ आसानी से उपलब्ध हैं। तालिकाओं में ब्रोका निदेशक की तालिका सबसे उपयुक्त है। आपकी उँचाई के से.मी. में से सौ का आकड़ा काटकर आदर्श वजन निकलता है। उदाहरण के तौर पर अगर उँचाई १६५ से.मी. है तो आदर्श वजन ६५ कि.ग्रा. होगा। त्वचा की तह द्वारा मोटापा नापना एक दूसरा तरीका है। इसके लिये कॅलिपर की ज़रूरत होती है। इसके द्वारा शरीर के चार जगहों से मोटापा नाँपा जाता है। बाँह का अगला अंग, बाँह का पीछे वाला भाग, पेट और पीठ पर कंधे की हड्डी के नीचे वाला भाग। इन चार जगहों के आँकड़ों को मिलाकर पुरुषों में ४० मि.मी. और महिलाओं में ५० मि.मी. से कम आता हो तो वह मोटापा नही होता है। इससे ज़्यादा की संख्या मोटापे की सूचक होती है। महिला और पुरुषों में नितंब और पेट पर वसा इकठ्ठा होती है। भारतीय पुरुषों में वैसे भी तोंद होने की प्राकृतिक प्रवृत्ति होती है। तोंद नाँपने के लिये कमर-नितंब का अनुपात उपयुक्त होता है। इसके लिए कमर या बेल्ट के नाँप को नितंब के नाँप से विभाजित करना होता है। महिलाओं में यह अनुपात ०.८५ से कम होना चाहिए। पुरुषों में यह अनुपात एक से कम होना चाहिए। वास्तव में तोंद को आधुनिक रहन-सहन से पैदा एक अभिशाप समझना चाहिए। हम इसको बिलकुल ख़त्म कर सकते हैं। सामान्यत: तोंद कम करना मुश्किल होता है। सिर्फ़ दृढ-निश्चयी और कृतशील व्यक्ति ही उसमें कामयाब हो सकते हैं।

उपचार

भर दम साँस युक्त कसरत और गुरुत्वाकर्षण के खिलाफ यानी ऊपरी दिशा में व्यायाम वसा को घटाता है। लेकिन ये ध्यान में रखना ज़रूरी है कि ३० मिनटों के व्यायाम के अनंतर ही वसा कम होता है। हफ्ता दो- हफ्ता जंगल-पहाड़ों में घूमना लेकिन कम भोजन करना मोटापा कम करने का मंत्र है। प्रकृत्ति व्यक्ति को दुरुस्त करती है। ज़रूरत हो तब डॉक्टरों की सलाह पर ही व्यायाम और सैर का प्रयोग करना चाहिए। आजकल वसा कम करने के लिये शल्य-क्रिया और दूसरे इलाज भी उपलब्ध हैं।

अन्य उपाय

मोटापा कम करने के लिये बैठे-बिठाये काम करने के वजाय अधिक से अधिक काम खड़े-खड़े करने का प्रयास करना चाहिए। पैदल चलने की आदत भी जरुरी है। हफ्ते में एक या दो बार भोजन टालना उचित भी होगा। भोजन में रोटी, चावल, चीनी, आलू और मिठाई को सीमित रखना होगा। तंतुमय आहार, साग-सब्ज़ी, फल और प्रोटीनयुक्त आहार उचित रहेगा। गेंहूँ में सोयाबिन मिलाकर भी प्रोटीन की मात्रा बढ़ा सकते हैं।

उज्ज्वल आजकल मोटापा फैशन ट्रेंड की तरह चल रहा है। हर व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट दिखना चाहता है। आप अपने थोड़े से बढ़े हुए वजन के कारण फिज़ूल में परेशान हो रहे हैं। आपको ज़्यादा नहीं सोचना चाहिए।

पायल अरे, यह सब आप क्या कह रहे हैं? मोटापा को ट्रेंड मानने वाले लोग वास्तव में मोटापा के नुक़सानों से परिचित नहीं हैं या दूसरों को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। मोटापा फैशन नहीं, अभिशाप है।

उज्ज्वल अभिशाप कैसे है? इतने लोग जो मोटापा को पसंद कर रहे हैं क्या उनके पीछे कोई सोच नहीं होगी?

पायल यह तो मुझे नहीं मालूम की उनकी सोच क्या है लेकिन वैज्ञानिक और व्यवहारिक दोनों सलीकों से मोटापा अभिशाप ही है।

उज्ज्वल आप अपनी बात को तर्कों से प्रमाणित कर सकती हैं?

पायल तर्क ही क्या तथ्य से भी प्रमाणित हो जाएगा। आप ख़ुद बताइए कि आजकल जितने रोग हैं क्या पहले होते थे?

उज्ज्वल आप कहना चाह रही हैं कि रोग और मोटापे के बीच कोई संबंध है? रोग और मोटापे का कैसा आपसी संबंध हो सकता है?

पायल यही तो समझने वाली बात है। आजकल जितने रोग आ रहे हैं उनमें से अधिकांश का संबंध मोटापे से है। आधुनिक जीवनशैली ने हम लोगों को कई प्रकार से आलसी बना दिया है। परिणामतः हमारा शरीर उस तरह से मजबूत नहीं बचा है जितना हम लोगों से पहले के लोगों का शरीर हुआ करता था।

उज्ज्वल यह कैसे विश्लेषित कर रही हैं ?

पायल आधुनिक जीवनशैली मानव के पास बहुत सारी सुविधाओं को लेकर आई है। इससे मानव उस तरह से शरीरीक परिश्रम नहीं कर पाता है जैसा श्रम वह सुविधाओं के न होने पर किया करता था। हमारे पूर्वजों को याद कीजिए जो अपने कामों और शौकों के लिए भी अधिक शारीरिक श्रम किया करते थे। वे शारीरिक श्रम बहुत ही ऊँचे किस्म का व्यायाम हुआ करता था।

उज्ज्वल ठीक ठीक, उनका शारीरिक श्रम ही इतना होता था कि आज की तरह विशेष समय निकाल कर जिम नहीं जान पड़ता था।

पायल हाँ , उस श्रम से उनके शरीर के भीतरी भाग कसे हुए रहते थे। उनके शरीर में वसा का जमाव नहीं होता था। आज के बहुत से रोगों का मूल कारण शरीर का कसा न होना और वसा ही ठहर रहा है। डायबिटीज़ ,उच्च रक्तचाप, हृदय की समस्या, हार्निया की बीमारी , थायराइड सब के पीछे वसा या अंग का ठीक से काम न करना ही दिखता है।

उज्ज्वल हाँ , ये तो है कि आज के बहुत से रोग वही सब है जिनका जिक्र आप कर रही हैं। तो क्या वे सारे रोग सिर्फ़ शरीर की गतिविधि कम हो जाने से हुई है ?

पायल बिलकुल, अब जरा पिछली पीढ़ी के लोगों को याद कीजिए जो शरीर का उपयोग बहुत अधिक करते थे। ये सच है कि उस समय सुविधाएँ नहीं थीं लेकिन शरीर के श्रम से उनके शरीर का संतुलन बना रहता था।

उज्ज्वल यह तो आपने आँखें खोलने वाली सच्चाई को उजागर कर दिया। तो क्या इसका यह भी अर्थ लिया जा सकता है कि आधुनिक जीवनशैली से शरीर की वसा और बे-कसाव को दूर नहीं किया जा सकता है।

पायल नहीं ऐसा तो नहीं है। आज के समय में हम अपनी जीवनशैली में थोड़ा संतुलन लाकर कई रोगों से बच सकते हैं। अपने देह धन को मूल्यवान बनाया जा सकता है।

उज्ज्वल इस पहलू पर भी थोड़ा प्रकाश डालिए; ताकि मैं अपनी ग़लत धारणा को पूरी दृष्टि के साथ बदल सकूँ।

पायल कैसी ग़लत धारणा ? आज के समय में ग़लत सही का निर्धारण कर सकना बहुत कठिन है।

बोलना

उज्ज्वल यह तो है लेकिन ; मैं जो यह समझता आ रहा था कि मोटापा बहुत बड़ी चीज़ नहीं है, इसलिए फैशन ट्रेंड भी है; वह आपके खरे विश्लेषण से बदल सा गया है।

पायल हाँ, सच है कि मोटापा फैशन ट्रेंड नहीं रोगों का घर है। इस मोटापे से बचने के लिए कई छोटे छोटे उपायों को अपना सकते हैं। जैसे पैदल चलना, थोड़ा कसरत कर लेना। इसके साथ ही भोजन में रोटी, चावल, चीनी, आलू और मिठाई जैसी चीजों को संतुलित रखते हुए; तंतुमय आहार, साग-सब्ज़ी, फल को बहुतायात में अपनाने से शरीर में वसा का जमाव नहीं हो पाएगा।

उज्ज्वल अरे वाह, ऐसे उपाय से वसा का जमाव नहीं होगा तो शरीर भी फुर्तीला रहेगा और बहुत से रोगों का मूल कारण समाप्त हो जाएगा।

पायल जब कारण ही नहीं होगा तो शरीर भी रोगों से मुक्त रहेगा। आधुनिक जीवनशैली में भी स्वास्थ्य बना रहेगा।

पढ़ना

गुड़ के गुण और उससे होने वाले आयुर्वेदिक इलाज

चीनी का एक बढ़िया विकल्प गुड़ है। गुड़ चीनी का अशोधित, कच्चा प्रकार है। गुड़ का भारत और दक्षिण एशिया में बड़े पैमाने पर भोजन में मिठास लाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसमें गन्ने के रस में मौजूद खनिज, पोषक-तत्त्व और विटामिन बरकरार रहते हैं। प्राचीन भारत की चिकित्सा-व्यवस्था आयुर्वेद में सूखी खांसी का उपचार, पाचन बेहतर करने और अन्य बहुत सी बीमारियों के इलाज में इसका इस्तेमाल किया जाता है।

इससे कई प्रकार के पकवान भी बनाए जाते हैं, जैसे; हलुआ, चूरमा तथा लपसी आदि। सर्दी, खांसी तथा जुकाम होने पर 10 ग्राम गुड़ को 40 ग्राम ताजे दही और 3 ग्राम काली मिर्च के चूर्ण के साथ रोजाना सुबह 3 दिनों तक लेने से सर्दी, खांसी और जुकाम में फ़ायदा मिलता है। इसके अलावे 100 ग्राम गुड़ में 1 चम्मच पिसी हुई सोंठ और 1 चम्मच कालीमिर्च मिलाकर इसके 4 भाग कर लें। इसे दिन में 4 बार खाने से भी खांसी व जुकाम में लाभ मिलता है। दमा रोग होने पर 3 ग्राम से 10 ग्राम तक की मात्रा में गुड़ और इसके बराबर ही सरसों का तेल आपस में मिलाकर 21 दिनों तक सेवन करें, इससे लाभ मिलेगा। गुड़ को काले तिल के साथ मिलाकर खाने से खांसी, जुकाम और ब्रोंकाइटिस जैसे कष्टकारी रोग नहीं होते हैं। दमा और सुखी-खाँसी होने पर 15 ग्राम गुड़ और 15 ग्राम सरसों का तेल मिलाकर चाटने से रोग ठीक होता है। इसे 30-40 दिन करने पर हर तरह का श्वास रोग भी ठीक हो जाता है। गुड़ कफ, विसर्प और हृदय रोग में भी लाभकारी है। इन रोगों के होने पर गुड़ और घी को बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन करने से लाभ मिलता है। मूत्रकृच्छ (पेशाब करने में कष्ट या जलन) होने से गुड़ का आंवले के चूर्ण के साथ सेवन करने से तुरंत लाभ मिलता है। पेट के विभिन्न रोगों में भी गुड़ लाभकारी है। खूनी दस्त, गुदा दर्द, मल का रुक कर आना और पेट का बड़ा होने पर गुड़ के साथ बेलगिरी का चूर्ण मिलाकर सेवन करने रोग ठीक हो जाते हैं। खट्टी डकार आने पर गुड़ की डली मुंह में रखकर धीरे-धीरें चूसने से डकार आना बंद हो जाता है।

पढ़ना

गुड़ का सेवन हमेशा करने से अम्लपित्त, पेट की गैस, मुंह के छाले, हृदय की कमजोरी और शरीर का ढीलापन दूर हो जाता है। गुड़ और मेथी दाना को पानी में उबालकर इस पानी को पीने से पेट में गैस बनने की शिक़ायत भी दूर हो जाती है। अग्निमान्द्य अथवा अपच होने पर गुड़ के साथ जीरा मिलाकर सेवन करने से भुख का कम लगना, अग्निमान्द्य, शीत, और वात रोग में भी लाभ मिलता है। इसी तरह से गुड़ और सोंठ का चूर्ण मिलाकर खाने से अपच की समस्या दूर हो जाती है।

गुड़ के गुण (Property)

गुड़ पेट को हल्का तथा साफ करता है। यह आंतों की घावों को ठीक भी करता है। सर्दी-जुकाम की अवस्था में इसका सेवन करना अधिक फ़ायदेमन्द होता है। यह शरीर से कफ़ को नष्ट करता है तथा हाजमा बढ़ाता है। यह दूसरे कई पदार्थों के साथ मिलकर कई रोग के लिए औषधि बन जाता है।

हानिकारक प्रभाव (Harmful effects)

गुड़ का अधिक मात्रा में सेवन करना गर्म प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिए हानिकारक हो सकता है। पित्त प्रकृति वालों को भी नया गुड़ नहीं खाना चाहिए। मोटापन, बुख़ार, भूख कम लगना, जुकाम और मधुमेह आदि रोगों के होने पर गुड़ नहीं खाना चाहिए; अन्यथा परेशानी बढ़ सकती है।

प्रश्न 1. गुड़ में कौन-कौन सी चीज प्राकृतिक रूप में पायी जाती हैं?

प्रश्न 2. दमा और सुखी खांसी होने पर क्या करने से लाभ मिलता है?

प्रश्न 3. गुड़ का इस्तेमाल कर कौन सा पकवान बन सकता है?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

आज की परिस्थिति में आपको निरोग रहना बहुत आवश्यक है। उसमें योग और प्राणायाम जरूर मदद करेगा। अपनी इम्यूनिटी के लिए योग करिए। अपनी एनर्जी बढ़ाने के लिए योग करिए। अपने आत्म विश्वास के लिए योग करिए। अपने आत्मबल के लिए योग करिए। अपना उत्साह बढ़ाने के लिए योग करिए और अपने मन की शांति के लिए भी योग करिए। साथियों, बीते पाँच वर्षों में पूरा विश्व योग से जुड़ा है। योग ने पूरे विश्व को जोड़ा है। अब इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को हमें अपने परिवार के स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह समर्पित करना है। हम खुद योग करें और दूसरों को भी प्रेरित करें ताकि हमारा परिवार और हमारा समाज स्वस्थ रहे।

प्रश्न 1. वक्ता के अनुसार योग दिवस को किसे समर्पित करना है?

प्रश्न 2. वक्ता के अनुसार निरोगी रहने में क्या मददगार हो सकता है?

प्रश्न 3. वक्ता के अनुसार योग क्यों करना चाहिए?

पाठ
03 हमारा समय और तकनीक

पाठ उद्देश्य

वेबिनार और कोरोना जैसे समसामयिक विषयों पर हिन्दी में चर्चा कर सकते हैं।

도입 질문

- कोविड-19 ने हमारे जीवन को कैसे बदल दिया है?
- सेमिनार और वेबिनार में क्या अंतर है?
- कोविड वायरस संक्रमण से बचाव के क्या उपाय हैं?
- क्या भारत के कोविड-19 टीके मान्यता प्राप्त हैं?

वेबिनार: आज के एजुकेशनल वर्ल्ड की पहली आवश्यकता

देश-दुनिया में 24x7 इंटरनेट सुविधा उपलब्ध होने की वजह से सारे कारोबारों और सिस्टम्स में बहुत बदलाव आ गया है। हमारा एजुकेशनल वर्ल्ड भी इससे अछूता नहीं है। आपके पास एक कंप्यूटर और एक इंटरनेट कनेक्शन है तो आप पूरी दुनिया में कहीं पर भी लोगों से तुरंत संपर्क क़ायम कर सकते हैं। इसी तरह, आजकल देश-दुनिया के स्टूडेंट्स पूरी दुनिया में कहीं से भी किसी भी कॉलेज या यूनिवर्सिटी की ऑनलाइन क्लासेज और सेमिनार अटेंड व आयोजित कर सकते हैं। इसी ऑनलाइन क्षेत्र में प्रोफेशनल लेवल पर विभिन्न कारोबारों और ऑफिशल वर्क के लिए वेबिनार के वास्तविक महत्व का पता चलता है। 'वेबिनार' शब्द 'वेब' और 'सेमिनार' शब्दों से मिलकर बना है। हर जगह आजकल एजुकेशनल फील्ड में वेबिनार्स पर ऑडियंस की लाइव प्रेजेंटेशन्स और इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया के माध्यम से काफ़ी उपयोगी और महत्वपूर्ण एजुकेशन भी ऑफर की जा रही है। इसलिए आज इस आर्टिकल में हम एजुकेशनल फील्ड में वेबिनार से प्राप्त होने वाले विभिन्न लाभों के बारे में चर्चा कर रहे हैं:

इंडियन एजुकेशनल वर्ल्ड में वेबिनार के प्रमुख फ़ायदे

फ्लेक्सिबिलिटी

वेबिनार लोगों को अपने घर, किसी कैफे, लाइब्रेरी या जहाँ भी व्यक्ति को सुविधा हो वैसे स्थान से कक्षा में भाग लेने या कक्षा का आयोजन करने का अवसर देता है। आपको अपनी कक्षा के लिए केवल एक विशिष्ट समय निर्धारित करने और सारे प्रासंगिक ऑडियंस को सूचित करने की ज़रूरत होती है। इससे लोगों को भी अपनी कक्षा के समय और तारीख को ध्यान में रखकर अपने निजी कार्य निर्धारित करने की स्वतंत्रता मिल जाती है। कॉलेज में नियमित कक्षा के मामले में ऐसा कुछ भी संभव नहीं हो पाता है।

कोर्सेज चुनाव

वेबिनार, विषयों और पाठ्यक्रमों के विस्तृत क्षेत्र में से छात्रों को अपनी पसंद का विषय या कोर्स चुनने का अवसर भी प्रदान करता है। कई बार ऐसी परिस्थितियां होती हैं, जब कोई व्यक्ति अपनी पसंद का कोई कोर्स नहीं चुन पाता है क्योंकि यह कोर्स उसके घर के पास के किसी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ाया जाता या वह व्यक्ति किसी नई जगह रहने के लिए तैयार नहीं होता है। कई बार कोई व्यक्ति किसी विषय में सिर्फ़ अपना ज्ञान और जानकारी बढ़ाना चाहता है। ऐसे ही मामलों में वेबिनार लोगों को अपनी पसंद के कोर्स करने की स्वतंत्रता मुहैया करवाता है और वह भी बिना किसी नई जगह रहने की परेशानी के।

किफायती कोर्सेज

कॉलेज में नियमित कक्षाओं में अध्ययन के लिए बहुत पैसा ख़र्च करने की आवश्यकता होती है जबकि, वेबिनार के माध्यम से कक्षाएं लेने पर हॉस्टल सुविधा पर ख़र्च, बुनियादी सुविधाओं पर ख़र्च और ऐसे अनेक खर्चों को रोका जा सकता है। कोई भी छात्र वेबिनार आयोजित करने वाले किसी कॉलेज या यूनिवर्सिटी द्वारा उपलब्ध कराए गए स्टडी मैटिरियल को डाउनलोड भी कर सकता है। आप नियमित कॉलेज में जितना पैसा ख़र्च करते हैं, उसकी तुलना में वेबिनार शुल्क नाममात्र या काफ़ी कम होता है। अधिकांश वेबिनार्स नि:शुल्क होते हैं।

टीचर और स्टूडेंट्स के बीच इंटरेक्शन

वेबिनार छात्रों और प्रोफेसरों के बीच बेहतर इंटरेक्शन की सुविधा देता है क्योंकि यह सभी छात्रों को समान स्तर पर लाता है। यह उन छात्रों को भी दिमाग से संदेह दूर करने में मदद करता है, जो छात्रों से भरी हुई कक्षा में अपना हाथ उठाकर सवाल पूछने से घबराते हैं। वेबिनार आयोजित करने के लिए कुछ सर्वश्रेष्ठ सॉफ्टवेयर हैं -

गूगल +, हैंगआउट्स, वेबिनार ऑन एयर, स्काइप, गो टू वेबिनार, सिस्को वेबएक्स, एडोब कनेक्ट, मेगा मीटिंग, रेडी टॉक, एनी मीटिंग, ऑन स्ट्रीम आदि आदि।

छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में उनके निजी जीवन की विभिन्नताओं के कारण अत्यधिक विविधता आ गई है। इंटरनेट नई-नई चीज़ें सीखने के लिए लोगों के बीच अब एक प्लेटफार्म बन गया है। इसने लोगों को एक मंच प्रदान किया है जहाँ वे तेजी से संपर्क कर सकते हैं और तुरंत कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि समय और टेक्नोलॉजी की इस मॉडर्न धारा के अनुरूप चलने की परिस्थितियां बन चुकी हैं। वेबिनार की मदद से शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है जोकि बिल्कुल भी ग़लत नहीं है।

पोस्ट-कोविड युग

प्रिया हमारा समय काफ़ी तेज़ी से बदला है। अभी कुछ दिनों पहले तक वर्चुअल दुनिया की खास अहमियत समझ में नहीं आती थी। अब लगता है कि वर्चुअल स्पेश न हो तो जीवन ही असंभव है।

राजेश्वर सही कह रही हो। अभी कुछ साल पहले तक कई मामलों में वर्चुअल दुनिया का ख़ासा महत्त्व नहीं था। लोग वर्चुअल दुनिया को सिर्फ़ मनोरंजन और संदेश विनिमय की प्रणाली के रूप में ही देख रहे थे लेकिन कोविड 19 बीमारी ने सारा जाला साफ कर दिया।

प्रिया हाँ, कोविड 19 ने पूरी जीवन शैली और कार्य प्रणाली ही बदल डाली है। अब हर व्यक्ति एक तैरती दुनिया में अपने जीवन से संबद्ध चीजों को चुनता और उपयोग में लाता है।

राजेश्वर उसे सामान्य जीवन कहो। असामान्य परिस्थितियों में वर्चुअल दुनिया अभी भी कोई सहायता नहीं कर सकती। मसलन दुर्घटना के बाद की मेडिकल प्रक्रिया, पुलिस द्वारा अपराधी पकड़ने की प्रक्रिया, कई प्रकार के जाँच की प्रक्रिया आदि आदि।

प्रिया अभी के लिए असामान्य है लेकिन क्या पता भविष्य में यह सारे काम भी वर्चुअल माध्यम से होने लगें और इंसान सिर्फ़ एक अनुसरणकर्ता हो जाए। जैसे कुछ साल पहले तक शिक्षा की प्रक्रिया, दफ़्तरों के कामों की प्रक्रिया में वर्चुअल स्पेस का स्थान कम था लेकिन अब इन क्षेत्रों में उसके बिना काम ही नहीं चल सकता।

राजेश्वर हाँ, ऐसा हो सकता है। अब देखो शिक्षा और दफ़्तरों की प्रक्रियाओं के अलावे दूसरे क्षेत्रों में नज़र डालोगी तो वहाँ भी मनुष्य की जगह वर्चुअल स्पेश और कम्प्युटर लेता जा रहा है। बैंकिंग सेवा का क्षेत्र, रेलवे और बस सर्विस का क्षेत्र, दुकानों की दुनिया हर जगह उसका दबदबा बढ़ता जा रहा है।

प्रिया इन सभी चीजों को देखकर लगता है कि आधुनिक मनुष्य निरंतर अपने आप को दूसरे मनुष्य से अलग करने की प्रक्रिया में लगा हुआ है; और यह ग़लत भी नहीं लगता; क्योंकि कोविड आज जिस तरह के पक्षों को सामने ले आया है उससे दूसरे मनुष्यों से दूरी रख कर जीवन यापन करने की नसीहत दुनिया को मिली है।

राजेश्वर हाँ, यह तो है, कोविड की वजह से दुनिया में हर तरफ़ संपर्क-रहित सामाजिक जीवन की अवधारणा ने अधिक ज़ोर पकड़ा है। संपर्क रहित कार्य पद्धति पर बहुत गंभीरता और तेज़ी से काम हुआ है। लोग अब एक दूसरे से किसी भी प्रकार का सीधा संपर्क करने से ख़ुद को बचाते हैं। अब यह लोगों की आदत भी बनती जा रही है और पसंद भी। सच कहा गया है मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है।

प्रिया कोविड की परिस्थिति ने मनुष्य की जीवनशैली को बदलने पर विवश कर दिया। अब ऐसा लगता है कि कोविड युग के बाद का समय संपर्क-रहित कार्य-पद्धति वाला समय रहेगा। लोग सिर्फ़ बिलकुल क़रीबी लोगों से संपर्क में आना चाहेंगे।

राजेश्वर हाँ, बिलकुल यही होगा। ख़ैर, ईश्वर मनुष्य को सद्बुद्धि दें!

प्रश्न: क्या कोरोना की वैक्सीन सभी को एक साथ दी जाएगी?

उत्तर: सरकार ने उच्च जोख़िम वाले समूहों को प्राथमिकता पर वैक्सिनेशन के लिए चिह्नित किया है।पहले समूह में हेल्थ वर्कर और फ्रंट लाइन वर्कर शामिल हैं। दूसरे समूह में ५० वर्ष से अधिक के उम्र के व्यक्ति और वे लोग शामिल हैं जो पहले से किसी रोग से ग्रसित हैं। इसके बाद सभी ज़रूरतमंदों को वैक्सीन उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रश्न: क्या यह वैक्सीन सुरक्षित होगी क्योंकि इसे बहुत कम समय में बनाया गया है?

उत्तर: सुरक्षा और प्रभाव के डेटा की जाँच के आधार पर मंज़ूरी मिलने के बाद ही नियामक निकायों द्वारा वैक्सीन लगाई जाएगी।

प्रश्न: क्या वैक्सीन लेना अनिवार्य है?

उत्तर: कोरोना के लिए वैक्सीनेशन स्वैच्छिक है। हालाँकि स्वयं की सुरक्षा और बीमारी के प्रसार को सीमित करने के लिए कोरोना वैक्सीन की पूरी खुराक आवश्यक है।

प्रश्न: क्या कोरोना से ठीक हुए व्यक्ति को भी वैक्सीन लेना आवश्यक है?

उत्तर: पहले से संक्रमित होने के बावजूद वैक्सीन की पूरी खुराक लेना आवश्यक है ;क्योंकि यह एक मज़बूत प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करने में मदद करेगा।

प्रश्न: क्या कोरोना संक्रमित व्यक्ति (संदिग्ध/पुष्टि) को भी वैक्सीन लगाया जा सकता है?

उत्तर: संक्रमित व्यक्तियों को लक्षण के ख़त्म होने के १४ दिन बाद तक वैक्सीनेशन स्थगित करना चाहिए; क्योंकि वे वैक्सीनेशन स्थल पर दूसरों में वायरस फैलाने का जोख़िम बढ़ा सकते हैं।

प्रश्न 1. कोरोना वैक्सीन के सामान्य दुष्प्रभाव क्या हो सकते हैं?

प्रश्न 2. किसी के कैसे पता चलेगा कि वह वैक्सीन लगवाने के योग्य है अथवा नहीं?

प्रश्न 3. कोरोना वैक्सीन लेने के बाद क्या करना चाहिए?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

नमस्कार, मैं हूँ अमिताभ बच्चन। देखिए हम सब मिलकर नोवल कोरोना वायरस या कोविड 19 को फैलने से रोक सकते हैं। इसके लिए हमें बचाव के कुछ तरीके अपनाने होंगे। खाँसते या छींकते समय हमेशा अपने मुँह को रुमाल से या टिश्यू से ढँके। इस्तेमाल किए हुए टिश्यू को तुरंत ढक्कनदार कचरे के डिब्बे में डाल दें। अपनी आँख, नाक और मुँह को अपने हाथ से न छूए। अपने हाथों को समय-समय पर साबुन पानी से लगभग 20 सेकंड तक धोए। भीड़-भाड़ वाली जगह पर जाने से बचे। अगर आपको खाँसी, बुखार है या सांस लेने में तकलीफ़ हो रही है तो आप दूसरों से दूरी बनाए रखिए। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत अपने डॉक्टर से सलाह लें। अस्पताल में आप अपने मुँह पर मास्क या रुमाल जरुर रखें। अधिक जानकारी से लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की एक हेल्प लाइन शून्य एक एक दो तीन नौ सात आठ शून्य चार छ: (01123978046) पर संपर्क कीजिए। अपनी सुरक्षा के लिए हमारी मदद कीजिए।

प्रश्न 1. इस्तेमाल किए गए टिश्यू का क्या करना चाहिए?

प्रश्न 2. डॉक्टर से कब सलाह लेनी चाहिए?

प्रश्न 3. हाथों को कब किस तरह से धोना चाहिए?

메모

पाठ

04 विज्ञान की उन्नति

पाठ उद्देश्य

हिंदी भाषा में विज्ञान और गणित के प्रक्षेत्रों से जुड़े विषयों पर चर्चा कर सकते हैं।

도입 질문

- भारत के प्रथम मंगल ग्रह यान का क्या नाम है?
- क्या आप जानते हैं कि भारत में शून्य और दशमलव की खोज भारत में हुई थी?
- भारत के सभी राष्ट्रपतियों में से वैज्ञानिक कौन थे?
- इसरो (ISRO) किसका शब्दसंक्षेप है?

मंगलयान

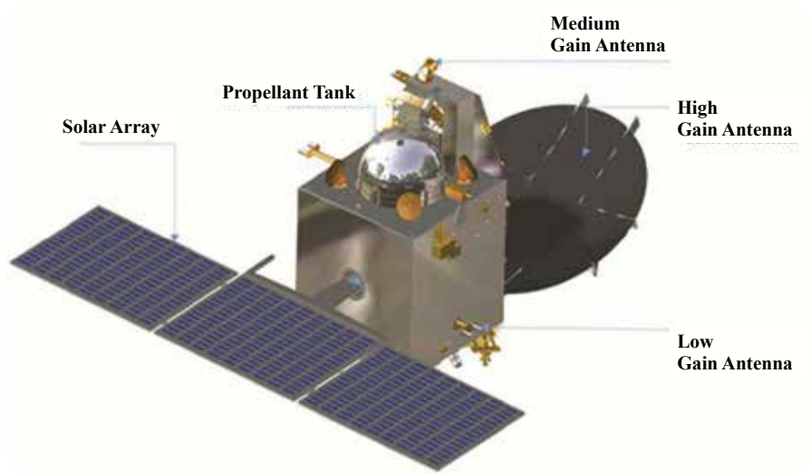

मंगलयान, (औपचारिक नाम- मंगल कक्षित्र (कक्षणयान) मिशन, अंग्रेज़ी: Mars Orbiter Mission; मार्स ऑर्बिटर मिशन), भारत का मंगल ग्रह के लिए प्रथम अभियान है। साथ ही, यह भारत की ग्रहों के बीच का प्रथम मिशन भी है। वस्तुत: यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की एक महत्त्वाकांक्षी अन्तरिक्ष परियोजना का महत्त्वपूर्ण अंग है। इस मंगलयान को 5 नवम्बर 2013 को 2 बजकर 38 मिनट पर मंगल ग्रह की परिक्रमा करने हेतु, आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित 'सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र' से ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसऍलवी) सी-25 के द्वारा सफलतापूर्वक छोड़ा गया।

इस मंगलयान के साथ ही अब भारत भी उन देशों में शामिल हो गया है, जिन्होंने मंगल पर अपने यान भेजे हैं। वैसे अब तक मंगल को जानने के लिये शुरू किये गए दो तिहाई अभियान असफल भी रहे हैं परन्तु, 24 सितंबर 2014 को मंगल पर पहुँचने के साथ ही भारत विश्व में अपने प्रथम प्रयास में ही सफल होने वाला पहला देश तथा सोवियत रूस, नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बाद दुनिया का चौथा देश बन गया है। इसकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि ये मंगल पर अब तक भेजा गया सबसे सस्ता मिशन भी है। भारत एशिया में भी ऐसा करने वाला पहला

देश भी बन गया क्योंकि इससे पहले चीन और जापान अपने मंगल अभियान में असफल रहे थे।

वस्तुतः, यह एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन परियोजना है जिसका लक्ष्य अन्तरग्रहीय अन्तरिक्ष मिशनों के लिये आवश्यक डिजाइन, नियोजन, प्रबन्धन तथा क्रियान्वयन का विकास करना है। इसमें ऑर्बिटर अपने पांच उपकरणों के साथ मंगल ग्रह की परिक्रमा करता रहेगा तथा वैज्ञानिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आंकड़े व तस्वीरें पृथ्वी पर भेजेगा। अंतरिक्ष यान पर वर्तमान में इसरो टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क (इस्ट्रैक) और भारतीय डीप स्पेस नेटवर्क एंटीना द्वारा बंगलौर के नियंत्रण केंद्र से नजर रखी जा रही है। भारत के इस मंगलयान मिशन की लागत ₹ 450 करोड़ रुपए आई थी।

प्रतिष्ठित 'टाइम' पत्रिका ने भारत के मंगलयान को 2014 के सर्वश्रेष्ठ आविष्कारों में शामिल किया है। मंगलयान मिशन की अवधारणा 2008 में चंद्र उपग्रह, चंद्रयान-1 के प्रक्षेपण के बाद, अंतरिक्ष विज्ञान और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा 2010 में एक व्यवहार्यता अध्ययन के साथ सामने आई। भारत सरकार ने इसकी परियोजना को 3 अगस्त 2012 में मंजूरी दी। इसके बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने 125 करोड़ रुपये (19 मिलियन$) के ऑर्बिटर के लिए आवश्यक अध्ययन पूरा किया। पूरी परियोजना की कुल लागत 454 करोड़ रुपये (67 मिलियन$) आंकी गई ।

अंतरिक्ष एजेंसी ने 28 अक्तूबर 2013 को ओर्बिटर के लॉंच की योजना बनाई। लेकिन प्रशांत महासागर में खराब मौसम के कारण 'इसरो' के अंतरिक्ष यान ट्रैकिंग जहाजों को पहुँचने में देरी हुई, जिससे अभियान को 5 नवंबर 2013 तक स्थगित कर दिया गया था। ईंधन की बचत के दृष्टिकोण से 'होहमान्न' स्थानांतरण कक्षा में लांच के अवसर हर 26 महीने में आते हैं। इस यान के मामले में वहाँ 2013, 2016 और 2018 के लॉन्च विंडोज़ बन रहे थे। इसमें प्रक्षेपण के लिए पीएसएलवी-एक्सएल लांच सी 25 वाहन को जोड़ने का कार्य 5 अगस्त 2013 को शुरू हुआ। मंगलयान उपग्रह के विकास को तेजी से रिकार्ड 15 महीने में पूरा किया गया। अमेरिका की संघीय सरकार के बंद के बावजूद, नासा ने 5 अक्टूबर 2013 को मिशन के लिए संचार और नेविगेशन समर्थन प्रदान करने की पुष्टि की।

दीप्ति इसरो का मंगलयान मिशन भारत के तकनीकी कौशल और विज्ञान के अत्याधुनिक होने का प्रमाण प्रतीत होता है। क्या सच में ऐसा है?

मयंक हाँ, इसरो ने मंगलयान के सफल प्रक्षेपण के द्वारा भारत की वैज्ञानिक चेतना और तकनीकी कौशल के अत्याधुनिक और उन्नत होने का प्रमाण तो प्रस्तुत कर दिया है। इसमें अब कोई संशय तो है ही नहीं। इसमें पूरे विश्व में भारत की चर्चा इस कारण से भी है कि भारत ने कम लागत में इतनी बड़ी योजना को सफल बनाया है। यानी भारतीय वैज्ञानिकों ने अपनी सोच और समझ का भी लोहा मनवा लिया है।

दीप्ति सही बात है। इतनी कम रकम में मंगल ग्रह पर किसी इंसानी उत्पाद को भेजने की कल्पना कोई भी देश नहीं कर पाया था। विश्व भारत की सोच का लोहा मानता है। जैसा मुझे पता चला है इस मंगलयान से भारत अपने महाद्वीप का पहला सफल राष्ट्र हुआ है।

मयंक हाँ, बिलकुल एशिया महाद्वीप में भारत की अपेक्षा अधिक तकनीकी उन्नति प्राप्त करने वाले चीन और जापान अपनी मंगल ग्रह की योजनाओं में असफल रहे हैं। उनकी परियोजनाएं भी काफ़ी महंगी रही थी और वो असफल हुई थी। भारत की परियोजना अपेक्षाकृत सस्ती भी है और सफल भी हुई है।

दीप्ति लेकिन मेरे पास यह स्पष्टता नहीं है कि भारत के वैज्ञानिकों ने बिल्कुल अलग क्या सोचा जिससे वो इसे पूरे करने में सफल रहे?

मयंक हाँ, ये एक महत्वपूर्ण पक्ष है। सारा विश्व इस जानकारी और उसकी वैज्ञानिकता को पकड़ने की कोशिश कर रहा है। कई देशों ने तो भारत से उस बिल्कुल अलग सोच को साझा करने के लिए अनुरोध भी किया है। अभी तक जो जानकारी सामने आई है, उसके अनुसार प्रत्येक 26 माह पर मंगल के बाह्य कक्षा में ऐसा वातावरण निर्मित होता है; जिसमें उपग्रहों को बिना अधिक जोख़िम के, उसकी कक्षा में आसानी से बिना ज़्यादा ईंधन ख़र्च किए; स्थापित करवाया जा सकता

है। भारतीय वैज्ञानिकों ने इस पहलू पर गंभीरता से सोचा था।

दीप्ति अच्छा, तो वैज्ञानिकों ने उस पक्ष का फ़ायदा उठाते हुए ऐसी योजना बनाई जिससे यान उस बाहरी कक्षा से ग्रह के कक्ष में बिना किसी परेशानी और अतिरिक्त ज़ोर के आसानी से प्रविष्ट हो जाए। यह उनका बहुत बढ़िया आकलन रहा। तो यह उनकी बिल्कुल अलग सोच थी जिससे उनको सफलता मिली।

मयंक वो एक महत्त्वपूर्ण कारण तो है लेकिन सफलता का पूरा श्रेय सिर्फ़ उस सोच को नहीं अपितु अन्य पक्षों को भी जाता है। जैसे उपग्रह को ले जाने वाला वाहन, उपग्रह के अन्य उपकरण, यान को नियंत्रित रखने वाले उपकरण आदि का चुनाव भी सफलता के अहम हिस्से हैं।

दीप्ति अच्छा, तो यान को अभी भी यहाँ धरती से नियंत्रित किया जा रहा है?

मयंक हाँ, ये तो है ही। मंगलयान को बेंगलुरु से टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क (इस्ट्रैक) और डीप स्पेस नेटवर्क एंटीना द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है। अब यान के माध्यम से अनेक आंकड़े और तस्वीर धरती पर आ रहे हैं।

दीप्ति तो क्या सिर्फ़ मंगल ग्रह से जुड़े आंकड़ों और तस्वीरों के लिए ही मंगलयान को प्रक्षेपित किया गया है?

मयंक हाँ , उसका पहला उद्देश्य तो यही है लेकिन उसके साथ ही यान के साथ गए ओर्बिटर के अन्य उपकरणों द्वारा अंतरिक्ष में रहते हुए; ग्रह के ऊपर से उसके वातावरण, ग्रह के बदलावों से जुड़ी सूचनाएँ भी प्राप्त किए जाएंगे।

दीप्ति चलिए, ये अच्छा है कि भारत ने अंतरिक्ष और अन्य ग्रह की दिशा में मजबूती से पाँव बढ़ाए हैं। इससे तकनीकी रूप से देश अधिक सक्षम और सुरक्षित होने के साथ साथ अन्य विकल्पों पर भी काम कर सकेगा।

मयंक हाँ बिल्कुल!

भारतीय गणित का इतिहास

सभी प्राचीन सभ्यताओं में गणित विद्या की पहली अभिव्यक्ति गणना-प्रणाली के रूप में प्रगट होती है। अति-प्रारंभिक समाजों में संख्याएँ; रेखाओं और उनके समूह द्वारा प्रदर्शित की जाती थीं। यद्यपि बाद में विभिन्न संख्याओं को विशिष्ट संख्यात्मक नामों और चिह्नों द्वारा प्रदर्शित किया जाने लगा। मुख्य रूप से भारत में ऐसा किया गया। रोम जैसे स्थानों में उन्हें वर्णमाला के अक्षरों द्वारा ही प्रदर्शित किया गया।

यद्यपि आज हम दशमलव प्रणाली के अभ्यस्त हो चुके हैं, किंतु सभी प्राचीन सभ्यताओं में संख्याएँ दशमलव प्रणाली (decimal system) पर आधारित नहीं थीं। प्राचीन बेबीलोन में 60 आधारित संख्या-प्रणाली का प्रचलन था।

भारत में गणित के इतिहास को मुख्यता ५ कालखंडों में बाँटा जा सकता है-

१. आदि काल (500 इस्वी पूर्व तक)

(क) वैदिक काल (१००० इस्वी पूर्व तक)- शून्य और दशमलव की खोज ।
(ख) उत्तर वैदिक काल (१००० से ५०० इस्वी पूर्व तक)- इस युग में भारत में गणित का अधिक विकास हुआ। इसी युग में बोधायन शुल्व सूत्र की खोज हुई, जो बाद में कुछ कारणों से पाइथागोरस प्रमेय के नाम से जाना जाने लगा।

२. पूर्व मध्य काल – सेट थ्योरी (sine, cosine) **की खोज हुई।**

३. मध्य काल – ये भारतीय गणित का स्वर्ण काल है। इस काल में आर्यभट्ट, श्रीधराचार्य, महावीराचार्य आदि श्रेष्ठ गणितज्ञ हुए।

४. उत्तर-मध्य काल (१२०० इस्वी से १८०० इस्वी तक) – इस काल के १५०० ईसवी में नीलकंठ ने sin r का मान निकालने का सूत्र दिया, जिसे आज हम ग्रेगरी श्रेणी के नाम से

जानते हैं।

५. **वर्तमान काल** – रामानुजम आदि जैसे महान गणितज्ञ हुए।

यह मान्य है कि गणित मूलतः भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुआ। शून्य एवं अनन्त की परिकल्पना, अंकों की दशमलव प्रणाली, ऋणात्मक संख्याएँ, अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति एवं त्रिकोणमिति के विकास के लिए संपूर्ण विश्व भारत का कृतज्ञ है। वेद विश्व की पुरातन धरोहर है एवं भारतीय गणित उससे पूर्णतया प्रभावित है। वेदांग ज्योतिष में भी गणित की महत्ता व्यक्त की गई है। उनमें कहा गया कि जिस प्रकार मयूरों की शिखाएं और सर्पों की मणियां शरीर में उच्च स्थान मस्तिष्क पर विराजमान हैं, उसी प्रकार सभी वेदांगों एवं शास्त्रों में गणित का स्थान सर्वोपरि है।

सिंधु घाटी की सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भागों में फैली थी। इतिहासकार उसे ईसा पूर्व 3300-1300 का काल मानते हैं। मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त अवशेषों एवं शिलालेखों से उस समय प्रयुक्त किए गए गणित की जानकारी प्राप्त होती है। उस समय की ईंटों एवं भिन्न-भिन्न भार के परिमाप के विविध आकारों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीयों को ज्यामिति की प्रारंभिक जानकारी थी। लंबाई के परिमाप की विशिष्ट विधि भी थी जिससे ठीक-ठीक ऊंचाई ज्ञात हो सके।

ईंटों के निर्माण की विधि, शुद्ध-माप के लिए भार के विविध आकार एवं लंबाई के विविध परिमापों से स्पष्ट है कि सिंधु घाटी की सभ्यता परिष्कृत एवं विकसित थी। उस समय के लोगों को अंकगणित, ज्यामिति एवं प्रारंभिक अभियांत्रिकी का ज्ञान था।

प्रश्न 1. भारतीय गणित के सम्पूर्ण इतिहास को किन खंडों में बाँटा गया है?

प्रश्न 2. सिंधु घाटी के लोगों को किस प्रकार के गणित की जानकारी थी?

प्रश्न 3. आरंभिक काल में संख्याएँ किस तरह से अभिव्यक्त की जाती थीं?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

हौसला बढाते डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के 20 अनमोल विचर

भारत रत्न डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम, एक ऐसी महान हस्ती, जिसने अपना पूरा जीवन देश सेवा में लगा दिया। जहां बतौर वैज्ञानिक उन्होंने भारत को मिसाइल टेक्नॉलॉजी में विश्व स्तरीय बना दिया वहीं एक राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने करोड़ो हिंदुस्तानियों को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की प्रेरणा दी। आइए आज हम इस महान देशभक्त, लेखक और वैज्ञानिक के अनमोल विचारों को जानते हैं।

- अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो ।
- इससे पहले कि सपने सच हो आपको सपने देखने होंगे।
- ईश्वर की संतान के रूप में, मैं मुझे होने वाली किसी भी चीज से बड़ा हूँ।
- मैं इस चीज को स्वीकार करने के लिए तैयार था कि मैं कुछ चीजें नहीं बदल सकता।
- महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।
- अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि ये समाज के तीन प्रमुख सदस्य कर सकते हैं। पिता, माता और गुरु ।
- आइए हम अपने आज का बलिदान कर दें ताकि हमारे बच्चों का कल बेहतर हो सके।

प्रश्न 1. डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम भारत में किस पद पर थे?

प्रश्न 2. डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम ने वैज्ञानिक के रूप में क्या किया?

प्रश्न 3. वक्ता के अनुसार कौन तीन लोग देश को सुंदर मन वाले लोगों का देश बना सकते हैं?

पाठ
05

जीवन आयामों का संज्ञान

पाठ उद्देश्य

हिंदी भाषा में आंकड़ों–आरेखों का विश्लेषण-व्याख्या कर सकते हैं।

도입 질문

- भारत की राजभाषाएँ कौन-सी हैं?
- भारत में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली मातृभाषा क्या है?
- आप कौन-सी भारतीय भाषा बोलना जानते हैं?
- हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?

भारत की भाषाएँ

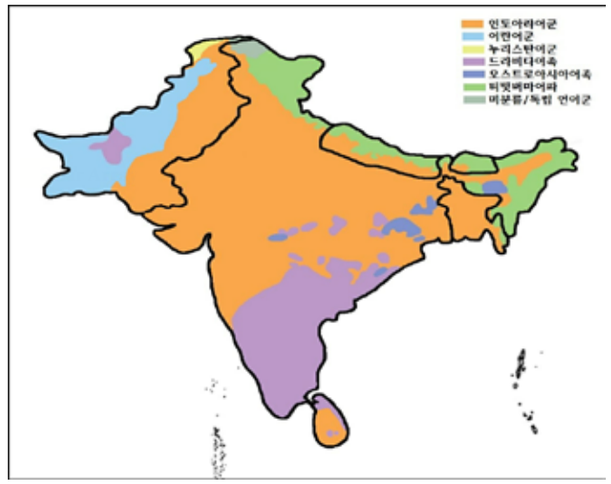

भारत देश में अनेक भाषाएँ जीवंत हैं। ग़ैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार, वहाँ छोटी बड़ी लगभग 1100 भाषाएँ हैं। इस भाषाई वैविध्यता के कारण वहाँ एक कहावत काफ़ी मशहूर है, 'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी।' परंतु भारत के संविधान द्वारा मात्र 22 भाषाएँ हीं मान्यता प्राप्त हैं। भाषा-विज्ञान के दृष्टिकोण से वहाँ हिंद-आर्य, द्रविड़, आस्ट्रो एशियाई, तिब्बती-वर्मी परिवार की भाषाएँ मिलती हैं। संविधान के अनुच्छेद 344 के अंतर्गत, पहले केवल 15 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता दी गयी थी, लेकिन 21वें संविधान संशोधन के द्वारा सिन्धी को तथा 71वें संविधान संशोधन द्वारा नेपाली, कोंकणी तथा मणिपुरी को भी राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। बाद में, 92वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में चार नई भाषाओं बोड़ो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली को राजभाषा में शामिल कर लिया गया। अभी भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90% है। अन्य बहुत सारी भाषाओं को मान्यता इस कारण से नहीं मिली हैं क्योंकि उनके बोलने वालों की संख्या 8 लाख से कम है। इन 22 भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेज़ी को भी सहायक राजभाषा की मान्यता मिली हुई है। इस सरकारी मान्यता से इतर भारत

की साहित्य अकादमी द्वारा 24 भाषाएँ अनुमान्य हैं। अर्थात, भारत की 24 भाषाओं में सृजित साहित्य को सच्चे भारतीय भाषाई साहित्य के रूप में देखा जा सकता है। सुविधा के लिए भारत की भाषाओं को निम्न चार वर्गों के अंतर्गत रख कर देखा जा सकता है।

1) पूर्वोत्तर की भारतीय भाषाएँ – इस विभाग में बांग्ला, असमिया, संथाली, नेपाली, बोड़ो, उड़िया, मणिपुरी आदि भाषा को देखा जा सकता है।
2) पश्चिमोत्तर भारत की भाषाएँ- इस विभाग में कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, सिंधी, डोगरी आदि भाषाओं को रख कर देखा जा सकता है।
3) दाक्षिणात्य भारत की भाषाएँ – इस विभाग में दक्षिण भारत की चारों बड़ी भाषा मलयालम, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ को देखा जा सकता है।
4) मध्य भारत की भाषाएँ- इस दस राज्य वाले विभाग में हिंदी, उर्दू, मेवाड़ी आदि मध्य देश की भाषाओं को रख कर देखा जा सकता है।

ज्ञातव्य होना चाहिए कि संपूर्ण भारतीय भाषाओं को लेकर पहला व्यापक अध्ययन और उनका व्यवस्थित स्वरूप निरूपण ग्रियर्सन के 'लिंगविस्टीक सर्वे ऑफ इंडिया' के माध्यम से पूरा हुआ है। उनके पूर्व जॉन बीम्स ने 'आउटलाइन्स ऑफ द इंडियन फिलोलॉजी' नामक पुस्तक में संपूर्ण भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण किया था। उस वर्गीकरण के अनुसार, पूरे भारत में आर्य वर्ग की 11 भाषाएँ, ईरानी वर्ग की 5 भाषाएँ, तूरानी के तीन वर्गों की 56 भाषाएँ, कोल वर्ग की 9 भाषाएँ और द्रविड़ वर्ग की 12 भाषाएँ उपस्थित थीं। परंतु बीम्स के अध्ययन और वर्गीकरण को ज़्यादा तव्वजों नहीं दिया जा सकता है; क्योंकि बीम्स ने जब पुस्तक के लिए अध्ययन किया था, उस समय भारत की राजनीतिक और भौगोलिक स्थिति बिल्कुल अलग थी।

समग्रता में, यह कहा जा सकता है कि भारत अपनी विविधता के अनुरूप ही भाषाओं के वैविध्य से भी भरा हुआ है। उसके मानवीय आयामों को सिर्फ़ एक भाषा के आधार पर समझना, अधूरा समझने जैसा होगा। बावजूद इसके अगर काम-काज के लिहाज से देखा जाए तो यह बात सामने आती है कि भारतीय सरकारी कार्यालयों में काम-काज के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली भाषाएँ दो हीं हैं- हिंदी और अँग्रेजी। वहाँ के आम जीवन में अँग्रेजी की पैठ अधिक पढे-लिखे लोगों तक सीमित है; लेकिन हिंदी की पहुँच सभी तक है। ख़ास पढे लिखे तबके से लेकर बिल्कुल सामान्य तबके तक के लोग, हिंदी में विचारों का आदान-प्रदान कर लेते हैं। अधिकांश व्यवसाय और व्यवहारिक जीवन से जुड़े क्रियाकलापों का निष्पादन हिंदी भाषा में संपन्न होता है। पूरे देश में विभिन्न भाषाओं के बीच हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो हर जगह समझी और बरती जाती है।

कौस्तुभ भारत में कितनी विविधता है। भाषा के क्षेत्र में भी वैविध्यता मिलती है। ऐसे में पूरा विश्व हिंदी को भारत की भाषा के रूप में क्यों देखता है?

श्रुति अरे अरे.. लगता है आपको समझने में कुछ चूक हो रही है। यह सही है कि भारत में अनेक भाषाएँ हैं, लेकिन उन सब के बीच हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो देश के सुदूर पूर्व से लेकर सुदूर पश्चिम तक और सुदूर उत्तर से लेकर सुदूर दक्षिण तक समझी और बरती जाती है। ज़ाहिर है कि पूरे देश में संचार और प्रसार का आयाम रखने वाली भाषा को ही देश की भाषा के रूप में देखा जाएगा।

कौस्तुभ इसका मतलब यह हुआ कि हिंदी अन्य दूसरी भाषाओं के साथ साथ सह-अस्तित्व में है । क्या आप बता सकती हैं कि भारत में भाषाओं को कैसे देखा समझा जाए? हालाँकि मुझे यह बात समझ में आ गई है कि सभी भाषाओं के बीच हिंदी उपस्थित है और यह एक योजक भाषा है।

श्रुति देखिए , भारत की भाषाओं और उनके प्रसार क्षेत्र को समझने के लिए भारत के इतिहास को समझना ज़रूरी है। बावजूद इसके एक सामान्य जानकारी के लिए इतना कहा जा सकता है कि वहाँ एक हज़ार से ज़्यादा भाषाएँ मिलती हैं।

कौस्तुभ ये कैसे ? मैंने तो कल ही पढ़ा था कि वहाँ 22 भाषाएँ हैं !

श्रुति आप आज जाकर फिर से पढ़िएगा। आपको यह लिखा हुआ मिल जाएगा कि वहाँ मान्यता प्राप्त या आधिकारिक भाषा 22 हैं न कि कुल 22 भाषाएँ हैं।

कौस्तुभ अब ये आधिकारिक या मान्यता प्राप्त भाषा क्या है?

श्रुति किसी देश के सुगम संचालन के लिए नियम, दायित्व, कर्तव्य और आचार कूट का विन्यास किया जाता है। ये सभी पक्ष संविधान में लिखा होता है। भाषा जीवन का महत्त्वपूर्ण अवयव है। इसलिए उसे भी लेकर संविधान में नियम बनाए जाते हैं जिसके आधार पर ही यह तय होता है कि अमुक भाषा राज-काज या सरकारी कामों के लिए कागजातों पर प्रयोग में लाई जा सकती है अथवा नहीं। भारत के संविधान में भी ऐसी ही व्यवस्था है।

कौस्तुभ अच्छा, इसका मतलब यह हुआ कि सरकारें भाषा-प्रयुक्ति के आधार पर यह देखती हैं कि संबंधित भाषा को कार्यालय के लिए स्वीकार किया जा सकता है या नहीं। उस भाषा का भविष्य क्या है आदि आदि। भारत के संविधान में भाषा की चर्चा किस जगह मिलती है?

श्रुति सही समझ रहे हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 362 के आठवीं अनुसूची में भाषाओं की चर्चा मिलती है। उसी अनुसूची में वे 22 भाषाएँ दर्ज़ हैं जिनके बारे में आप उल्लेख कर रहे थे।

कौस्तुभ अच्छा तो ये पक्ष है जिसे समझने में मुझसे चूक हुई थी! उस संदर्भ का अर्थ यह है कि भारत की विभिन्न भाषाओं में 22 भाषाओं को सरकार ने सरकारी कामकाज के लिए अधिमान्य किया है। अन्य भाषाएँ संबंधित भाषी समाज में प्रचलन में हैं।

श्रुति हाँ, यही बात है। भारत की विभिन्न भाषाओं को लेकर बहुत सारे महत्व के काम हुए हैं। उन कामों और अनेक साक्ष्यों के आधार पर भाषा वैज्ञानिकों ने भारत में अलग अलग परिवार की भाषा पहचानी है।

कौस्तुभ अच्छा, मुझे लगता है इन आयामों को काफ़ी आराम से समझा जाना चाहिए। मैं आपसे कभी पूरे इत्मीनान से भारत की विभिन्न भाषा और उनके भाषाई परिवार के विषय में बात करूंगा। आज आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा।

श्रुति मुझे भी आपकी जिज्ञासाएँ अच्छी लगीं।

कोरोना वायरस

कोरोना वायरस पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी मुसीबत बन चुका है। इस चाइना अरिजिनेटेड वायरस इन डिसेम्बर १९ (COVID 19) ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है और इसकी वजह से कई मौतें हो चुकी हैं। इस संक्रामक बीमारी से लड़ने और इससे अपने लोगों को बचाने के लिए सभी देशों ने कई कठोर क़दम उठाएँ हैं; लेकिन सभी प्रयास विफल होते जा रहे हैं। कोई भी रणनीति वायरस के प्रसार को थाम नहीं पा रही है। दुनिया में इसके वैक्सीन के निर्मित हो जाने की ख़बर तो है लेकिन वायरस के प्रसार और वैक्सीन उत्पादन के अनुपात में बहुत व्यापक अंतर है। इसकी वजह से जितने लोगों को सुरक्षित किया जा रहा है उससे कहीं अधिक लोग इसकी चपेट में आ जा रहे हैं। यह परिस्थिति हर देश में बनी हुई है और लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। कोविड १९ का प्रसार होने के साथ ही पूरी दुनिया में जीवन की कई गतिविधियों पर अंकुश लगाया गया था जो निरंतर चलता रहा। तक़रीबन डेढ़ साल बीत जाने के बाद भी स्थिति नहीं सुधरी है। अंकुश के आयामों के कारण कई देश आर्थिक परेशानियों से जूझ रहे हैं। पूरी मानव जाति इस समस्या से निपटने के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है। छोटे-छोटे प्रयासों से इस वायरस पर क़ाबू करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें से सबसे महत्त्वपूर्ण और उम्मीद भरा प्रयास लोगों को वैक्सीन प्रदान करने का प्रयास है। वैज्ञानिकों के अनुसार कुछ वैक्सीन का एक से अधिक खुराक देने पर ही पूरा प्रभाव पड़ता है। कोरोना वायरस की वैक्सीन भी ऐसी ही है। मतलब यह कि यह बीमारी कड़वी तो है ही उस पर नीम चढ़ी भी है। अभी तक मिले आँकड़ों के अनुसार पूरी दुनिया में कोरोना वायरस से प्रभावित लोगों की कुल संख्या लगभग १४ करोड़ है जिनमें से डेढ़ करोड़ लोगों को वैक्सीन मिल पाया है।वायरस से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले देशों में अमरीका, ब्राज़ील, भारत, चाइना और युनाइटेड किंगडम हैं। इन सभी देशों में लोगों को वैक्सीन देने का कार्य बहुत तेज़ी से चल रहा है; लेकिन स्थिति अभी भी बहुत ख़राब और नियंत्रण से बाहर है। इस तथ्य को निम्न रूप में देख सकते हैं। दुनिया कोरोना वायरस की मारक क्षमता, उसके प्रसार की गति और उसके प्रकोप से बचाव की गति को देखकर सकते में है और उसे नियंत्रित करने की हर संभव कोशिश कर रही है।

प्रश्न 1. दुनिया के कई देश किस कारण से आर्थिक परेशानी से जूझ रहे हैं?

प्रश्न 2. तालिका के अनुसार कोरोना केस के मामले में भारत का क्या स्थान है?

प्रश्न 3. कोरोना वायरस से बचाव के लिए किस देश में सर्वाधिक टीका पड़ा है?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

रेग्युलर मांपे जाना वाला SRS दिखाता है कि न सिर्फ़ एक साथ पूरे देश के TFR में सुधार हो रहा है बल्कि ये सुधार उन राज्यों में भी हो रहा है जहाँ TFR ज़्यादा है। 2017 की रिपोर्ट के अनुसार 1971 से लेकर 1981 के बीच TFR 5.2 से घट कर 4.5 और 1991 से लेकर 2017 के बीच 3.6 से घटकर 2.2 हो गया है। SRS ने ये भी बताया कि शहरी और ग्रामीण इलाक़ों में TFR बदल जाता है। यह महिलाओं की साक्षरता पर भी निर्भर करता है। निरक्षर महिलाएँ औसतन 2.9 बच्चों को जन्म देती हैं। वहीं साक्षर महिलाएँ औसतन 2.1 बच्चे को जन्म देती हैं। डेटा से पता चला है कि कक्षा 10 पास महिलाएँ औसतन 2 बच्चों को जन्म देती है जबकि 12वीं पास महिला औसतन 1.8 बच्चों को जन्म देती है। वहीं TFR रेट ग्रेजुएट और अन्य पढ़ी लिखी महिलाओं के लिए 1.4 है। इसी के साथ ही शहरी और ग्रामीण इलाकों का TFR रेट भी अलग अलग है। 1971 से लेकर 2017 तक शहरी महिलाओं का TFR 4.1 से घटकर 1.7 हो गया जबकि ग्रामीण महिलाओं का TFR 5.4 से घटकर 2.4 हो गया।

प्रश्न 1. SRF के अनुसार 2017 में TFR घट कर कितना हो गया?

प्रश्न 2. महिलाओं के बीच TFR का अंतर किस चीज़ पर निर्भर करता है?

प्रश्न 3. ग्रेजुएट महिलाओं का TFR कितना है?

मेमो

पाठ
06

इतिहास के सफ़ों से

पाठ उद्देश्य

भारत की पुरातन मानसिकता और इतिहास की झलक पा और चर्चा कर सकते हैं।

도입 질문

- क्या आपने कभी भारत के इतिहास की किताब पढ़ी है?
- महाराजा अशोक किस साम्राज्य के सम्राट थे?
- क्या आप भारत के पहले प्रधानमंत्री का नाम जानते हैं?
- भारत कब स्वतंत्र हुआ था?

कहानी; शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद

वाजिदअली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था। छोटे-बड़े, ग़रीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफीम की पीनक ही में मजे लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन-विभाग में, साहित्य-क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आहार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी। राज-कर्मचारी विषय-वासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलाबत्तू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमें, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का मद छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को ख़बर न थी।

इसलिए अगर मिरज़ा सज्जादअली और मीर रौशनअली अपना अधिकांश समय बुद्धि तीव्र करने में व्यतीत करते थे, तो किसी विचारशील पुरुष को क्या आपत्ति हो सकती थी? दोनों के पास मौरूसी जागीरें थीं; जीविका की कोई चिंता न थी; कि घर में बैठे चखौतियाँ करते थे। आखिर और करते ही क्या? प्रातःकाल दोनों मित्र नाश्ता करके बिसात बिछा कर बैठ जाते, मुहरे सज जाते, और लड़ाई के दाव-पेंच होने लगते। फिर ख़बर न होती थी कि कब दोपहर हुई, कब तीसरा पहर, कब शाम ! घर के भीतर से बार-बार बुलावा आता कि खाना तैयार है। यहाँ से जवाब मिलता- चलो, आते हैं, दस्तरख्वान बिछाओ। यहाँ तक कि बावरची विवश होकर कमरे ही में खाना रख जाता था, और दोनों मित्र दोनों काम साथ-साथ करते थे। मिरज़ा सज्जाद अली के घर में कोई बड़ा-बूढ़ा न था, इसलिए उन्हीं के दीवानखाने में बाजियाँ होती थीं। मगर यह बात न थी मिरज़ा के घर के और लोग उनसे इस व्यवहार से खुश हों। घरवालों का तो कहना ही क्या, मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर तक नित्य द्वेषपूर्ण टिप्पणियाँ किया करते थे- बड़ा मनहूस खेल है। घर को तबाह कर देता है। खुदा न करे, किसी को इसकी चाट पड़े, आदमी दीन-दुनिया किसी के काम का नहीं रहता, न घर का, न घाट का। बुरा रोग है। यहाँ तक कि मिरज़ा की बेगम साहबा को इससे इतना द्वेष था कि अवसर खोज-खोजकर पति को लताड़ती थीं। पर उन्हें इसका अवसर मुश्किल से मिलता था। वह सोती रहती थीं, तब तक बाज़ी बिछ जाती थी। और रात को जब सो जाती थीं, तब कही मिरज़ाजी घर में आते थे।

एक शाम दोनों खिलाड़ी डटे हुए थे, मानो दो ख़ून के प्यासे सूरमा आपस में लड़ रहे हों। मिरज़ाजी तीन बाजियाँ लगातार हार चुके थे; इस चौथी बाज़ी का रंग भी अच्छा न था। वह बार-बार जीतने का दृढ़ निश्चय करके सँभलकर खेलते थे लेकिन एक-न-एक चाल ऐसी बेढब आ पड़ती थी, जिससे बाज़ी ख़राब हो जाती थी। हर बार हार के साथ प्रतिकार की भावना और भी उग्र होती थी। उधर मीर साहब मारे उमंग के ग़ज़लें गाते थे, चुटकियाँ लेते थे, मानो कोई गुप्त धन पा गये हों। मिरज़ाजी सुन-सुनकर झुँझलाते और हार की झेंप को मिटाने के लिए उनकी दाद देते थे। अब मिरज़ाजी बात-बात पर झुँझलाने लगे- जनाब, आप चाल बदला न कीजिए। यह क्या कि एक चाल चले, और फिर उसे बदल दिया। जो कुछ चलना हो एक बार चल दीजिए; यह आप मुहरे पर हाथ क्यों रखते हैं? मुहरे को छोड़ दीजिए। जब तक आपको चाल न सूझे, मुहरा छुइये ही नहीं। आप एक-एक चाल आध घंटे में चलते हैं। इसकी सनद नहीं। जिसे एक चाल चलने में पाँच मिनट से ज़्यादा लगे, उसकी मात समझी जाय। फिर आपने चाल बदली! चुपके से मुहरा वहीं रख दीजिए।

मीर साहब का फरजी पिटता था। बोले- मैंने चाल चली ही कब थी?

मिरज़ा- आप चाल चल चुके हैं। मुहरा वहीं रख दीजिए- उसी घर में!

मीर- उस घर में क्यों रखूँ? मैंने हाथ से मुहरा छोड़ा ही कब था?

मिरज़ा- मुहरा आप कयामत तक न छोड़ें, तो क्या चाल ही न होगी? फरजी पिटते देखा तो धाँधली करने लगे।

मीर- धाँधली आप करते हैं। हार-जीत तकदीर से होती है, धाँधली करने से कोई नहीं जीतता?

तकरार बढ़ने लगी। दोनों अपनी-अपनी टेक पर अड़े थे। न यह दबता था न वह। अप्रासंगिक बातें होने लगीं, मिरज़ा बोले- किसी ने ख़ानदान में शतरंज खेली होती, तब तो इसके कायदे जानते। वे तो हमेशा, घास छीला करते, आप शतरंज क्या खेलिएगा!

मीर- क्या? घास आपके अब्बाजान छीलते होंगे। यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं।

मिरज़ा- अजी, जाइए भी, गाजीउद्दीन हैदर के यहाँ बावरची का काम करते-करते उम्र गुज़र गयी; आज रईस बनने चले हैं। रईस बनना कुछ दिल्लगी नहीं है!

मीर- क्यों अपने बुजुर्गों के मुँह में कालिख लगाते हो- वे ही बावरची का काम करते होंगे। यहाँ तो हमेशा बादशाह के दस्तरख्वान पर खाना खाते चले आये हैं।

मिरज़ा- अरे चल चरकटे, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न कर।

मीर- जबान सँभालिये, वरना बुरा होगा। मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नहीं हूँ। यहाँ तो किसी ने आँखें दिखायीं कि उसकी आँखें निकालीं। है हौसला?

दोनों दोस्तों ने कमर से तलवारें निकाल लीं। नवाबी जमाना था; सभी तलवार, पेशकब्ज, कटार वग़ैरह बाँधते थे। दोनों विलासी थे, पर कायर न थे। दोनों ज़ख़्म खाकर गिरे, और दोनों ने वहीं तड़प-तड़पकर जानें दे दीं। अपने बादशाह के लिए जिनकी आँखों से एक बूँद आँसू न निकला, उन्हीं दोनों प्राणियों ने शतरंज के वज़ीर की रक्षा में प्राण दे दिये। अँधेरा हो चला था। बाज़ी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे हुए मानो इन दोनों वीरों की मृत्यु पर रो रहे थे !

चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखतीं और सिर धुनती थीं।

चंद्रा हमारे जीवन में खेलों का बहुत महत्त्व है। खेल खेलने से शरीर और दिमाग की तंदरुस्ती बनी रहती है और शरीर को काफ़ी सकारात्मक ऊर्जा भी मिलती है। इसलिए हमें किसी भी खेल से परहेज़ नहीं करना चाहिए।

गजेंद्र मैं आपकी बात से कुछ हद तक सहमत हूँ। कुछ हद तक इसलिए क्योंकि हमारे जीवन में कुछ खेल ऐसे भी हैं जो जीवन का सत्यानाश कर देते हैं। जीवन ही नहीं परिवार, संपत्ति , समाज और अंततः देश का भी।

चंद्रा आप व्यर्थ की बात कर रहे हैं। कोई भी खेल ऐसा नहीं है जिससे जीवन में अनाचार फैल जाए और सारा कुछ तबाह हो जाए। ऐसा लगता है कि आपने अपनी बात दिल्लगी में कही है। उसका कोई वास्तविक आधार नहीं है।

गजेंद्र मेरी क़ाबिल दोस्त मेरी आपसे कोई रंजिश नहीं है जो मैं निराधार ऐसी बात कहूँगा। आप थोड़ा धैर्य के साथ विचार कीजिएगा तो आपको मेरी बात की सच्चाई का पता चलेगा।

चंद्रा देखिए, आप जो यह कह रहे हैं कि कुछ खेलों से जीवन, परिवार, संपत्ति और देश का नाश होता है; मुझे उसमें कहीं भी वास्तविक जीवन से जुड़ाव नहीं दिखलाई पड़ता है। अगर है तो आप उसे स्पष्ट करें।

गजेंद्र ठीक है, मैं अपनी बात को स्पष्ट करता हूँ। हमारे जीवन में बहुत सारे खेल हैं जैसे कबड्डी, खो खो, गिल्ली, फुटबाल, क्रिकेट, हॉकी, बास्केट-बाल, बेस बाल आदि जिसमें निश्चय ही शारीरिक श्रम होता है और शरीर को ऊर्जा मिलती है। इन खेलों से दिमाग की तंदरुस्ती भी बनी रहती है। लेकिन इन खेलों के साथ ही हमारे जीवन में शतरंज, जुआ, चौसड़, सट्टा आदि जैसे खेल भी तो हैं जिसमें शरीर का श्रम नहीं होता है। इसके बरक्स इन खेलों में शरीर की कोई भी गतिविधि नहीं होती है। कहा जाता है कि इन खेलों में सिर्फ़ दिमाग का इस्तेमाल होता है लेकिन धूर वास्तविकता यह है कि अधिकांश लोग इन खेलों को झूठी आस और भावना के आधार पर खेलते हैं।

चंद्रा हाँ, आपकी बात तो कुछ हद तक सही है।

गजेंद्र अभी मेरी बात पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। देखिए, आप भी यह अच्छी तरह जानती हैं कि ये शतरंज, जुआ जैसे खेलों में लोग ज़्यादा पैसे कमाने, उन्हें दुगुना करने के लोभ या आस में अपनी संपत्ति, कमाई सब कुछ दांव पर लगा देते हैं। उसी में दिन रात डूबे रहते हैं और जो लोग इसमें पड़ते हैं उन्हें अपने परिवार, समाज और देश की तनिक भी परवाह नहीं रह जाती। परिणामतः सभी कुछ विनष्ट होने लगते हैं।

चंद्रा हाँ, ऐसा तो मैंने भी सुना है; लेकिन मुझे लगता है कि इसमें खेलने वाले व्यक्ति की आत्मनियंत्रण की शक्ति का कमजोर पड़ जाना सबसे बड़ा कारण है। इसमें खेल से जुड़े गुणों का कोई दोष नहीं है।

गजेंद्र यह भी सही है; लेकिन आप जानती ही हैं कि मैंने जिस तरह के खेलों की चर्चा की है उनमें संपत्ति या किसी दूसरी चीज़ को पाने की आस ही अब गुण बन चुका है और वही आस लोगों को उसे खेल में बने रहने का आदी बनाती है। लोगों को उसका एक लत लगा जाया करता है, बिलकुल नशीले पदार्थों की तरह।

चंद्रा हाँ, ये बात तो है ; लेकिन इससे खेल से जुड़े गुण कम तो नहीं हो जाते हैं । लोगों को उन गुणों को देखना चाहिए न कि उससे जुड़े हुए आस के पीछे भागना चाहिए।

गजेंद्र सही बात कह रही हैं; पर मेरा एक सवाल है कि क्या सभी लोग इतने सधे तरीके से यह सोचते हैं? क्या लोगों द्वारा न सोचे जाने वाले पक्ष को हमें नहीं देखना चाहिए?

चंद्रा हाँ , ये पक्ष भी है। लोग जिस पक्ष के बारे में नहीं सोचते और अन्य पक्षों के बारे में सोचते हैं तो हमें उन पक्षों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए जिन पक्षों को लोग सोचते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि खेलों के नकारात्मक पक्ष भी होते हैं जिनसे इंसान को बचना चाहिए।

वाद-विवाद / वार्तालाप

गजेंद्र हाँ, खेलों के साथ नकारात्मक पक्ष भी जुड़े होते हैं और व्यक्ति को खेल के सकारात्मक पक्ष के अनुसार ही खेल खेलना चाहिए। उन्हें खेल खेलते समय अभिगम और आदत के लिए संतुलित दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

चंद्रा बिल्कुल, ताकि वह खेलों से जुड़कर अपने शरीर और दिमाग की तंदरुस्ती बनाए रख सके।

पढ़ना

अशोक

भारत के चक्रवर्ती सम्राट अशोक (ईसा पूर्व 304 से ईसा पूर्व 232) विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे। सम्राट अशोक का पूरा नाम देवानांप्रिय अशोक मौर्य (राजा प्रियदर्शी देवताओं का प्रिय) था। उनका राजकाल ईसा पूर्व 269 से ईसा पूर्व 232 में था। मौर्य राजवंश के चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अखंड भारत पर राज्य किया है तथा उनका मौर्य साम्राज्य उत्तर में हिंदुकुश की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी के दक्षिण मैसूर तक तथा पूर्व में बांग्लादेश से पश्चिम में अफ़गानिस्तान, ईरान तक पहुँच गया था। सम्राट अशोक का साम्राज्य आज का संपूर्ण भारत, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यान्मार के अधिकांश भू-भाग पर था। यह विशाल साम्राज्य उस समय तक से आज तक का सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य रहा है। चक्रवर्ती सम्राट अशोक विश्व के सभी महान एवं शक्तिशाली सम्राटों एवं राजाओं की पंक्तियों में हमेशा शीर्ष स्थान पर रहे हैं।

सम्राट अशोक को 'चक्रवर्ती सम्राट अशोक' कहा जाता है, जिसका अर्थ है - 'सम्राटों का सम्राट', और यह स्थान भारत में केवल सम्राट अशोक को ही मिला है। सम्राट अशोक को अपने विस्तृत साम्राज्य के बेहतर कुशल-प्रशासन तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भी जाना जाता है। सम्राट अशोक ने संपूर्ण एशिया में तथा अन्य सभी महाद्वीपों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक के संदर्भ स्तंभ एवं शिलालेख आज भी भारत के कई स्थानों पर दिखाई देते हैं। इसलिए सम्राट अशोक की ऐतिहासिक जानकारी अन्य किसी भी सम्राट या राजा से बहुत व्यापक मिलती है। सम्राट अशोक प्रेम, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा एवं शाकाहारी जीवन-प्रणाली के सच्चे समर्थक थे, इसलिए उनका नाम इतिहास में महान परोपकारी सम्राट के रूप में दर्ज़ हो चुका है। कलिंग युद्ध के दो साल पहले ही सम्राट अशोक भगवान बुद्ध की मानवतावादी शिक्षाओं से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये थे। उन्होंने बुद्ध की स्मृति में कई स्तम्भ खड़े कर दिये, जो आज भी नेपाल में उनके जन्मस्थल - लुम्बिनी - में मायादेवी मन्दिर के पास, सारनाथ,बौद्ध मन्दिर बोध-गया, कुशीनगर एवं आदी श्रीलंका, थाईलैंड, चीन देशों में अशोक स्तम्भ के रूप में देखे जा सकते हैं। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार भारत के अलावा श्रीलंका,

पढ़ना

अफ़गानिस्तान, पश्चिम एशिया, मिस्र तथा यूनान में भी करवाया। सम्राट अशोक पूरे जीवन में एक भी युद्ध नहीं हारे। उन्हीं के समय में 23 विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई थी; जिसमें तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, कंधार आदि विश्वविद्यालय प्रमुख थे। इन्हीं विश्वविद्यालयों में विदेश से कई छात्र शिक्षा पाने भारत आया करते थे। ये विश्वविद्यालय उस समय के उत्कृष्ट विश्वविद्यालय थे।

प्रश्न 1. अशोक के साम्राज्य का विस्तार कहाँ से कहाँ तक था?

प्रश्न 2. अशोक किस युद्ध के पूर्व बुद्ध धर्म की शिक्षा से प्रभावित हो गए थे?

प्रश्न 3. अशोक किन चीज़ों के समर्थक थे?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

आजादी मिलने के बाद आधी रात को नेहरू ने दिया था ऐतिहासिक भाषण

हम इन सब बातों को कोई जादू से दूर नहीं कर सकते लेकिन फिर भी हमारा पहला फर्ज़ है कि इन सवालों को लेकर जनता को आराम पहुंचाएँ और पूरे तौर से भी इन सवालों को हल करने की कोशिश करें। लेकिन इसके पहले एक और सवाल है और वह यह कि सारे, हमारे देश में अमन हो, शांति हो, आपस के लड़ाई झगड़े बिल्कुल बंद हों क्योंकि जब तक लड़ाई झगड़े होते हैं उस वक्त तक कोई और काम माकूल तरीके से नहीं हो सकता। तो यह पहली मेरी आपसे दरख़्वास्त है और आज जो नई गवर्नमेंट बनी है उसने भी पहली दरख़्वास्त हिंदुस्तान से की है जो आप शायद कल सुबह के अखबारों में पढ़ें – वह यह है कि यह जो आपस की नाइत्तिफ़ाकी, आपस के झगड़े हैं वे बंद किए जाएँ। क्योंकि आखिर अगर नाइत्तिफ़ाकी है भी तो किस तरह से वो हल होगी इन झगड़ों से और मारपीट से। आपने देख लिया कि एक जगह झगड़ा होता है तो दूसरी जगह उसका बदला होता है। उसका कोई अंत नहीं है और ये बातें कुछ आज़ाद लोगों को ज़ेब नहीं देती है। ये गुलामी की बातें हैं। हमने कहा कि हम प्रजातंत्रवाद इस देश में चाहते हैं। प्रजातंत्रवाद में फिर डेमोक्रेसी में इस तरह की बातें नहीं होती हैं। हमें जो सवाल हों, हमें आपस में सलाह मशविरा करके एक दूसरे का ख्याल करके उनको हल करना है और उनपर अमल करना है अपने फैसले पर। इसलिए पहली बात तो यही है कि हमें फ़ौरन अपने इस किस्म के सारे झगड़े बंद करने हैं।

प्रश्न 1. वक्ता के अनुसार एक जगह झगड़ा होता है तो दूसरी जगह क्या होता है?

प्रश्न 2. वक्ता अपने देश में क्या चाहता है?

प्रश्न 3. वक्ता के अनुसार सवालों को कैसे हल करना है?

पाठ
07

जीवंत और जरूरी मुद्दे

पाठ उद्देश्य

राजनीति व अंतरराष्ट्रीय संबंधों से जुड़े मुद्दों पर हिंदी भाषा के माध्यम से चर्चा कर सकते हैं।

도입 질문

- क्या आप कभी कोरिया में दोक्दो गए हैं?
- क्या आप किम-सू-रो और ह-ह्वाँग-ओक की कहानी जानते हैं?
- भारत में कौन-सी कोरियाई कंपनियाँ हैं?
- निकट अतीत में भारतीय प्रधानमंत्री ने कब कोरिया का भ्रमण किया था?

दोक्दो

यह ऐतिहासिक तथ्य कोरिया सरकार द्वारा प्रकाशित प्राचीन सामग्रियों द्वारा वर्णित हुआ है कि कोरिया, दोक्दो को अपने राज्यक्षेत्र के अंग के रूप में मान्यता देते हुए उस पर शासन करता आया है।

जोसन राजवंश (कोरिया) के प्रारंभिक काल में सरकार द्वारा प्रकाशित ग्रंथ सेजोंङ शिल्लोक जिरीजी (सन 1454) में वर्णित हुआ है कि उल्लुङदो (मुरुङ) और दोक्दो (उसान) गङवान प्रदेश के उल्जिन प्रांत के अधीनस्थ द्वीप हैं और दोनों द्वीप उसान-गुक (उसान राज्य) के राजक्षेत्र के अंतर्गत आते थे, जिन्हें छठी शताब्दी में शिल्ला राज्य (प्राचीन तीन राज्यों के शासन-काल में एक प्रमुख राज्य) ने विलनीकृत किया था। इससे यह ज्ञात होता है कि दोक्दो पर कोरिया का शासन तीन राज्यों के शासन-काल के दौर में भी था।

दोक्दो से संबंधित कई उल्लेख सिंजुङ दोङगुकयजी २डराम (नव संवृद्ध कोरियाई विश्वकोशनुमा भूगोल ग्रंथ, सन 1531), दोङगुक मुन्हन बिगो (कोरियाई संस्कृति एवं व्यवस्था संबंधी विश्वकोशनुमा ग्रंथ, सन 1770), मानगी योराम (सरकारी वित्त एवं सेना संबंधी ग्रंथ, सन 1808), जुङबो मुन्हन बिगो (वृहत संस्कृति एवं व्यवस्था संबंधी ग्रंथ, सन 1908) इत्यादि तथा सरकार द्वारा प्रकाशित अन्य प्राचीन सामग्रियों में भी निरंतर प्राप्त होता रहा है।

ख़ासकर, दोङगुक मुन्हन बिगो (सन 1770) आदि ग्रंथों में यह वर्णित हुआ है कि “उल्लुङग (उल्लुङदो) और उसान (दोक्दो) दोनों द्वीप उसान राज्य के भू-भाग हैं और उसान (दोक्दो) को ही जापान में सोङदो कहा जाता है।“ इससे अधिक स्पष्ट हो जाता है कि उसान द्वीप दोक्दो है और यह द्वीप कोरियाई राज्य क्षेत्र का अंग है।

दोक्दो के ऊपर कोरिया की स्थिति : दोक्दो क्यों कोरिया का भूभाग है?

चित्र में दर्शाए गए बिन्दुओं के माध्यम से कोरिया की दावेदारी को समझा जा सकता है। चित्र स्पष्ट बतलाता है कि यह सन 512 में उसान प्रदेश के आधिपत्य में था। वहाँ से 1454 और 1625 तक वहाँ सेजों सिल्लोक और जिराजी का कायदा चलता था । सन 1625 में एक विवाद के उपरांत लोगों को दखेशिमा (उल्लुंग्दो) जलमार्ग के लिए लाइसेंस दिया जाने लगा। वहाँ से सन 1693 में वहाँ के कर्ता-धर्ता आन योंग बोक का जापानियों द्वारा अपहरण कर लिया गया। फलस्वरूप विवाद और गहराए। सन 1695 में जापान ने दोक्दो के संदर्भ में, दोत्थोरी प्रदेश का मुलल्मा प्रस्तुत किया ठीक वैसा ही जैसा ज़बाब कोरिया की तरफ़ से दिया गया। विवादों को देखते हुए, सन 1696 की जनवरी में दखेशिमा (उल्लुंग्दो) जलमार्ग को प्रतिबंधित कर दिया गया। सन 1696 में आन योंग बोक ने जापान तक की समुद्री यात्रा की ताकि किसी प्रकार का विवाद शेष न रहे। सन 1770 में दोङ्गुक मुन्हन बिगो जैसे दस्तावेज़ में दोक्दो की स्थिति का उल्लेख किया गया है। उस वर्ष के बाद वहाँ निरंतर संघर्ष की स्थिति बनी रही। सन 1877 में थेजंग्वान आदेश के माध्यम से जापान ने दोक्दो को अपना साबित करना चाहा लेकिन सन 1900 की शाही धारा के माध्यम से; कोरिया ने जापान को बहुत ही कड़ी चुनौती दी और दोक्दो पर कोरिया ने अपनी सत्ता स्थापित की । इस कार्यवाई के बाद जापान ने 1905 में शिमाने प्रांत सार्वजनिक नोटिस के माध्यम से वहाँ आधिपत्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस विवाद के बाद कई निष्पक्ष कमिटियों का गठन हुआ और 1906 एवं 1946 के अलग-अलग रिपोर्ट में दोक्दो पर कोरिया का अधिकार दिखाया गया। दोक्दो को लेकर कोरिया और जापान के तनाव को कम करने के लिए सन 1951 में सैन फ्रांसिस्को शांति समझौता किया गया । सारे ऐतिहासिक दस्तावेज़ और रिपोर्ट यही प्रदर्शित करते हैं कि दोक्दो कोरिया का ही भूभाग है।

जया बहुत दिनों से मैं जापान और कोरिया के दरम्यान दोक्दो नामक क्षेत्र संबंधी विवाद के बारे में सुन रहा हूँ। अब यह पूरा मामला क्या है?

हिमांशु अच्छा, यह दोक्दो संबंधी कोरिया और जापान के बीच का विवाद काफ़ी पुराना है। यह विवाद ईस्ट शी में अवस्थित एक टापू नुमा क्षेत्र को लेकर है। जापान और कोरिया दोनों उस क्षेत्र को अपना कहते हैं। वहाँ कभी जापान अपने नियम कायदे लाद देता है तो कभी कोरिया उसे अपने हिसाब से नियंत्रित करता है।

जया ऐसे में तो काफ़ी परेशानी खड़ी हो जाती होगी। एक क्षेत्र पर दो देशों का शासन कैसे हो सकता है? वह किसी न किसी देश का क्षेत्र तो होगा ही ?

हिमांशु हाँ, अगर उपलब्ध साक्ष्यों और मौखिक परंपरा को देखा जाए तो दोक्दो का क्षेत्र कोरिया का माना जाना चाहिए। जापान का उस पर किया जाने वाला दावा निराधार और कमज़ोर ठहरता है।

जया इसका क्या मतलब हुआ? क्या जापान अपने दावे के साथ कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करता ?

हिमांशु नहीं, जापान अपने दावे के समर्थन में कुछ साक्ष्य प्रस्तुत तो करता है लेकिन वे सारे साक्ष्य कोरिया द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य के मुक़ाबले निहायत बचकाने और कृत्रिम लगते हैं।

जया अच्छा, वैसे कोरिया उस क्षेत्र के संबंध में किस तरह के प्रमाणों के साथ दावा करता है? अगर जानकारी हो तो मुझे थोड़ा बताओ।

हिमांशु अधिक जानकारी तो नहीं है जितना मैंने मीडिया और सरकारी प्रस्तुतियों से जाना है उसके अनुसार कोरिया के पास दोक्दो को लेकर ऐतिहासिक और राजशाही दस्तावेज़ हैं। उन दस्तावेजों में दोक्दो को कोरिया का हिस्सा बताया गया है। इसके अलावे कई स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच समितियों की रिपोर्ट भी दोक्दो को कोरिया का ही हिस्सा होने की ओर इंगित करते हैं।

जया तो जो कोरिया के पास ऐतिहासिक और राजशाही के दस्तावेज़ हैं वह किस समय के हैं?

हिमांशु काफ़ी पुराने हैं और ऐसा समझ लीजिए कि बिल्कुल आरंभिक वर्षों से हैं। कोरिया के पास जो सबसे पुराना दस्तावेज़ है वह सन 512 का है। वहाँ से लेकर सन 1951 तक के ऐसे कई दस्तावेज़ हैं जिससे यह पता लगता है कि दोक्दो हमेशा से कोरिया का ही हिस्सा रहा है। सन 512 के दस्तावेज़ में विभिन्न प्रकार की राजशाही राजक्षेत्र का वर्णन है, उसमें उसान प्रदेश (दोक्दो का क्षेत्र) का आधिपत्य कोरिया के पास दिखाया गया है। वहाँ से लेकर सन 1625 तक कोरिया ने निर्विवाद ढंग से उस क्षेत्र की कमान को अपने पास रखा था।

जया तो क्या यह माना जाए कि सन 1625 में पहली बार उस क्षेत्र को लेकर विवाद की स्थिति निर्मित हुई?

हिमांशु बड़े तौर पर मार्क करने योग्य स्थिति बनी। उससे पहले छोटे मोटे विवाद होते रहे होंगे ; लेकिन उसका कोई मजबूत साक्ष्य नहीं मिलता है। उस समय विवाद के आयामों को देखते हुए वहाँ के जलमार्ग का उपयोग करने के लिए लाइसेंस प्रदान किया जाने लगा और फिर निरंतर उस क्षेत्र को लेकर विवाद होने लगा।

जया अच्छा, तो क्या उस समय उन विवादों को सुलझाने का कोई ठोस प्रयास नहीं हुआ?

हिमांशु हुआ न मैंने जो कई निष्पक्ष कमिटियों की रिपोर्ट की बात की थी वह विश्व समुदाय द्वारा उन विवादों को सुलझाने के लिए ही स्थापित की गई थी। इसके अलावे विवादों को सुलझाने के निमित्त ही उस क्षेत्र के कोरियाई अधिपति आन योंग बोक ने सन 1696 में जापान तक की समुद्री यात्रा की थी ताकि किसी प्रकार का विवाद शेष न रहे लेकिन उनकी यात्रा का कोई सार्थक और दूरगामी परिणाम न निकल पाया।

जया और मुझे अनुमान हो रहा है कि उसके बाद वहाँ का विवाद विश्व समुदाय के सामने मुखर रूप में आया होगा।

वाद-विवाद / वार्तालाप

हिमांशु हाँ, ऐसा हो हुआ है, विवादों के आयामों को देखते हुए विश्व समुदाय ने उस क्षेत्र की वास्तविकता को समझने के लिए समय समय पर समितियां बनाई जिन्होंने उस क्षेत्र को कोरिया का हिस्सा माना है परंतु उन सभी को जापान स्वीकार नहीं करता है, जिससे वहाँ का विवाद अभी तक अनसुलझा ही रह गया है।

जया ऐसे में तो युद्ध की भी पूरी संभावना बनती है।

हिमांशु हाँ, बनती तो है; लेकिन वैसी ही संभावनाओं से बचने के लिए 1951 में दोनों देशों के बीच सैन फ्रांसिस्को शांति समझौता करवाया गया। आज दोनों देश उसी समझौते के अनुरूप आचरण कर रहे हैं।

जया आपने उस विवाद से जुड़े पहलुओं के बारे में स्पष्ट कर दिया। यह सब जानकार यही लागता है कि कोरिया को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी दोक्दो का आधिपत्य मिल जाना चाहिए। बहुत बहुत शुक्रिया!

पढ़ना

'अयोध्या की वह राजकुमारी जो बनी कोरिया की महारानी'

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जे-इन की पत्नी किम जोंग-सूक अकेले भारत दौरे पर आ रही हैं।

दक्षिण कोरिया की समाचार एजेंसी योनहाप ने इस ख़बर की पुष्टि की है। एजेंसी के अनुसार किम जोंग-सूक 6 नवंबर को अयोध्या में दीपावली से पहले हर साल आयोजित होने वाले दीपोत्सव में शामिल होंगी। 16 सालों में ऐसा पहली बार होगा जब किम जोंग-सूक दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति के बिना कोई विदेश यात्रा करेंगी।

चार दिन के भारत दौरे पर किम जोंग-सूक 4 नवंबर को दिल्ली पहुँचेंगी और सोमवार को वो भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाक़ात करेंगी। इस यात्रा के दौरान किम जोंग-सूक प्राचीन कोरियाई राज्य कारक के संस्थापक राजा किम सू-रो की भारतीय पत्नी, महारानी हौ के स्मारक पर भी जाएंगी। महारानी हौ का स्मारक अयोध्या में सरयू नदी के किनारे स्थित है।

कौन हैं महारानी हौ?

हज़ारों साल से राजकुमार राम और अयोध्या से उनके 14 साल के वनवास की कथा भारतीय संस्कृति का हिस्सा रही है। लेकिन बीते दो दशकों में अयोध्या से ही एक और शाही व्यक्ति के बाहरी दुनिया में जाने की बात लोगों की ज़बान पर चढ़ी हुई है। कोरिया के इतिहास में कहा गया है कि भारत के अयोध्या (उस वक़्त साकेत) से 2000 साल पहले 'अयोध्या की राजकुमारी' सुरीरत्ना नी हु ह्वांग ओक-अयुता भारत से दक्षिण कोरिया के ग्योंगसांग प्रांत के किमहये शहर गई थीं। लेकिन ये राजकुमारी कभी अयोध्या वापस नहीं लौटीं। चीनी भाषा में दर्ज़ दस्तावेज़ सामगुक युसा में कहा गया है कि ईश्वर ने अयोध्या की राजकुमारी के पिता को स्वप्न में आकर ये निर्देश दिया था कि वो अपनी बेटी को उनके भाई के साथ राजा किम सू-रो से विवाह करने के लिए किमहये शहर भेजें। उसके बाद राजकुमारी लंबे जलमार्ग से कोरिया आई थीं।

पढ़ना

कारक वंश

आज कोरिया में कारक गोत्र के तक़रीबन 60 लाख लोग ख़ुद को राजा किम सू-रो और अयोध्या की राजकुमारी के वंश का बताते हैं। इस पर यक़ीन रखने वाले लोगों की संख्या दक्षिण कोरिया की आबादी के दसवें हिस्से से भी ज़्यादा है। दक्षिण कोरिया के पूर्व राष्ट्रपति किम डेई जंग और पूर्व प्रधानमंत्री हियो जियोंग और जोंग पिल-किम इसी वंश से आते थे। इस वंश के लोगों ने उन पत्थरों को संभाल कर रखा है जिनके बारे में माना जाता है कि अयोध्या की राजकुमारी अपनी समुद्र-यात्रा के दौरान नाव को संतुलित रखने के लिए अपने साथ लाई थीं। किमहये शहर में इस राजकुमारी की एक बड़ी प्रतिमा भी है। दक्षिण कोरिया में राजकुमारी की जो कब्र है, उसके बारे में कहा जाता है कि इस पर लगा पत्थर अयोध्या से ही गया था। कारक वंश के लोगों का एक समूह हर साल फ़रवरी-मार्च के दौरान इस राजकुमारी की मातृभूमि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने अयोध्या आता रहा है।

प्रश्न 1. कोरिया की महारानी हौ का भारत के साथ क्या संबंध था?

प्रश्न 2. कोरिया में कारक गोत्र के लोग खुद को किसका वंसज मानते हैं?

प्रश्न 3. अयोध्या की राजकुमारी कोरिया किस कारण से आई थीं?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

प्रधानमंत्री मोदी और साउथ कोरिया के राष्ट्रपति ने नॉएडा में सैमसंग के मोबाइल प्लांट का किया उद्घाटन

प्रधानमंत्री ने कहा कि बहुत कम दर पर इंटरनेट डाटा उपलब्ध है। देश की एक लाख से अधिक ग्राम पंचायतों तक फाइबर नेटवर्क पहुँच चुका है। ये सारी बातें देश में हो रही डिजिटल क्रान्ति का संकेत है। उन्होंने यह भी कहा कि GEM यानि गवर्नमेंट ई मार्केट के जरिए सरकार अब सीधे उत्पादकों से सामान की भी खरीदादारी कर रही है। इससे छोटे और लघु उद्योगों को भी फायदा हुआ है तो सरकारी खरीददारी में भी पारदर्शिता बढ़ी है। बिज़ली, पानी का बिल भरना हो; स्कूल, कॉलेज में एडमिशन हो; पीएफ हो या फिर पेंशन लगभग हर सुविधा ऑन लाइन मिल रही है। देश भर में फैले लगभग तीन लाख कॉमन सर्विस सेंटर गाँव वालों की सेवा में काम कर रहे हैं। जब बारी दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जे-इन की आई तो उन्होंने भारत और दक्षिण कोरिया के बीच दशकों के संबंधों का उल्लेख करते हुए देश के डिजिटल क्रान्ति की सराहना की। उन्होंने कहा कि कोरिया और भारत एक साथ मिलकर तरक़्क़ी के रास्ते खोल सकते हैं। सैमसंग कंपनी नोएडा में अपनी मैनुफेक्चर यूनिट का विस्तार कर रही है। इसके लिए कंपनी ने 4915 करोड़ का निवेश किया है। सैमसंग के इस निवेश से मेक इन इंडिया को भी गति मिलेगी। इस यूनिट के जरिए सैमसंग मोबाइल उत्पादन को दोगुणा करने पर विचार कर रहा है। अभी सैमसंग देश में लगभग 7 करोड़ स्मार्ट फोन बनाता है जोकि 2020 तक 12 करोड़ हो सकता है। मोबाइल के इस मैनुफेक्चर यूनिट से जहां एक तरफ देश में युवाओं को रोजगार मिलेगा तो दूसरी तरफ मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया कैम्पेन को भी बढ़ावा मिलेगा।

प्रश्न 1. मून जे-इन ने कोरिया और भारत के बारे में क्या कहा?

प्रश्न 2. सैमसंग के यूनिट से देश को क्या मिलेगा?

प्रश्न 3. GEM के माध्यम से सरकार क्या कर रही है?

पाठ
08

सामाजिक जीवन की समस्याएँ

पाठ उद्देश्य

विभिन्न ज्वलंत सामाजिक समस्याओं पर हिंदी भाषा में विवाद-संवाद कर सकते हैं।

도입 질문

- आज के समाचार पत्र की प्रमुख सुर्ख़ियाँ क्या-क्या हैं?
- कोरिया में बेरोज़गारी की स्थिति कैसी है?
- भारत में कौन-सी सामाजिक समस्याएँ गंभीर हैं?
- आप किन सामाजिक मुद्दों पर ध्यान रखते हैं?

मुख्य विषय

बेरोज़गारी

क्या भारत में रोज़गार की स्थिति बेहतर हो रही है?

ग़ैर-सरकारी संगठन सीएमआईई ने दावा किया है कि भारत में बेरोजगारी की दर गिर रही है और वो कोरोना महामारी से पहले के स्तर पर आ चुकी है। लेकिन क्या वाकई ऐसा हुआ है?

ग़ैर-सरकारी संगठन सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) ने दावा किया है कि भारत में बेरोजगारी की दर गिर रही है और वो महामारी से पहले के स्तर पर आ चुकी है। अगर यह रिपोर्ट सही है तो इसका मतलब यह है कि तालाबंदी में ढील दिए जाने के बाद फिर से आर्थिक गतिविधि शुरू हुई है और रोज़गार का सृजन हुआ है। लेकिन क्या वाकई ऐसा हुआ है? सीएमआईई ने पिछले कुछ महीनों में कहा था कि जो बेरोजगारी दर मार्च में 8.75 प्रतिशत थी, वह अप्रैल में बढ़ कर 23.5 और मई में 27.1 प्रतिशत तक चली गई थी। लेकिन जून में इसमें गिरावट देखने को मिली। संस्था के अनुसार जून में बेरोजगारी दर गिर कर पहले 17.5 पर पहुंची, फिर 11.6 पर और फिर 8.5 पर पहुँच गई। सीएमआईई के अनुसार यह गिरावट मुख्य रुप से ग्रामीण बेरोजगारी के गिरने की वजह से आई है। शहरी बेरोजगारी में भी गिरावट आई है; लेकिन अब भी यह 11.2 प्रतिशत पर है जबकि तालाबंदी से पहले यह औसत 9 प्रतिशत पर थी। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार में बड़ा बदलाव आया है। ग्रामीण बेरोजगारी दर तालाबंदी से पहले; मार्च में 8.3 प्रतिशत थी। तालाबंदी के दौरान यह औसत 20 प्रतिशत पर रही। लेकिन जून में यह तालाबंदी से पहले के भी स्तर से नीचे गिर कर 7.26 पर आ गई।

ग्रामीण बेरोज़गारी के गिरने का सच

सीएमआईई का कहना है कि वैसे तो तालाबंदी में ढील दिए जाने से बेरोज़गारी का दबाव सामान्य रुप से कम ही हुआ है, फिर भी ऐसा लगता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक फ़ायदा; मनरेगा के तहत गतिविधियों के बढ़ने से और खरीफ की फ़सल की बोआई में हुई वृद्धि की वजह से हुआ है। मई में मनरेगा के तहत 56.5 करोड़ श्रम दिन दर्ज़ किए गए और 3.3 करोड़ परिवारों को इस योजना का लाभ मिला, जो कि सिर्फ़ तालाबंदी से पहले के मुकाबले ही नहीं,

बल्कि एक साल पहले की भी अवधि के मुकाबले भी बड़ी उछाल है। सीएमआईई का यह भी कहना है कि दक्षिण-पश्चिमी मानसून समय से शुरू हुआ और मध्य तथा पश्चिम भारत में समय से पहले पहुँचा। पहले पखवाड़े में लंबी अवधि के औसत से 32 प्रतिशत ज़्यादा बारिश हुई और इसकी वजह से खरीफ की बोआई पिछले साल के मुकाबले 39.4 प्रतिशत ज़्यादा हुई।

अर्थशास्त्री आमिर उल्ला खान कहते हैं कि सीएमआईई का डाटा काफ़ी विश्वसनीय रहा है, इसलिए कोई कारण नहीं है कि इस डाटा पर विश्वास नहीं किया जाए । लेकिन वो यह भी कहते हैं कि समस्या यह है कि रोज़गार के आंकड़ों में उछाल के बावजूद खपत नहीं बढ़ी होगी और आर्थिक विकास से सीधा जुड़ाव खपत का ही है।

आँकड़ों का आधार पुराना

कुछ और विशेषज्ञ तो मनरेगा और मौसमी कृषि गतिविधि के दम पर दर्ज़ की गई रोज़गार की इस वृद्धि को असली वृद्धि मानते ही नहीं हैं। इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज के प्रोफेसर अरुण कुमार कहते हैं कि सबसे पहले तो सीएमआईई जिस आधार पर आँकड़ों का आकलन कर रहा है वो पुराने हैं और अब प्रासंगिक नहीं हैं। इसके अलावा उनका मानना है कि जो व्यक्ति शहर में किसी नियमित रोज़गार या स्वरोज़गार में था और वो सब बंद हो जाने से उसने गाँव जा कर मनरेगा के तहत कुछ काम किया, तो इसे रोज़गार के आँकड़ों में नहीं जोड़ना चाहिए; क्योंकि वह व्यक्ति शहर में जिस तरह का काम कर रहा था और उससे उसकी जिस तरह की आय हो रही थी; उसे गाँव में ना तो वैसा काम मिला और ना ही वैसी आय। अरुण कुमार यह भी कहते हैं कि इस वजह से यह संकेत देना कि अर्थव्यवस्था महामारी से पहले के स्तर की तरफ़ लौट रही है, भ्रामक है।

मनरेगा में स्थिति अच्छी नहीं

इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट में सेंटर फॉर एम्प्लॉयमेंट स्टडीज के डायरेक्टर प्रोफेसर रवि श्रीवास्तव भी सीएमआईई के आँकड़ों को सही नहीं मानते; क्योंकि उनका कहना है कि वो जिन दूसरे तथ्यों को देख रहे हैं वो इन आंकड़ों की जरा भी पुष्टि नहीं करते । उनका कहना है कि शहरों से तो अभी भी गांवों की तरफ़ पलायन ही चल रहा है, जो कि शहरों में नौकरियां ना होने का सबूत है। जहाँ तक गाँवों की बात है तो रवि श्रीवास्तव कहते हैं कि कहीं-कहीं तो लोगों के अभी तक मनरेगा के जॉब-कार्ड ही नहीं बने हैं और जहाँ बने हैं वहाँ 5-7 दिनों में एक दिन काम मिलने की ख़बर आ रही है। रवि श्रीवास्तव यह भी कहते हैं कि सीएमआईई ने तालाबंदी के दौरान भी जब 27 प्रतिशत बेरोजगारी के आँकड़े दिए थे तब कई दूसरी संस्थाओं के आँकड़े 50 से 60 प्रतिशत बेरोज़गारी दिखा रहे थे। इसके अलावा वो यह भी कहते हैं कि संस्था के अपने आँकड़ों में विषमता भी है; क्योंकि तालाबंदी के दौरान के आँकड़ों में भी, बेरोज़गारी के आँकड़ों और आय तथा खपत के आँकड़ों में बहुत बड़ा अंतर था।

वास्तव में, सरकारी आँकड़ों के अभाव में इन आँकड़ों को पूरी तरह से मान लेना या नकार देना मुश्किल है। असलियत क्या है, यह जानने के लिए कुछ और अध्ययनों का इंतज़ार करना पड़ेगा।

अक्षय आज कोविड महामारी के समय भारत में हुई तालाबंदी के दौरान रोज़गार दर के विषय में जानकारी ले रहा था। बहुत सारे स्रोतों से जानकारी लेने की कोशिश की; लेकिन परस्पर विरोधी आँकड़े मिले हैं। किसे सच माना जाए , यह तय करना मुश्किल है।

सुहासिनी सहज अनुमान तो यही होता है कि कोविड महामारी के लिए हुई तालाबंदी के समय तो बेरोज़गारी दर बढ़ी होगी; क्योंकि सारे व्यवसाय और कारखाने बंद पड़े थे। लोगों की गतिविधियाँ बंद थीं। ऐसे में आपको परस्पर विरोधी आँकड़े कहाँ देखने को मिल गए?

अक्षय पहले तो मैं एक ग़ैर-सरकारी संगठन द्वारा किए गए सर्वे के आधार पर प्रकाशित रिपोर्ट को देख रहा था। फिर जब ज्यादा जिज्ञासा हुई तो दूसरे स्रोतों से प्रकाशित रिपोर्ट को भी देखने लगा। एक में जहाँ यह दिखाया गया है कि तालेबंदी के दौरान बढ़ी हुई बेरोजगारी दर ढिलाई मिलने पर निरंतर गिरी है और वह तालेबंदी से पहले की दर से भी कम हो गया है। वहीं दूसरे में विशेषज्ञों ने निरूपित किया है कि बेरोज़गारी की दर घटी नहीं अपितु बढ़ी है।

सुहासिनी ऐसी बात है तब तो आपको रिपोर्टों के आधार को देखना होगा। मतलब यह कि जिस रिपोर्ट में बेरोज़गारी की दर गिरती हुई दिखायी गई है उस रिपोर्ट के आधारों और जिस रिपोर्ट में बेरोज़गारी की दर में बढ़ोतरी दर्शायी गई है उसके आधार को देखना होगा। हो सकता है कि दोनों संगठनों ने अलग अलग आधार के अनुसार रिपोर्ट बनाई हो।

अक्षय हाँ, यह तो है ! लेकिन अगर कोई सच्ची वस्तुस्थिति जानना चाहता हो तो उसे कैसे पता चलेगा? मैं तो सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) और इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट के सेंटर फॉर एम्प्लॉयमेंट स्टडीज, इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज के रिपोर्ट्स देख रहा था।

सुहासिनी अच्छा तो आप यह बताओ कि उन रिपोर्टों में किस किस क्षेत्र की चर्चा की गई है? क्या सभी रिपोर्ट्स में एक ही क्षेत्र की चर्चा मिलती है?

अक्षय नहीं, सीएमआईई की रिपोर्ट में मनरेगा के तहत बढ़ने वाली गतिविधियों और खरीफ़ फ़सल की बोआई की चर्चा केंद्र में दिखती है। इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज और सेंटर फॉर एम्प्लॉयमेंट स्टडीज के रिपोर्ट में शहरी और ग्रामीण नौकरियों पर केंद्रित विश्लेषण दिखाई पड़ता है।

सुहासिनी अच्छा तो रिपोर्टस के आधार में अंतर है ! लेकिन तीनों रिपोर्ट्स में ग्रामीण इलाकों की नौकरी की चर्चा ज़रूर है। लेकिन सीएमआईई अपनी रिपोर्ट को मनरेगा के आँकड़ों पर केंद्रित करके चला है और ज़ाहिर सी बात है कि अन्य रिपोर्ट का आधार फ़लक सीएमआईई के फ़लक से बड़ा है। ऐसे में सीएमआईई की रिपोर्ट को मुक्कमल समझना सही नहीं होगा।

अक्षय हाँ, देखिए चर्चा करने से कितना फ़ायदा होता है। मेरा दिमाग रिपोर्टस को पढ़कर उलझा हुआ था ; लेकिन आपसे चर्चा करके दृष्टि साफ हुई कि किसे किस संदर्भ से सही माने। पर इतना तो कहा जा सकता है न सीएमआईई की रिपोर्ट मनरेगा के परिप्रेक्ष्य से सही है।

सुहासिनी कहा तो जा सकता है; लेकिन हमें यह देखना होगा कि रिपोर्ट का निर्माण करते समय उन परिस्थितियों और समीकरणों का ध्यान रखा गया है या नहीं जिनसे शहर से गाँव में आए लोगों की जीविका के आयामों में बदलाव आया है और वह बदलाव कितना व्यापक अंतर रखता है। अगर इस पहलू की कमी रिपोर्ट में होगी तो निश्चय ही वास्तविक परिस्थिति का पता नहीं चल पाएगा।

अक्षय आपकी यह बात भी सही है तब तो अन्य रिपोर्ट को मानना पड़ेगा।

सुहासिनी यह भी ज़रूरी नहीं है; क्योंकि हमें यह देखना होगा कि अन्य रिपोर्ट में ठोस आँकड़ों का समुचित प्रयोग हुआ है या नहीं; जैसा सीएमआईई ने करने की कोशिश की है। सीएमआईई के प्रयासों में कुछ गहरे पहलू छूट गए हैं जिसकी वजह से उनका प्रयास सही परिणाम नही दे रहा है। उसी तरह से अन्य रिपोर्ट में

वाद-विवाद / वार्तालाप

आँकड़ों के समुचित प्रयोग न होने से सही परिणाम आ भी नहीं सकता है।

अक्षय बिल्कुल ऐसे में क्या किया जा सकता है जिससे यह पता चल सके कि तालेबंदी के दौरान और उसके बाद रोजगार की दर क्या रही?

सुहासिनी उसके लिए अभी हमें और अध्ययन-सामाग्री का इंतज़ार और सरकारी आँकड़ों के ज़ारी होने के इंतज़ार करना होगा । तभी हम वास्तविकता के निकट पहुँच पाएँगे।

पढ़ना

यौन हिंसा आपकी गलती नहीं है !

खामोश मत रहिए ... मदद माँगिये !

- 'वह' एक ७ वर्षीय जिंदादिल लड़की थी । उसके गांव का एक दूर का रिश्तेदार नौकरी की तलाश में आया और उसी के घर में किरायेदार के तौर पर रहने लगा, उसे वह मामा कहती थी । जब घर पर कोई नहीं होता था तो वह व्यक्ति लड़की के साथ कई बार 'खेल' के नाम पर यौन हरकते करता था जिससे वह असहज हो जाती थी । उसने धमकी दी कि यदि वह किसी को इस बारे में बतायेगी तो उसकी माँ मर जायेगी । लेकिन लड़की की माँ ने उसके व्यवहार में आये बदलाव पर गौर किया और उसे भरोसे में लेकर इसका कारण पूछा । लड़की ने कहा, "मामा ने कहा है कि यदि मैं यह किसी को बताउँगी तो मेरी माँ मर जायेंगी... माँ क्या सच में ऐसा होगा ?"
- ऑफिस में काम करना और घर वापस जाना 'उसकी' नियमित दिनचर्या थी । एक दिन वह ऑफिस में बीमार पड़ गई, पर वह डॉक्टर के पास जाने से मना कर रही थी। सहेली के बार-बार आग्रह करने के बाद उसने बताया कि एक दिन काम से लौटते वक्त, उसके इलाके में रहने वाले एक आदमी ने किसी काम के बहाने से अपने घर बुलाया और उसके साथ जबरदस्ती की । वह इस अप्रत्याशित घटना से इतना घबरा गई कि कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं दे पाई । उस व्यक्ति ने धमकी दी थी कि इस घटना के बारे में किसी को भी बताया तो वह लड़की को बदनाम कर देगा ।
- 'वह' एक शाम घर जाने के लिए बस का इंतजार कर रही थी; उसे पता था बच्चे घर पर उस की राह देख रहे होंगे । तभी उसका बॉस उस रास्ते से अपनी कार से गुजरा और उसे घर छोड़ने का ऑफर दिया और बॉस ने उसे कोल्ड ड्रिंक पीने को दिया जो पीकर वह अचेत हो गई । सुबह जब वह उठी तो वह गाडी में थी और उसके कपडे अस्त-व्यस्त थे । उसे बस इतना ही याद आया कि उसने कोल्ड ड्रिंक पी थी । बॉस के हाथ में बंदूक थी । उन्होने कहा "यदि तुम इसकी रिपोर्ट कराओगी, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा, सुना तुमने ?"

यौन हिंसा होने पर चुप रहने के कारण

प्रश्न 1. यौन हिंसा का शिकार होने पर क्या परिणाम देखने को मिलते हैं?

प्रश्न 2. छोटी बच्ची का रिश्तेदार छोटी बच्ची से किस तरह से यौन हिंसा करता था?

प्रश्न 3. ऑफिस जाने वाली लड़की ने खुद पर घटी घटना के बारे में क्या बताया?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

तीन तलाक़ देने पर क्या होगा

अगर कोई मुस्लिम पति अपनी पत्नी को एक ही जगह में एक साथ तीन तलाक देता है यानी यह कहता है या लिखता है कि मैं तुझे तीन तलाक देता हूँ या तुझे तलाक, तलाक, तलाक; तो इसे कहा जाता है ट्रीपल तलाक। ट्रीपल तलाक होते ही उन दोनों की शादी खत्म हो जाती है और उन दोनों के बीच में पति पत्नी वाला कोई भी रिश्ता नहीं रह जाता है। एक, दो और तीन तलाक में फर्क यह है कि अगर कोई पति अपनी पत्नी को एक या दो तलाक देता है तो उसके बाद वो दोनों फिर से शादी कर सकते हैं। लेकिन अगर एक पति अपनी पत्नी को तीन तलाक दे देता है तो उसके बाद वे दोनों आपस में शादी नहीं कर सकते। तीन तलाक के बाद वे दोनों पूरी तरह से आज़ाद हो जाते हैं। उनमें से कोई भी कहीं भी किसी से भी शादी कर सकता है। तीन तलाक के बाद अगर पत्नी ने किसी दूसरे आदमी से शादी कर ली और उसके साथ रहने लगी और कभी उस दूसरे पति ने उसे तलाक दे दिया या उस दूसरे पति की डेथ हो जाती है, तो उसके बाद वह उस पहले आदमी से जो उसका पति था उससे शादी कर सकती है। पहले पति से तीन तलाक मिलने के बाद उसने जो दूसरे आदमी से शादी की थी इसको कहा जाता है हलाला। तीन तलाक का हलाला से डायरेक्ट कनैक्शन है क्योंकि अगर एक पति अपनी पत्नी को तीन तलाक दे देता है तो उसके बाद वह उससे फिर से शादी नहीं कर सकता। लेकिन अगर वो औरत किसी दूसरे आदमी से शादी कर ले, उसके साथ रहने लगे और वो आदमी उसको कभी तलाक दे दे या उसकी डेथ हो जाए तो उसके बाद वह पहले वाले पति से शादी कर सकती है। 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने तीन तलाक को इनवैलिड क़रार कर दिया था कि अगर कोई पति अपनी पत्नी को एक साथ तीन तलाक देता है तो वह इनवैलिड है उस तलाक को नहीं माना जाएगा। अब इसपर कानून भी बन चुका है।

प्रश्न 1. ट्रीपल तलाक़ किस तरह से होता था?

प्रश्न 2. हलाला किस परिस्थिति को कहा जाता है?

प्रश्न 3. ट्रीपल तलाक़ से हलाला का क्या कनैक्शन है?

पाठ
09

भारतीय संस्कृति की झलकियाँ

पाठ उद्देश्य

भारत के क्लासिक संगीत, साज और नृत्य सहित विभिन्न सांस्कृतिक कलाओं के बारे में हिंदी में समझा सकता है।

도입 질문

- क्या आपने कभी कोई पारंपरिक भारतीय नृत्य देखा है?
- भारतीय पारंपरिक संगीत वाद्य-यंत्र कौन-कौन से हैं?
- क्या भारत में मंत्रमुग्ध करने वाली कोई वास्तुकला है?
- आपने भारत के किन ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया है?

तबला

तबला भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक ताल-वाद्य है। यह मुख्य रूप से दक्षिण एशियाई देशों में बहुत प्रचलित है। यह लकड़ी के दो ऊर्ध्वमुखी, बेलनाकार, चमड़े से मढ़े मुँह वाली रूपाकृति के रूप में होता है, जिन्हें हाथों के अनुरूप रख कर बजाये जाने की परंपरा के अनुसार "दायाँ" और "बायाँ" कहते हैं। यह ताल-वाद्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में काफ़ी महत्त्वपूर्ण है और अठारहवीं सदी के बाद से इसका प्रयोग शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन-वादन में लगभग अनिवार्य रूप से हो रहा है। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग सुगम संगीत और हिंदी सिनेमा में भी प्रमुखता से हुआ है। पहले यह गायन-वादन-नृत्य इत्यादि में ताल मात्र देने के लिए सहयोगी वाद्य के रूप में ही बजाया जाता था, परन्तु बाद में कई तबलावादकों ने इसे एकल वादन का माध्यम बनाया और काफ़ी प्रसिद्धि भी अर्जित की।

इसके नाम तबला की उत्पत्ति अरबी-फ़ारसी मूल के शब्द "तब्ल" से बतायी जाती है। इस वाद्य यंत्र की वास्तविक उत्पत्ति विवादित है। जहाँ कुछ विद्वान् इसे एक प्राचीन भारतीय परम्परा के ही ऊर्ध्वक-आलिंग्यक वाद्यों का विकसित रूप मानते हैं; वहीं कुछ इसकी उत्पत्ति पखावज से मानते हैं और कुछ लोग इसकी उत्पत्ति का स्थान पश्चिमी एशिया भी बताते हैं।

"तबला" के दो अंग होते हैं, अर्थात इसमें दो ड्रम होते हैं जिनका आकार और आकृति एक दूसरे से कुछ भिन्नता लिए होती है। तकनीकी तौर पर, एक सीधे हाथ वाले वादक द्वारा, दाहिने हाथ (कुशल हाथ) से बजाया जाने वाला अंग ही तबला कहलाता है। आम भाषा में इसे दायाँ या दाहिना कहते हैं। यह लगभग 15 सेंटीमीटर (~6 इंच) व्यास वाला और 25 सेंटीमीटर (~10 इंच) ऊँचाई वाला होता है। इसके बायें वाले हिस्से को डग्गा, डुग्गी अथवा धामा भी कहते हैं। यह भी चमड़े मढ़ा मुँह वाला ड्रम होता है जिसका आकार लगभग 20 सेंटीमीटर (~8 इंच) व्यास वाला और 25 सेंटीमीटर (~10 इंच) ऊँचाई वाला होता है। पुराने प्राप्त चित्रों में दाहिने और बायें अंग का आकार लगभग समान पाया गया है और कभी-कभी बायें का आकर छोटा भी मिलता है। हालाँकि, अब बायाँ का आकार तबले की तुलना में काफ़ी बड़ा होता है। दाहिना या तबला बहुधा लकड़ी का बना होता है जबकि बायाँ मिट्टी (पके बर्तन के रूप में जिस पर चमड़ा मढ़ा जाय) का भी होता है अथवा दोनों ही पीतल या फूल (मिश्र-धातु) के भी बने हो सकते हैं। दाहिने या तबला में डोरियों के बीच (जो अक्सर चमड़े की ही होती हैं) लकड़ी के छोटे आड़े बेलन लगे होते हैं, जिन पर हथौड़ी से चोट कर डोरियों के कसाव को बदला जा सकता है। इस क्रिया को सुर मिलाना कहते हैं।

गायन-वादन के दौरान राग के मुख्य स्वर "सा" के साथ तबले की ध्वनि की तीक्ष्णता का मिलान किया जाता है, जिसे तबले को "षडज" पर मिलाना कहते हैं। बायें को सामान्यतः, तबले की तुलना में निचले स्वरों "मन्द्र पंचम" सुर में रखा जाता है। संगीत के तीखे और चंचल बोल - ता, तिन, ना इत्यादि दाहिने पर बजाये जाते हैं और बायें का आकार बड़ा होने के कारण इससे गंभीर आवाज वाले नाद धे, धिग इत्यादि बजाये हैं। इसीलिए "बायें" को "बेस ड्रम" की तरह प्रयोग में लाया जाता है। तबले के ऊपर लगे चमड़े के तीन हिस्से होते हैं।

1. सबसे किनारे का हिस्सा; जिन्हें चाट, चांटी, किनारा, किनार आदि कहा जाता है।
2. सबसे बीच का काला हिस्सा; जिसे बीच, स्याही, सियाही आदि कहा जाता है और वहाँ एक प्रकार का काला पदार्थ चिपका होता है, जिससे यह हिस्सा मोटा हो जाता है।
3. स्याही और किनारे के बीच का भाग; जिसे सुर, मैदान, लव, लौ आदि कहा जाता है।

तबले के ऊपरी हिस्से के बीचो-बीच एक काले चकत्ते के रूप में जो हिस्सा होता है और जिसे "स्याही" कहते हैं; वह मुख्य रूप से चावल या गेहूँ के मांड में कई प्रकार की चीजें मिला कर बनाया गया एक लेप होता है जो सूख कर कड़ा हो जाने के बाद तबले के चमड़े की स्वाभाविक ध्वनि का परिष्कार करके इसे एक खनकदार आवाज़ प्रदान करता है। तबला निर्माण में स्याही का समुचित प्रयोग एक निपुणता की चीज़ है और वाद्ययंत्र की गुणवत्ता काफ़ी हद तक स्याही आरोपण की कुशलता पर निर्भर होती है।

राघव भारत की सांस्कृतिकता के आयामों को समझने का एक बेहतरीन माध्यम संगीत हो सकता है। दुनिया भर के संगीत क्षेत्र की अपेक्षा भारत का संगीत क्षेत्र अधिक आयामों को समेटे हुए है। हमें निश्चय ही उसके समस्त अवयवों पर गहराई से चिंतन करना चाहिए।

नैना बिल्कुल सही कह रहे हैं ! हम लोग अपने समाज के महत्त्वपूर्ण आयामों पर ध्यान ही कहाँ देते हैं। अपनी चीजों को समझने से ही अन्य के बरक्स ख़ुद का मूल्यांकन हो सकता है। भारत के संगीत क्षेत्र में एक से एक वाद्य-यंत्र हैं जिन्हें यहाँ के संगीत की उन्नतता का परिचायक माना जा सकता है। यहाँ हर मौके पर संगीत का रिवाज़ है और देश के हर कोने की अपनी संस्कृति, अपना संगीत है।

राघव अन्य के बरक्स ख़ुद का मूल्यांकन। बहुत सही बात कही आपने ! देश के अलग अलग कोने का अलग अलग संगीत है। राजस्थान में राजस्थानी और मेवाड़ी तो बंगाल में बंगाली और रवीन्द्र, इसी तरह से कश्मीरी संगीत और कर्नाटक संगीत के अपने अपने आयाम हैं। इन सभी पर समवेत ढंग से विचार और उनका मूल्यांकन होना ही चाहिए, तभी भारत के संगीत क्षेत्र का सही ढंग से अनुमान लगया जा सकता है। आपने वाद्य-यंत्रों का भी उल्लेख किया ; यह भी एक सशक्त आयाम है; लेकिन सच्चाई यही है कि लोगों को उनके विषय में जानकारी नहीं है।

नैना जानकारी तो मुझे भी नहीं है। यदि आपके पास भारतीय संगीत क्षेत्र के वाद्य-यंत्रों की जानकारी हो तो थोड़ा प्रकाश डालिए।

राघव आपने अच्छा पकड़ा है। जानकारी मेरे पास भी कम ही है। बामुश्किल मुझे अधिक से अधिक दस वाद्य-यंत्रों के विषय में कुछ कुछ पता है। उन वाद्य-यंत्रों को दूसरी संगीत-पद्धति में सुन पाना मुश्किल है।

नैना अच्छी बात है। मेरी उत्सुकता बढ़ गई है; आप उन यंत्रों के बारे में मुझे कुछ बताइए।

राघव देखिए ; जैसे एक वाद्य यंत्र है पेपा, जिसकी ध्वनि सिर्फ़ असम के लोगों के संगीत क्षेत्र में सुनाई पड़ती है। भैंस के सिंग से बना यह वाद्य-यंत्र बांसुरी की तरह ध्वनि निकालता है।

नैना पेपा, यह नाम मैंने पहली बार सुना है। और भी बताइए। यह मेरे पास बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी होगी।

राघव पेपा की तरह ही अलगोजा होता है। अलगोजा का इस्तेमाल राजस्थानी और पंजाबी संगीत में किया जाता है और यह देखने में दो बांसुरी की तरह लगता है। अलगोजा को दोनों हाथों की सहायता से बजाया जाता है। इसी तरह से कुजहल भी होता है जिसे देख शहनाई का भ्रम होता है। लेकिन इसकी ध्वनि शहनाई से तीखी होती है।

नैना हाँ, मैंने वह वाद्य-यंत्र देखा है; लेकिन मुझे उसका नाम ज्ञात नहीं था।

राघव ये तीनों वाद्य-यंत्र मुंह की हवा से बजाए जाते हैं। हाथ से बजाए जाने वाले कई यंत्र हैं जिनमें से मैं सिर्फ़ पखावज, पदयानी थपपु, सुरसिंगार, गुबगुबा, संबल और डुगडुगी के बारे में जानता हूँ।

नैना सच कहूँ तो मैं इन सबों के बारें में कुछ भी नहीं जानती। मैंने ये सभी नाम पहली बार सुना है। आप सभी के बारे में थोड़ा थोड़ा बताइए।

राघव अच्छा, देखिए; पखावज को मृदंग भी कहा जाता है। ये देखने में ढोलक की तरह होता है और इसे तबले की तरह ट्यून किया जाता है। इसका इस्तेमाल कई सारे लोक-नृत्यों में सहयोगी वाद्य-यंत्र की तरह होता है। पदयानी थपपु हथेली से बजाया जाता है और यह दक्षिण भारत में ज्यादा लोकप्रिय है। सुरसिंगार सरोद की तरह दिखता है; लेकिन यह उससे आकार में बड़ा होता है। इसकी आवाज़ सरोद की तरह लेकिन उससे गहरी होती है। इसे चमड़ी, लकड़ी और धातु से बनाया जाता है और इसमें लगे तार को धातु तार से बजाया जाता है।

नैना मैंने सुरसिंगार को भी देखा है। अक्सर सड़क किनारे लोकगायक शायद इसे ही लेकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

वाद-विवाद / वार्तालाप

राघव हाँ बिल्कुल, आप सही कह रही हैं। गुबगुबा पहली नज़र में छोटा तबला लगता है ; लेकिन यह तबले से बिल्कुल अलग होता है। इसका एक हिस्सा दो तारों से बँधा होता है जो यंत्र के दूसरे छोर से बँधा होता है। इसे एक हाथ के बगल में दबा कर दूसरे हाथ से बजाया जाता है। डुगडुगी को अधिकांश लोग डमरू के नाम से जानते हैं। इसकी तमिलनाडु के लोकसंगीत में काफ़ी अहमियत है और लोग इसे भगवान शिव के वाद्य-यंत्र के तौर पर देखते हैं।

नैना डमरू को तो मैंने बजाया है; लेकिन इसका नाम डुगडुगी नहीं जानती थी। आपने संबल का भी नाम लिया था, वह कैसा वाद्य-यंत्र है?

राघव संबल ऐसा वाद्य-यंत्र है जिसमे दो छोटे ड्रम आपस में जुड़े होते हैं और दोनों के ऊपरी हिस्से चमड़े से ढके होते हैं। दोनों ड्रम की ध्वनि में अंतर होता है और उन्हें एक स्टिक की सहायता से बजाया जाता है। आप इस यंत्र को पूर्वी भारत के क्षेत्र में देखेंगे।

नैना अच्छा, देखिए मुझे आज आपसे भारतीय संगीत क्षेत्र के कितने अज्ञात वाद्य-यंत्रों की जानकारी हुई।

राघव अरे मैंने तो उन यंत्रों के बारे में ही बताया जिनके विषय में मुझे कुछ जानकारी है। इन यंत्रों के अतिरिक्त कई यंत्र भारतीय संगीत क्षेत्र में हैं जिसके बारे में मुझे कुछ भी जानकारी नहीं है। सिर्फ़ ऐसे यंत्रों का नाम भर सुन रखा है। जैसे रावण हत्था, तुतहरी आदि।

नैना अच्छा तब तो इस क्षेत्र में अभी मेरी खोज चलती रहेगी। आपका शुक्रिया!

पढ़ना

भरतनाट्यम्

भरतनाट्यम् या सधिर-अट्टम मुख्य रूप से दक्षिण भारत की एक शास्त्रीय नृत्य-शैली है। इस नृत्यकला में भावम्, रागम् और तालम्- तीन कलाओं का समावेश होता है। भावम् से 'भ', रागम् से 'र' और तालम् से 'त' लिया गया और इस तरह भरतनाट्यम नाम अस्तित्व में आया। यह भरत मुनि के नाट्य-शास्त्र (जो ४०० ई०पू० का है) पर आधारित है। वर्तमान समय में, इस नृत्य-शैली का मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा अभ्यास किया जाता है। इस नृत्य-शैली का प्रेरणास्त्रोत चिदंबरम के प्राचीन मंदिर की मूर्तियों को माना जाता है।

भरतनाट्यम् को सबसे प्राचीन नृत्यों में से एक माना जाता है। इस नृत्य को तमिलनाडु में देवदासियों द्वारा विकसित व प्रसारित किया गया था। शुरु-शुरु में; इस नृत्य को; देवदासियों के द्वारा विकसित होने के कारण, उचित सम्मान नहीं मिल पाया था; लेकिन बीसवीं सदी के शुरु में ई. कृष्ण अय्यर और रुकीमणि देवी के प्रयासों से इस नृत्य को दुबारा जोरदार ढंग से सामान्य जीवन में स्थापित किया गया। भरतनाट्यम को साधारणत दो अंशों में सम्पन्न किया जाता है - पहला नृत्य और दूसरा अभिनय।

भरतनाट्यम् में होने वाली शारीरिक क्रिया को तीन भागों में बांटा जाता है - समभंग, अभंग और त्रिभंग। भरतनाट्यम में नृत्य-क्रम इस प्रकार होता है। आलारिपु - इस अंश में कविता (सोल्लू कुट्टू) रहती है। उसी की छंद में आवृत्ति होती है। तिश्र या मिश्र छंद, करताल और मृदंग के साथ यह अंश अनुष्ठित होता है। इसे नृत्यानुष्ठान की भूमिका भी कहा जाता है। इस अंश के बाद जातीस्वरम होता है। यह अंश कला-ज्ञान का परिचय देने का होता है इसमें नर्तक ख़ुद के कला-ज्ञान का परिचय देते हैं। इस अंश में स्वर-

पढ़ना

मालिका के साथ राग-रूप प्रदर्शित होता होता है, जो कि उच्च कला की मांग करता है। शब्दम - ये तीसरे नम्बर का अंश होता है। सभी अंशों में यह अंश सबसे आकर्षक अंश होता है। शब्दम में, नाट्य-भावों का वर्णन किया जाता है। इसके लिए बहुविचित्र तथा लावण्यमय नृत्य पेश करके नाट्य-भावों का वर्णन किया जाता है। इसके बाद के वर्णम अंश में नृत्यकला के अलग-अलग वर्णों को प्रस्तुत किया जाता है। वर्णम में भाव, ताल और राग तीनों की प्रस्तुति होती है। भरतनाट्यम् के सभी अंशों में यह अंश सबसे चुनौती पूर्ण होता है। वर्णम के बाद पदम अंश होता है। इस अंश में सात पंक्तियुक्त वन्दना होती है। यह वन्दना संस्कृत, तेलुगु, तमिल भाषा में होती है। इसी अंश में नर्तक के अभिनय की मजबूती का पता चलता है। सबसे आखिर में तिल्लाना अंश होता है। इस अंश में बहुविचित्र नृत्य भंगिमाओं के साथ-साथ नारी-सौन्दर्य के अलग-अलग लावण्यों को दिखाया जाता है।

प्रश्न 1. भरतनाट्यम शब्द का निर्माण किस तरह से हुआ है?

प्रश्न 2. भरतनाट्यम में किस अंश में नर्तक कला ज्ञान का परिचय देता है?

प्रश्न 3. भरतनाट्यम नृत्य में सबसे आकर्षक अंश कौन सा होता है?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

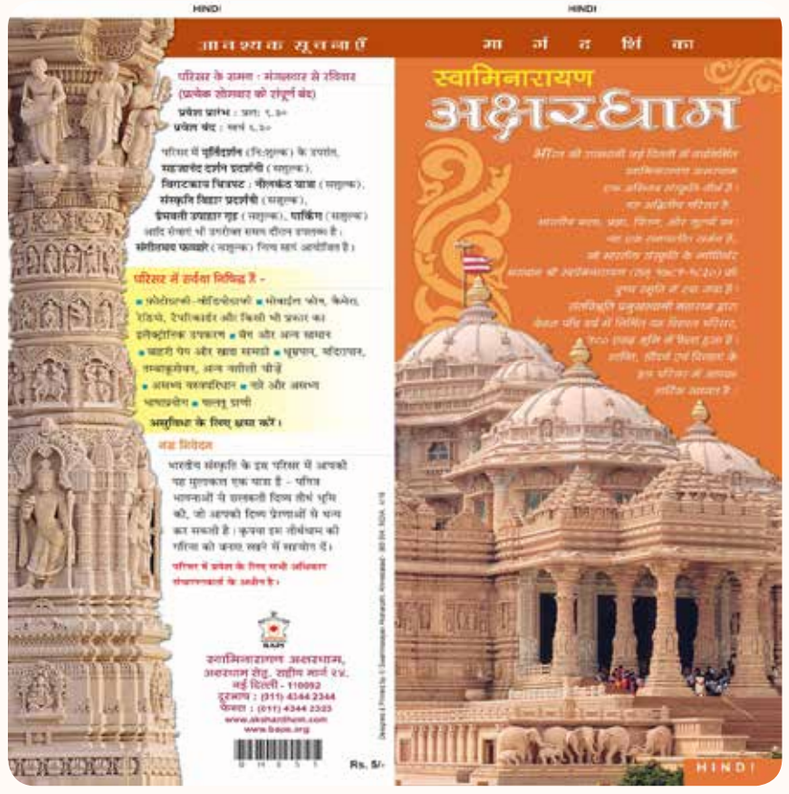

प्रश्न 1. अक्षरधाम किस समयावधि के दरम्यान घूमा जा सकता है?

प्रश्न 2. अक्षरधाम को किस तरह का सर्जन समझा जा सकता है?

प्रश्न 3. अक्षरधाम में क्या क्या ले जाना उचित नहीं है?

पाठ
10

उपयोगी सरकारी प्रक्रियाएँ

पाठ उद्देश्य

पुलिस, डाकघर और बैंकों जैसी सरकारी कार्यालयों की कार्य प्रणाली और प्रक्रियाओं के बारे में धाराप्रवाह हिंदी में बात कर सकते हैं।

도입 질문

- प्रथम सूचना रिपोर्ट(FIR) किसे कहते हैं?
- भारत से अंतरराष्ट्रीय डाक भेजने की प्रक्रिया क्या है?
- क्या आपने भारत में कभी बैंक बचत खाता खोला है?
- क्या आपको भारतीय सरकारी कार्यालयों में प्रशासनिक प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा है?

मुख्य विषय

प्रथम सूचना रिपोर्ट

कोई भी व्यक्ति जो किसी से किसी तरह से पीड़ित है और वह यदि पुलिस अधिकारी के समक्ष जाकर अपने साथ घटी घटना से संबंधित प्रथम सूचना की इत्तिला देता है, तो उसी को सामान्य ढंग से प्रथम सूचना रिपोर्ट कहते हैं। लेकिन वास्तव में उसकी सूचना के बाद पुलिस जब अपने अन्वेषण के दौरान उस इत्तिला से संतुष्ट होकर एक रिपोर्ट को लिखित में दर्ज़ कर लेती है, तब वह प्रथम सूचना रिपोर्ट बन जाती है। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि अन्वेषण क्या है? दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 2(h) में अन्वेषण को परिभाषित किया गया है। उसमें कहा गया है कि, "अन्वेषण के अंतर्गत वे सब कार्यवाहियों को सम्मिलित किया जाता हैं, जो दंड प्रक्रिया संहिता के अधीन पुलिस अधिकारी द्वारा या (मजिस्ट्रेट से भिन्न) किसी भी ऐसे व्यक्ति द्वारा; सूचना से संबंधित साक्ष्य को एकत्र करने के निमित्त प्राधिकृत किया जाए।"

प्रथम सूचना रिपोर्ट पुलिस को कौन दे सकता है? इस सवाल का ज़बाव यही है कि, साधारणतया वह व्यक्ति जो घटना से पीड़ित हुआ है, वह FIR दर्ज़ करा सकता है। परंतु यदि वह व्यक्ति किसी कारणवश पुलिस स्टेशन नही आ पाता तो उसकी तरफ़ से कोई अन्य व्यक्ति भी FIR दर्ज़ करा सकता है। उस व्यक्ति को लिखित में अपनी सूचना पुलिस थाने के भारसाधक अधिकारी को देनी होती है व स्वयं भी उस पर हस्ताक्षर करने होते हैं।

FIR कब देनी चाहिए? अथवा क्या FIR की कोई समय सीमा होती है?

जब कोई भी व्यक्ति पीड़ित होता है तब उसको FIR घटना के 24 घण्टों के अंदर दे देनी चाहिए। परंतु यदि किसी भी कारणवश वह 24 घण्टों के अंदर FIR नही दे पाता है तो उसके द्वारा पुलिस को परिस्थितियों से अवगत कराकर व उचित कारण बताते हुए बाद में FIR दर्ज़ करायी जा सकती है।

क्या पुलिस अधिकारी द्वारा FIR दर्ज करना अनिवार्य उपबन्ध है?

यदि कोई भी व्यक्ति जो पीड़ित है, अपनी सूचना दर्ज़ करना चाहता है, ऐसे अपराध से संबंधित जो संज्ञेय अपराध हो और घटना सच्ची हो, तब पुलिस अधिकारी का यह कर्तव्य है

कि वो उस पीड़ित व्यक्ति की FIR दर्ज़ कर के उचित क़ानूनी कार्यवाही करे। परंतु, यदि पुलिस अधिकारी को लगता है कि ये मामला संज्ञेय मामला नहीं है, झूठी घटना पर आधारित है तब पुलिस अधिकारी बाध्य नहीं है कि वो FIR दर्ज़ करे।

FIR के आवश्यक तत्त्व क्या हैं?

वास्तविक घटना : FIR किसी भी संज्ञेय अपराध से संबंधित व वास्तविक घटना पर होनी चाहिए। पुलिस अधिकारी केवल उन्ही FIR को दर्ज़ करने के लिए बाध्य है, जो संज्ञेय है और घटना वास्तविक रूप से घटित हुई हो, जिसमें पीड़ित पक्ष को हानि हुई हो। यदि कोई व्यक्ति जो सिर्फ़ पुलिस का समय व्यर्थ करने के लिए व गुमराह करके FIR दर्ज़ करना चाहेगा तब पुलिस उस व्यक्ति की FIR दर्ज़ नहीं करेगी।

दर्ज़ घटना लिखित व हस्ताक्षरित : FIR में दर्ज़ घटना लिखित व हस्ताक्षरित होनी चाहिए। वह व्यक्ति जो FIR दर्ज़ करा रहा है, यह उसका कर्तव्य है कि वह उस घटना को लिखित में पुलिस अधिकारी को दे व लिखित घटना पीड़ित व्यक्ति के द्वारा भलीभांति पढ़ा गया हो व उस घटना से वह अवगत हो तथा उसमें अपने स्वयं के हस्ताक्षर भी दर्ज़ करे।

जनरल डायरी : FIR पुलिस की जनरल डायरी में भी रिकॉर्ड होनी चाहिए। पुलिस अधिकारी FIR दर्ज़ करके उसे थाने की जनरल डायरी में भी लिखेगा।

घटना व अभियुक्तों का पूर्ण उल्लेख : FIR में घटना व अभियुक्तों का पूर्ण उल्लेख होना चाहिए। उसमें समय, दिनांक और सभी अभियुक्तों का पूर्ण उल्लेख होना चाहिए।

मुख्य बिन्दु का उज़ागर : FIR में घटना के मुख्य बिन्दुओं का उज़ागर होना चाहिए व अभियुक्तों का पूरा नाम उनके पता सहित उल्लेखित होना चाहिए।

शेखर आज एक दुर्घटना हो गई। बहुत अफ़सोस होता है। ऐसा लगता है आज के समय में कुछ लोगों को दूसरों को तकलीफ़ देने में ही सुख मिलता है।

रश्मि अरे, ऐसी क्या बात हो गई जिसकी वजह से आप इतने व्यथित नज़र आ रहे हैं। इतना विवश महसूस कर रहे हैं। कुछ खुल कर बताइए।

शेखर देखिए, वैसे तो कोई बड़ी बात नहीं है। आज मेरे घर की बाउंड्री से मेरी साईकल चोरी हो गई। वह मेरी प्यारी साईकल थी।

रश्मि ओह, तो आपने पुलिस में शिक़ायत क्यों नहीं की? आज पुलिस थाने जाकर चोरी की शिक़ायत दर्ज़ करवाइए।

शेखर इससे क्या होगा? शिक़ायत दर्ज़ करवा देने भर से कुछ लाभ तो होगा नहीं।

रश्मि अच्छा, मुझे ऐसा लगता है कि आपको प्रक्रियाओं का ज्ञान नहीं है। पुलिस को किसी भी समस्या के हल के लिए आगे बढ़ने हेतु आधार देना होता है। आप जब तक पुलिस को सूचित नहीं करेंगे तब तक पुलिस सक्रिय कैसे होगी?

शेखर आप किस प्रक्रिया का संदर्भ दे रही हैं? पुलिस के पास कितने लोग शिक़ायत दर्ज़ करवाते हैं, लेकिन क्या कभी कोई कार्यवाही होती है? पुलिस शिक़ायत दर्ज़ करके अपने कर्तव्य का समापन समझने लगती है।

रश्मि लोगों को यही तो ग़लतफ़हमी है। शायद ऐसी ही धारणाओं के कारण लोगों के बीच पुलिस की नकारात्मक छवि बनती है। लोग पुलिस के पास शिक़ायत दर्ज़ करेंगे तभी तो वह कुछ कार्यवाही करके सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम दे पाएगी। जब लोग उसे सही ढंग से बताएँगे ही नहीं तो फिर कैसे कुछ भी परिणाम पाने की आशा कर सकते हैं?

शेखर ऐसी बात है तो आप इतना ही बता दीजिए कि पुलिस को किसी घटना के संदर्भ में सक्रिय करने के लिए क्या प्रक्रिया होती है? सच कहूँ तो मुझे इन सब बातों की कोई अधिक जानकारी नहीं है।

रश्मि तो आपको ऐसा कहना चाहिए था। देखिए, जब किसी व्यक्ति को अपने साथ

वाद-विवाद / वार्तालाप

अन्याय होता हुआ महसूस हो अथवा किसी दूसरे की हरकत की वजह से कोई नुकसान हो तो जो पीड़ित व्यक्ति है वह अपने हित के रक्षार्थ पुलिस के सामने अपनी पीड़ा व्यक्त कर न्याय पाने के लिए गुहार लगा सकता है। व्यक्ति की गुहार को पुलिस वाले सन्हा कहते हैं। सन्हा के आधार पर पुलिस पीड़ित को न्याय दिलाने के उद्देश्य से क्रियाशील होती है।

शेखर सन्हा, यह सन्हा क्या है? मैंने जितना सुना है उसके अनुसार FIR नाम की कोई चीज़ करवानी होती है।

रश्मि आपने सही सुना है। FIR सन्हा का ही संपुष्ट रूप है। पीड़ित व्यक्ति पहले अपनी बात लिखित रूप में पुलिस को देता है। यह प्रदत्त कागज़ सन्हा कहलाता है। सन्हा में वर्णित घटनाओं की सत्यता की जांच के लिए पुलिस अन्वेषण या अनुसंधान का काम करती है। पुलिस अन्वेषण के बाद जब घटना की सत्यता से संतुष्ट हो जाती है तो उस सन्हा को सरकारी दस्तावेज़ों में दर्ज़ करती है। दस्तावेज़ों में दर्ज़ होने के बाद सन्हा FIR कहलाने लगता है। FIR दर्ज़ होने के बाद पुलिस अपराध से जुड़े व्यक्ति को तलाशती है ताकि पीड़ित व्यक्ति को पीड़ा के बदले न्याय प्राप्त हो सके।

शेखर अच्छा तो यह मूल आधार है, जिसके साथ भी अन्वेषण की प्रक्रिया जुड़ी हुई है।

रश्मि हाँ, अब आप ही सोचिए कि पुलिस सिर्फ़ शिक़ायत के दम पर हरदम कार्यवाही तो नहीं कर सकती, क्योंकि कई बार शिक़ायत झूठी भी होती है। उस शिक़ायत के झूठेपन का पता पुलिस को आरंभिक अनुसंधान से होता है।

शेखर बिल्कुल, यह तो पूरी संभावना है कि कई दफा झूठी शिक़ायत भी दर्ज़ कारवाई जाती होगी। अब मुझे क्या मेरे साईकिल चोरी की घटना के बारे में पुलिस को बताना चाहिए?

रश्मि हाँ अवश्य, उसी के आधार पर पुलिस FIR दर्ज़ कर अनुसंधान करते हुए चोर को पकड़ने की प्रकिया आरंभ कर सकती है। हो सकता है चोर पकड़ा भी जाए।

शेखर फिर ठीक है। आज ही पुलिस थाना जाकर चोरी की शिक़ायत दर्ज़ करवाता हूँ।

पढ़ना

अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक

अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक (ईएमएस), दस्तावेजों एवं व्यापारिक वस्तुओं को दूसरे स्थान पर भेजने के लिए एक समय-बंध एवं प्रीमियम अंतरराष्ट्रीय डाक सेवा है। यह सेवा सामाग्री की बुकिंग की प्रक्रिया से शुरू होती है। अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक वस्तुओं की बुकिंग देश के लगभग सभी विभागीय डाकघरों से किया जा सकती है। महानगरों व अन्य प्रमुख नगरों में, अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक वस्तुओं की बुकिंग देर शाम तक की जा सकती है। बुकिंग होने के बाद सामाग्री सुरक्षित चैनल के अंतर्गत अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान कर जाती है। अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक उपभोक्ताओं को बुकिंग के साथ ही इंटरनेट आधारित ट्रैक एंड ट्रेस सिस्टम के माध्यम से डाक के लिए, ऑनलाइन ट्रैक एवं ट्रैस की सुविधा प्रदान करता है। इस डाक सुविधा में सामाग्री के भार की एक सीमा भी होती है।

अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक की भार सीमा, आमतौर पर अधिकतम वजन 35 किग्रा है। जैसे भारत से कोरिया गणराज्य के लिए अधिकतम भार सीमा 35 किग्रा है। कुछ देशों के लिए वजन सीमा कम भी है। अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक सेवा के लिए डाक वस्तु का आकार किसी एक दिशा में 1.5 मीटर से अधिक लम्बाई एवं लम्बाई के अतिरिक्त किसी अन्य दिशा में सबसे बड़े दायरे का योग 3 मीटर से अधिक नहीं होना चाहिए।

इस डाक सेवा को सुरक्षित इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सामान का नुक़सान होने पर उपभोक्ता को क्षतिपूर्ति मिलने का भी नियम जुड़ा हुआ है। नियमों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक के मामले में निम्नलिखित क्षतिपूर्ति देय हैं :

- विलम्ब के लिए - ईएमएस एवं पंजीकृत डाक शुल्क के बीच का अन्तर
- वस्तु की क्षति/अन्तर्वस्तु की क्षति - 30 एसडीआर

पढ़ना

इस सेवा के अंतर्गत कुछ सामग्रियाँ निषिद्ध भी हैं। निम्नांकित वस्तुएँ अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक की सेवा के लिए स्वीकार नहीं की जाती हैं-

- कोई अशोभनीय या अश्लील छपाई, पेंटिंग, फोटोग्राफ, लिथोग्राफ, नक्काशी, किताब या कार्ड, या कोई अन्य अशोभनीय या अश्लील लेख।
- किसी भी पत्र, पोस्टकार्ड, अखबार, पैकेट या पार्सल के ऊपर या उसके आवरण पर, किसी भी अश्लील शब्द, निशान या seditious, scurrilous धमकी, या घोर आपत्तिजनक प्रकृति के डिजाइन।
- किसी भी तरह का विस्फोटक, ज्वलनशील, खतरनाक, दूषित, विषैला या अनिष्टकर पदार्थ।
- कोई ऐसा सजीव प्राणी या अन्य पदार्थ जो डाक अथवा किसी अधिकारी के माध्यम से भेजे जाने के दौरान अन्य डाक-पदार्थों के लिए हानिकारक हो अथवा उन्हे क्षति पहुँचा सकने लायक हो।
- सरकार द्वारा अधिकृत अथवा आयोजित लॉटरी के अतिरिक्त कोई अधिकार-पत्र प्रस्ताव या विज्ञापन या लॉटरी से सम्बद्ध कोई अन्य वस्तुएँ।

प्रश्न 1. अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक से सामान कहाँ भेजा जा सकता है?

प्रश्न 2. अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक में विलंब होने पर क्या होता है?

प्रश्न 3. अंतरराष्ट्रीय द्रुतगामी डाक द्वारा भेजे जाने वाले समान का आकार कैसा होना चाहिए?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

बचत खाता कैसे खोला जा सकता है?

- खाता खोलने के लिए बैंक के निर्धारित प्रारूप में ही आवेदन करना होगा। आवेदन स्वयं खाताधारक द्वारा बैंक के प्राधिकृत अधिकारी की उपस्थिति में किया जाना चाहिए और आवेदक को आवेदन पत्र के सभी स्तम्भों में सूचना भरनी होगी । हर आवेदक को इस आशय का घोषणा पत्र भी देना होगा कि उसने बचत खाते के नियमों को पढ़ा है और वह उन्हें स्वीकार करता है।
- निरक्षर जमाकर्ता, जो लिखने में असमर्थ हैं, को खाता खोलने के फॉर्म पर अपने अंगूठे का निशान लगाने के लिए स्वयं बैंक में आना होगा। बैंक और आवेदक दोनों को परिचित साक्ष्य की उपस्थिति में अंगूठे का निशान लगवा लिया जाएगा। ऐसे निरक्षर जमाकर्ता को अपना नवीनतम फोटोग्राफ बैंक को देना होगा, जिसे बैंक के परिचित व्यक्ति द्वारा अधिप्रमाणित किया जाएगा। इस प्रकार जमाकर्ता को हर बार खाते से धनराशि निकालते समय अपने अंगूठे के निशान को अधिप्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। वह बैंक के अधिकारी की उपस्थिति में अपने अंगूठे का निशान लगा सकता है।
- निरक्षर व्यक्तियों के एकल या संयुक्त बैंक खातों में चेक बुक सुविधा नहीं दी जाती।
- हर खाताधारक को खाता खोलते समय अपना अद्यतन पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ प्रस्तुत करना होगा।
- बैंक के साथ संतोषजनक तरीके से परिचालित खाता रखनेवाले वर्तमान खाताधारक बैंक को नये खाता खोलने वाले का परिचय दे सकता है। जब भी खाता खोला जाएगा और वर्तमान खाताधारक से परिचय प्राप्त किया जाएगा, तब निम्नलिखित शर्तों का पूरा करना जरूरी होगा :

  - परिचयकर्ता का खाता कम से कम छ: महीने पुराना होना चाहिए।

सुनना

- परिचयकर्ता का खाता संतोषजनक तरीके से परिचालित और सक्रिय होना चाहिए।
- परिचयकर्ता का खाता केवाईसी मानदंडों का अनुपालन करनेवाला होना चाहिए। मतलब यह कि प्रस्तावित परिचयकर्ता ने बैंक के पास रखे गए खाते के विषय में केवाईसी की आवश्यकताओं को पूरा किया हो।

▶ परिचय के तौर पर धारक के फोटोग्राफ के साथ निम्न दस्तावेज स्वीकार किए जा सकते हैं।

- वैध पासपोर्ट
- पैन कार्ड
- ड्राइविंग लाइसेंस
- मतदाता पहचान पत्र
- रक्षा पहचान पत्र
- केन्द्रीय / राज्य सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कर्मचारियों के पहचान पत्र
- ज्येष्ठ नागरिक कार्ड

▶ यदि परिचयकर्ता दिया हुआ परिचय वापस लेता है तो बैंक पूर्णत: अपने विवेकाधिकार के तहत खाते के परिचालन पर तुरंत रोक लगा सकता है, जिसके लिए जमाकर्ता को पूर्व-सूचना देना जरूरी नहीं है और खाते पर आहरित किए गए चेक लौटाने / पारित न करने तथा खाता बंद करने की कार्यवाही बैंक के लिए उचित ही होगी।

प्रश्न 1. बैंक में खाता खुलवाने के लिए कौन-से दस्तावेज़ की आवश्यकता होती है?

प्रश्न 2. बैंक में खाता खुलवाने के लिए परिचय देने वाले का खाता किस तरह का होना चाहिए?

प्रश्न 3. निरक्षर नागरिक को नए खाता के साथ क्या नहीं प्राप्त हो पाता है?

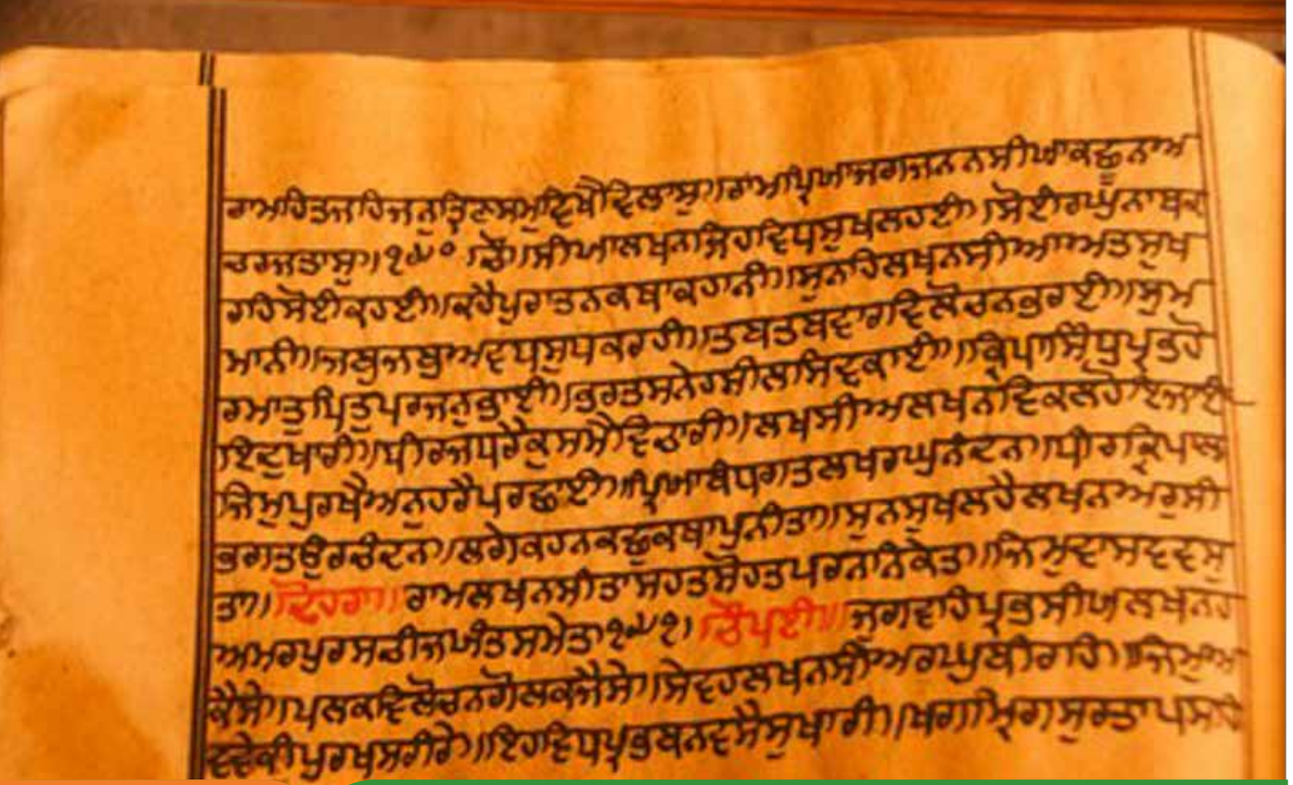

पाठ
11
सर्जनात्मक जीवन और साहित्य

पाठ उद्देश्य

हिंदी भाषा साहित्य की विभिन्न विधाओं और लेखकों पर हिंदी में चर्चा कर सकते हैं।

도입 질문

- क्या आपने कभी भारतीय साहित्य की पुस्तक को पढ़ा है?
- क्या आपका कोई पसंदीदा हिंदी लेखक है?
- भारत से साहित्य में नोबेल पुरस्कार विजेता कौन हैं?
- क्या आप भारतीय साहित्य शैली को हिन्दी में बता सकते हैं?

कार्नेलिया का गीत

जयशंकर प्रसाद

अरुण यह मधुमय देश हमारा!

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरल तामरस गर्भ विभा पर - नाच रही तरुशिखा मनोहर।

छिटका जीवन हरियाली पर - मंगल कुंकुम सारा!

लघु सुरधनु से पंख पसारे - शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए - समझ नीड़ निज प्यारा।

बरसाती आँखों के बादल - बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकरातीं अनन्त की - पाकर जहाँ किनारा।

हेम कुम्भ ले उषा सवेरे - भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर ऊँघते रहते जब - जगकर रजनी भर तारा।

प्रश्न1. कार्नेलिया का गीत कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर : प्रसाद ने कर्नेलिया का गीत कविता में भारत की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

1. **प्रकृति के चित्र द्वारा देश की सुंदरता अंकन :** प्रसाद जी ने कर्नेलिया का गीत कविता में बिम्ब दिया है कि सूर्य की लालिमा जब पेड़ों और वृषकों की चोटी पर पहुँचती है तो ऐसा

लगता है; मानो वह नाच रही हो। सारी हरियाली पर जब सूर्य की किरणों का प्रकाश पड़ता है, तब ऐसा लगता है मानो किसी ने धरती पर मंगल कुमकुम बिखेर दिया हो !

2. प्रकृति के माध्यम से देश के गौरव का अंकन : प्रसाद जी ने कविता में एक चित्र द्वारा बताया है कि यह वही देश है जिसकी ओर पक्षी भी अपने रंग-बिरंगे पंखों को फैलाकर उड़े चले आते हैं और वह सोचते हैं कि वह यही घोसला बनाएँ क्योंकि वह इसे ही अपना घर समझते हैं। इस चित्र के बहुत गहरे मायने हैं। वास्तव में, हमें कविता के पक्षी को मनुष्य का प्रतीक मानना चाहिए।

3. भारत की भारतीयता का अंकन : प्रसाद जी कविता में बतलाते हैं कि यहाँ के निवासियों के हृदय में करुणा का भाव रहता है और वह अपने दु:खों को भूल कर दूसरे लोगों को अपनाते हैं व उनकी मदद करते हैं। इस देश की इतनी विशालता है कि सागर की लहरें भी इसके तट से टकरा कर आराम पाती हैं। मतलब चारों ओर से थका-हारा मनुष्य भारत आकार सुकून प्राप्त करता है।

प्रश्न 2. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होता है?

उत्तर: कवि कविता में 'उड़ते खग' के माध्यम से कहना चाहता है कि पक्षी भी अपने रंग-बिरंगे पंखों को फैलाकर भारतवर्ष को अपना नीड़ यानी अपना घर समझकर उसकी ओर मुख किए उड़कर चले आते हैं और अपने बच्चों को वह यहीं घोंसला बनाकर जन्म देते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि जो अनजान लोग हैं, विदेशी हैं; वह भी भारत में आकर रहना चाहते हैं, क्योंकि वे यहाँ आकर शांति पाते हैं । इसी तरह से 'बरसाती आँखों के बादल' से कवि का आशय यह है कि यहाँ के लोगों के अंदर करुणा की भावना है। उनके अंदर भले ही कितने दु:ख हो लेकिन वो बाहर से आए लोगों का दु:ख सुनकर, उनको सुलझाने का प्रयास करते हैं। उन्हें सहारा देते हैं, उन्हें प्रेम देते हैं और उन्हें आशा की किरण दिखाते हैं।

प्रश्न 3. कविता की नीचे दी हुई पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

हेम कुम्भ ले उषा सवेरे - भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर ऊँघते रहते जब - जगकर रजनी भर तारा।

उत्तर: इन पंक्तियों में भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य दोनों मिलता है।

भाव-सौंदर्य की दृष्टि से देखें तो इन पंक्तियों में कवि भारत के प्रति अपने भाव को व्यंजित करते हुए कहता है कि जब सभी तारा रात भर जगकर ऊँघने लगते हैं तब सुबह रूपी स्त्री अपने सूर्य रूपी सुनहरे घड़े से आकाश रूपी कुएँ से मंगल पानी भरकर लोगों के जीवन में सुख के रूप में लुढ़का जाती है। आशय यह है कि तारे छुप गए हैं। चारों तरफ़ भोर हो चुकी है और सूर्य की सुनहरी किरणें सुख देते हुए लोगों को उठा रही हैं।यह बहुत ही मधुर दृश्य होता है।

शिल्प-सौंदर्य के दृष्टिकोण से कवि ने इस कविता में तारों और सुबह का मानवीयकरण किया है। जब-जगकर पदबंध में अनुप्रास अलंकार है। हेम-कुंभ पदबंध में रूपक अलंकार है। भाषा के स्तर पर तत्सम शब्दों व खड़ी बोली का प्रयोग किया है और पंक्तियों में गेयता का गुण विद्यमान है।

प्रश्न 4. 'जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' – इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति का तात्पर्य यह है कि जिन लोगों का कोई आश्रय नहीं होता है, भारत देश में वैसे अजनबी लोगों को भी आश्रय मिल जाता है। इस पंक्ति में कवि ने भारत की विशालता व उदारता का वर्णन किया है। उनके अनुसार भारत की संस्कृति और यहाँ के लोग बहुत विशाल हृदय के हैं। यहाँ पर पक्षियों को ही आश्रय नहीं दिया जाता बल्कि बाहर से आए अजनबी लोगों को भी प्रेमपूर्वक सहारा दिया जाता है।

प्रश्न 5. कविता में व्यक्त प्रकृत्ति-चित्रों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : प्रसाद जी ने कविता में प्रातःकालीन सौंदर्य का बहुत सुंदर वर्णन किया है। उनके अनुसार भारत देश बहुत सुंदर और प्यारा है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है। यहाँ सूर्योदय का दृश्य बड़ा मनोहारी होता है। सूर्य के प्रकाश से सरोवर में खिले कमल तथा वृक्षों का सौंदर्य मन को हर लेता है। ऐसा लगता है मानो यह प्रकाश कमल-पत्तों पर तथा वृक्षों की चोटियों पर क्रीड़ा कर रहा हो। भोर के समय सूर्य के उदित होने के कारण चारों ओर फैली लालिमा बहुत मंगलकारी होती है। वहाँ धूप की किरणें ऐसी लगती हैं मानो उस पर पवित्र कुंकुम बिखर गया हो। मलय पर्वत से शीतल वायु का सहारा पाकर अपने छोटे पंखों से उड़ने वाले पक्षी आकाश में सुंदर इंद्रधनुष का सा जादू उत्पन्न करते हैं। सूर्य सोने के कुंभ के समान आकाश में सुशोभित होता है। उसकी किरणें लोगों में आलस्य निकालकर सुख बिखेर देती हैं।

मालविका कल मैं एक छोटी पुस्तिका में जयशंकर प्रसाद की कविता कार्नेलिया का गीत पढ़ रहा था। संस्कृत शब्द की सुंदरता से बनी इस कविता को समझने में थोड़ी कठिनाई हो रही थी। क्या आपने यह कविता कभी पढ़ी है?

कार्तिक पढ़ी तो है; और मैं इतना कह सकता हूँ कि कविताओं को समझने के लिए प्रदत्त या संकेतित संदर्भ ज्यादा सहायता करते हैं। क्या आपको यह पता चला कि प्रसाद जी ने वह कविता किस संदर्भ में प्रस्तुत की है?

मालविका कविता है, काव्य पुस्तक में प्रस्तुत की होगी।

कार्तिक ऐसा नहीं है, प्रसाद जी ने कार्नेलिया का गीत कविता अपने नाटक चंद्रगुप्त में प्रस्तुत की है। कार्नेलिया सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी थी तथा युद्ध में हारने के बाद उसने सम्राट चंद्रगुप्त से मित्रता कर ली और अपनी बेटी का विवाह चंद्रगुप्त से करवा दिया। इस तरह कार्नेलिया चंद्रगुप्त की पत्नी बनकर भारत में रहने लगी। इस नाटक में एक दृश्य आता है जिसमें कार्नेलिया सिंधु नदी के किनारे ग्रीक शिविर में एक पेड़ के नीचे बैठी होती है। वहाँ वह भारत के अनुपम सौंदर्य से मन-मोहित हो उठती है। प्रसाद जी ने उसी अवस्था में उसके मुख से प्रकृति-चित्रण के बहाने भारत देश के यश को अंकित किया है।

मालविका अच्छा ! लेकिन ग्रीक की होने के बावजूद कार्नेलिया भारत का यशोगान कैसे कर लेती है? प्रसाद जी ने इस पात्र का चयन भारत की गौरवशालिता को अंकित करने के लिए क्यों किया है?

कार्तिक यही तो प्रसाद जी के वृहत चिंतन का प्रमाण है। वे कार्नेलिया का चयन करके यह दिखाते हैं कि यह देश विदेशी को भी कितने प्रेम से अपनाता है और विदेशी इस देश को किस रूप में याद रखते हैं। कार्नेलिया भारत के प्रति अपने अर्जित ज्ञान के आधार पर भारत की छवि का स्मरण करती है। प्रसाद जी उसके स्मरण के माध्यम से यह भी संदेश देते हैं कि प्रत्येक भारतवासी को अपने देश की छवि की संरक्षा करनी चाहिए और अपने देश को ठीक से जानना चाहिए।

मालविका हाँ, ये तो है कि उन्होंने एक पात्र का चयन करके एक साथ दो संदेश देने का काम साध लिया है। आप इस कविता को मेरे लिए थोड़ी आसान भाषा में व्याख्यायित कर देंगे?

कार्तिक हाँ हाँ क्यों नहीं ! वैसे कविता हमेशा अनुभूति की चीज़ होती है। सब के मन में उसकी अलग अलग तस्वीर उतरती है।

मालविका जी कविता के संदर्भ में ऐसी बहुत सारी सहायक बातें हैं। बावजूद इसके कई बार कुछ कविताओं को समझने में परेशानी होती है जिसके कई कारण होते हैं।

कार्तिक ठीक है, ठीक है। देखिए इस कविता में, प्रसाद जी के अनुसार गीत में; कार्नेलिया भारत भूमि की महिमा का बखान कर रही है। वह अभिव्यक्त करती है कि प्रात:कालीन लालिमा जब भारत की भूमि पर आती है तो यह देश और भी सुंदर हो जाता है। यहाँ आकर अनजान क्षितिज को भी सहारा मिल जाता है। इस पावन धरती पर हरियाली ही हरियाली फैली है और उन पर जब धूप पड़ती है तब लगता है मानो सौभाग्य सूचक मंगल कुमकुम हरियाली पर फैल कर पूरी धरती को पावन कर रही है।

मालविका वाह अद्भुत भावना है। सच में काफ़ी सुंदर बिम्ब बन रहा है।

कार्तिक इतना ही नहीं आगे वो कहती है, जिसमें बहुत सारे अर्थ समाविष्ट हैं; सुबह की मलय पर्वत की सुगंधित ठंडी हवा का सहारा लेते हुए इंद्रधनुष के समान रंग बिरंगे पक्षी अपने छोटे छोटे पंखों के सहारे जिस ओर मुंह करके उड़ते हुए दिखलाई देते हैं, वह यही भारत देश है। जिस तरह बादल गर्मी से तपते मुरझाए वृक्ष को वर्षा प्रदान कर नया जीवन प्रदान करते हैं उसी प्रकार भारतवासी भी करुणामय हैं। वे निराश लोगों के जीवन में आशा का संचार करते हैं। समुद्र में दूर से आई लहरों को भी भारत आकर सुकून मिलता है।

मालविका बहुत ख़ूब, प्रसाद जी ने तो प्रकृति के चित्रों के माध्यम से तो भारत की चारित्रिकता को स्पष्ट कर दिया है। वास्तव में उन्होंने अपने उकेरे गए चित्र के माध्यम से जो निहितार्थ प्रेषित किया है, बहुत कुछ वैसा ही तो है हमारा भारत देश।

कार्तिक हाँ बिल्कुल, उम्मीद है मेरी सरल शब्दों की व्याख्या से आपको कविता कुछ कुछ समझ में आई होगी।

मालविका कुछ कुछ नहीं कविता का पूरा चित्र ही हृदय में उतर गया। अब मैं इस कविता के रस का पान कर सकती हूँ।

कार्तिक मतलब मेरा प्रयास सफल रहा। आपका बहुत बहुत आभार!

रबीन्द्रनाथ ठाकुर

रबीन्द्रनाथ ठाकुर या रबीन्द्रनाथ टैगोर (बंगाली: রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর रबीन्द्रनाथ ठाकुर) (७ मई, १८६१ – ७ अगस्त, १९४१) विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य में एशिया से प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। वे बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा थे। वे एकमात्र वैसे कवि हैं जिसकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं - भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बाँग्ला'।

रबीन्द्रनाथ ठाकुर के बचपन से ही कविता, छन्द और भाषा में अद्भुत प्रतिभा का आभास लोगों को मिलने लगा था। उन्होंने पहली कविता आठ साल की उम्र में लिखी थी और सन् १८७७ में केवल सोलह साल की उम्र में उनकी प्रथम लघु-कथा प्रकाशित हुई थी। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान फूँकने वाले युगदृष्टा टैगोर के सृजन संसार में गीतांजलि, पूरबी प्रवाहिनी, शिशु भोलानाथ, महुआ, वनवाणी, परिशेष, पुनश्च, वीथिका शेषलेखा, चोखेरबाली, कणिका, नैवेद्य मायेर खेला और क्षणिका आदि रचनाएँ शामिल हैं। देश और विदेश के सारे साहित्य, दर्शन, संस्कृति आदि का आहरण करके उन्होंने अपने अन्दर समेट लिए थे। पिता के ब्रह्मसमाजी होने के कारण वे भी ब्रह्म-समाजी थे और अपनी रचनाओं व कर्म के द्वारा उन्होंने सनातन धर्म को भी आगे बढ़ाया। मनुष्य और ईश्वर के बीच जो चिर-स्थायी सम्पर्क है, उनकी रचनाओं के अन्दर वह अलग-अलग रूपों में उभर आता है। साहित्य की शायद ही ऐसी कोई शाखा हो, जिनमें उनकी रचना न हो - कविता, गान, कथा, उपन्यास, नाटक, प्रबन्ध, शिल्पकला - सभी विधाओं में उन्होंने रचना की।

रबीन्द्रनाथ टैगोर ज़्यादातर अपनी कविताओं के लिए जाने जाते हैं। गद्य में लिखी उनकी छोटी कहानियों को शायद सबसे अधिक लोकप्रिय माना जाता है। इस प्रकार इन्हें वास्तव में बंगाली भाषा के संस्करण की उत्पत्ति का श्रेय दिया जाता है। उनके काम अक्सर उनके लयबद्ध, आशावादी, और गीतात्मक प्रकृति के लिए काफ़ी उल्लेखनीय हैं। टैगोर ने इतिहास, भाषा-विज्ञान और आध्यात्मिकता से भी जुड़ी कई किताबें लिखी थीं। टैगोर के यात्रावृत्त, निबंध, और व्याख्यान कई खंडों में संकलित किए गए हैं।

वर्तमान में, टैगोर के १५० वें जन्मदिन के अवसर पर उनके कार्यों का एक संकलन बंगाली भाषा में कालानुक्रमिक क्रम (कालनुक्रोमिक रबीन्द्र रचनाबली) में प्रकाशित किया गया है। इसमें उनके प्रत्येक कार्य के सभी संस्करण शामिल हैं और लगभग अस्सी संस्करण हैं।

टैगोर ने करीब 2,230 गीतों की रचना की है। रवींद्र-संगीत बाँग्ला संस्कृति का अभिन्न अंग है। टैगोर के संगीत को उनके साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ठुमरी शैली से प्रभावित उनके गीत मानवीय भावनाओं के अलग-अलग रंग प्रस्तुत करते हैं। अलग-अलग रागों में गुरुदेव के गीत यह आभास कराते हैं मानो उनकी रचना उस रागविशेष के लिए ही थी।

गुरुदेव ने जीवन के अंतिम दिनों में चित्र भी बनाना शुरू किया था। उनके चित्रों में युग का संशय, मोह, क्लान्ति और निराशा के स्वर प्रकट हुए हैं।

उनकी काव्यरचना गीतांजलि के लिये उन्हे सन् १९१३ में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। सन् १९१५ में उन्हें राजा जॉर्ज पंचम ने 'नाइटहुड' की पदवी से सम्मानित किया, जिसे उन्होंने सन् १९१९ में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में वापस कर दिया था। गुरुदेव के नाम से रबीन्द्र नाथ टैगोर ने बांग्ला साहित्य को एक नई दिशा दी। उन्होंने बंगाली साहित्य में नए तरह के पद्य और गद्य के साथ बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग किया। इससे बंगाली साहित्य क्लासिकल संस्कृत के प्रभाव से मुक्त हो गया। जीवन के अन्तिम समय ७ अगस्त १९४१ से कुछ समय पहले इलाज के लिए जब उन्हें शान्तिनिकेतन से कोलकाता ले जाया जा रहा था तो उनकी नातिन ने उनसे कहा कि आपको मालूम है हमारे यहाँ नया पावर हाउस बन रहा है। इसके जवाब में उन्होंने कहा था कि 'हाँ, पुराना आलोक चला जाएगा और नए का आगमन होगा।'

प्रश्न 1. रबीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं से किन देशों का राष्ट्रगान बना है?

प्रश्न 2. रबीन्द्रनाथ ने अपनी रचनाओं से किस चीज को आगे बढ़ाया?

प्रश्न 3. रबीन्द्रनाथ के गीतों पर किसका प्रभाव दिखलाई पढ़ता है?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

सबके जीवन में ऐसा प्रसंग अवश्य आता है कि सत्य कहने का निश्चय होता है हृदय से किंतु मुख से सत्य निकल नहीं पाता है। कदाचित दूसरों की भावनाओं का विचार आता है मन में, दूसरों को दुःख होगा यह भय भी शब्दों को रोकता है। तो ये सत्य क्या है? जब भय रहते हुए भी कोई तथ्य बोलता है तो वो सत्य कहलाता है। वास्तव में सत्य कुछ और नहीं निर्भयता का दूसरा नाम है और निर्भय होने का कोई समय नहीं होता क्योंकि निर्भयता आत्मा का स्वभाव है। क्या प्रत्येक क्षण सत्य बोलने का क्षण नहीं होता। स्वयं विचार कीजिएगा।

समय के आरंभ से ही मनुष्य को एक प्रश्न सदा पीड़ा देता है कि वह अपने संबंधों में आधिकतम सुख और कम से कम दुःख किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के कार्य अथवा विचार स्वीकार नहीं करता, उसमें परिवर्तन करने का प्रयत्न करता है तो संघर्ष जन्म लेता है। यदि मनुष्य स्वयं अपनी अपेक्षाओं पर अंकुश रखे; अपने विचारों को परखे । किसी अन्य व्यक्ति में परिवर्तन करने का प्रयत्न न कर, स्वयं अपने भीतर परिवर्तन करने का प्रयास करे तो क्या संबंधों में संतोष प्राप्त करना इतना कठिन है? अर्थात क्या स्वीकार ही संबंध का वास्तविक अर्थ नहीं है? स्वयं विचार कीजिए।

प्रश्न 1. कैसा भय शब्दों को रोकता है?

प्रश्न 2. मनुष्य संबंधों में क्या प्राप्त करना चाहता है?

प्रश्न 3. संबंध मजबूत करने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

मेमो

पाठ
12

नागरिक जीवन में अर्थव्यवस्था

पाठ उद्देश्य

भारत की अर्थव्यवस्था, कानून और सामाजिक व्यवस्था के कुछ अवयवों को समझा सकता है।

दोहराव प्रश्न

- भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार सकल घरेलू उत्पाद(GDP) की दृष्टि से कौन-से स्थान पर है?
- भारत में 2000 रुपये का नोट कब प्रचलन में आया था?
- भारतीय संविधान में लिखित भारतीय नागरिक के मूल कर्तव्य क्या हैं?
- भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

नोटबंदी के 10 बड़े फ़ायदे

भारत में मोदी सरकार ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए 8 नवंबर 2016 को देश में नोटबंदी लागू कर दी थी, जिससे वहाँ प्रचलित ५०० और १००० रुपए के नोट प्रचलन से बाहर हो गए थे। अवैध हो गए थे। उन नोटों जगह नए २००० और ५०० रुपए के नोट देश में लाए गए । यह भ्रष्टाचार और काले धन पर सरकार द्वारा बड़ी चोट थी। उस समय यह उम्मीद जताई गयी थी कि लगभग ४-५ लाख करोड़ का कालाधन सरकार के पास वापस नहीं आएगा और स्वयं ही नष्ट हो जायेगा।

अब, जबकि RBI ने ये घोषणा कर दी है कि लगभग ९९% से कुछ ज़्यादा ही पुराने नोट वापस RBI के पास आ चुके हैं, तो विपक्ष ने सरकार पर निशाना साधते हुए कहना शुरु कर दिया है कि नोटबंदी असफल रही है। केवल १६००० करोड़ के पुराने नोट ही वापस RBI के पास नहीं आये हैं। इसके बरक्स सरकार ने भी नोटबंदी सफल होने के पक्ष में कई आंकड़े गिनाए हैं। देश में नोटबंदी सफल रही या असफल रही, ये गहरे विचार-विमर्श का मुद्दा है।

एक प्रकार से नोटबंदी सफल रही है। विपक्ष ने केवल दो आधार पर नोटबंदी के असफल होने की घोषणा करनी शुरू कर दी है। पहला आधार लगभग ९९% नोटों का बैंकिंग सिस्टम में वापस आना है। अब यहाँ सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या बैंक में केवल जमा होने से सारा कलाधन सफ़ेद हो गया? नोटबंदी से पहले RBI की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 40% बड़े नोट बाज़ार में चलन में ही नहीं थे। ये नोट भ्रष्टाचारियों के तिजोरी या बैंक-लॉकर में बंद थे। विपक्ष का दूसरा आरोप था कि सरकार और RBI ने नए नोट छापने में बहुत पैसा ख़र्च कर दिया। तो यहाँ यह पता होना चाहिए कि सरकार के कुल ७९६५ करोड़ रुपये साल २०१६-२०१७ में नए नोट छापने में ख़र्च हुए। साल २०१५-२०१६ में यह आंकड़ा ३४२० करोड़ रुपए था। मतलब सरकार ने कुल ४५४५ करोड़ रुपए ज़्यादा ख़र्च किये, नोटबंदी के कारण नए नोटों की छपाई में भी। अब अगर १६००० करोड़ रुपए जो कि सामने दिख रहा है कि सरकार को लाभ हुआ उसमें से ये पैसा घटा भी दें तो भी सरकार ११५०० करोड़ के फ़ायदे में रही है। वास्तव में, नोटबंदी से बड़े फ़ायदे हुए । उस पर अभी काफ़ी विचार-विमर्श चल रहा है। कुछ फ़ायदे

प्रत्यक्ष दिखते हैं, वे हैं-

१. सस्ता लोन:- बैंको के पास कैश का प्रचुर भण्डार हो गया है जिससे आज की तारीख में सभी क़र्ज़ों पर ब्याज की दरें काफ़ी कम हो गयी हैं और मकान ऋण पर सरकार द्वारा भारी सब्सिडी भी अलग से दी जा रही है।

२. नगर निकाय और स्थानीय निकायों की आमदनी में वृद्धि:- नोटबंदी लागू होते ही जनता ने अपने सभी तरह के टैक्स देने में पुराने नोटों का उपयोग ज़्यादा किया था। वर्षों पुराने कर्जे, बिजली और पानी के बिल लोगों ने भर दिए, जिससे स्थानीय निकायों को भारी आमदनी हुई। इससे ये भी
घाटे से फ़ायदे में आ गए।

३. सामाजिक सुरक्षा:- नोटबंदी से फैक्ट्रियों के कामगारों को जबरदस्त फ़ायदा हुआ। कई फैक्ट्री मालिकों ने २-२ महीने एडवांस सैलरी दी। पूरे देश में लगभग १ करोड़ से अधिक नए कामगार कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) और कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) में पंजीकृत हुए हैं। ये संख्या पूर्व की तुलना में लगभग ३०% अधिक है।

४. प्रत्यक्ष आयकर में २५% से ज़्यादा की वृद्धि:- नोटबंदी के बाद प्रत्यक्ष आयकर संग्रहण में २५% की वृद्धि हुई है। ९१ लाख नए टैक्स पेयर भी बढे हैं, जिसका हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा।

५. भारतीय मुद्रा का स्वदेशीकरण:- मोदी सरकार का नोटबंदी का एक बड़ा उद्देश्य यह भी था कि भारत अब अपनी मुद्रा का पूर्ण स्वदेशीकरण करे। अभी तक नोट बनाने में प्रयुक्त होने वाली सामग्री जैसे स्याही, काग़ज़ और सुरक्षा धागा तक विदेश से मँगवाना पड़ता है। इतना ही नहीं नोटों में प्रयुक्त सुरक्षा मानक भी विदेशी होते थे। यही सुरक्षा मानक विश्व के कई देशो में भी प्रचलित हैं। इसका फ़ायदा उठाकर विदेशी ख़ुफ़िया एजेन्सियाँ भारत की नकली मुद्रा छापकर भारत को भारी आर्थिक क्षति पहुँचा रही थीं। नए सुरक्षा मानक भी भारत की ज़रूरतों के अनुसार हैं।

६. नकली नोटों पर भारी चोट:- कुछ वर्षों पहले आई RBI की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में चलने वाले बड़े नोटों में लगभग २०%-२५% नोट नक़ली थी। विदेशी ख़ुफ़िया एजेन्सियां भारत में अधिक से अधिक नक़ली नोट खपाने की तैयारी में थी। सरकार द्वारा अचानक नोटबंदी की घोषणा करने से उनके सारे नकली नोट रद्दी हो गए तथा अब इन्हें अपना पूरा नया सेटअप बैठना होगा।

७. प्रतिलिपि मुद्रा:- नोटबंदी से एक अहम् और बहुत बड़ा खुलासा हो सकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रतिलिपि मुद्रा का पता चलना। प्रतिलिपि मुद्रा या नोट, वह नोट होते हैं जिनका सीरियल नंबर एक ही होता है। मतलब एक ५०० के नोट का सीरियल नंबर १२३४५ है, तो दूसरे वाले नोट का भी सीरियल नंबर १२३४५ ही है। इससे ये नोट नकली की श्रेणी में नहीं आते थे और कोई बैंक या सरकारी एजेंसी इसको पकड़ भी नहीं पाती थी।

८. फर्जी कंपनियों की बंदी:- 2,10,000 से ज़्यादा शैल (फर्जी) कम्पनियां नोटबंदी के दौरान पकड़ी गयी हैं। इन कंपनियों का मुख्य काम काले धन को सफ़ेद करना था। इन कंपनियों में कुछ भी उत्पादन या किसी तरह का व्यापार नहीं होता था।

९. देशद्रोही गतिविधियों में भारी कमी:- कश्मीर की पत्थरबाज़ी, हवाला कारोबार, ड्रग्स का कारोबार, नकली नोट, उत्तर पूर्व का आतंकवाद और नक्सली हिंसा की गतिविधियों पर लगाम लगी है और इन घटनाओं में भारी कमी आयी है। कश्मीर के अलगाववादी नेताओं के ठिकानों पर रोज छापे पड़ रहे हैं. इनकी सारी संदिग्ध गतिविधियों के लिए काला धन जिन-जिन आर्थिक रास्तों से आता है, भारत सरकार को नोटबंदी के दौरान लगभग सभी रास्तों और उनसे जुड़े लोगों का पता चल गया।

१०. देश के विकास के लिए समुचित धन का इंतजाम:- देश की अर्थव्यवस्था और बैंकिंग सिस्टम में पैसा आने पर सरकार को अपनी बड़ी योजनाओं के लिए धन जुटाने में अब ज़्यादा मुश्किल नहीं होगी। बुलेट ट्रेन, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, स्मार्ट सिटी, सागरमाला प्रोजेक्ट और नदी जोड़ो जैसी महान परियोजनाओं के लिए धन की कमी महसूस नहीं होगी।

श्वेता भारत में नोटबंदी का फ़ैसला प्रधानमंत्री के द्वारा लिया गया। इस फ़ैसले से आम जनता को भारी मुसीबत का सामना करना पड़ा। इतने बड़े फ़ैसले का क्या फ़ायदा हुआ जब जनता को इतनी मुसीबत का सामना करना पड़ा?

कौशल सामान्य मानवीय धरातल पर आपका सोचना बिल्कुल सही है। नोटबंदी के फ़ैसले को जनता से अलग हटकर देश की अर्थव्यवस्था से जोड़कर देखेंगी तो बहुत कुछ समझ में आएगा। नोटबंदी से बहुत दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे।

श्वेता आप किस तरह की बात करते हैं! नोटबंदी के फ़ैसले से कितने लोगों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा क्योंकि उनके पास दवा खरीदने के लिए नए नोट नहीं थे। उन्होंने पुराने नोट बदलवाने के चक्कर में कतार में खड़े खड़े ही अपनी अंतिम साँसे लीं। रोज़ या दिहाड़ी पर काम करने वालों के रोजगार खत्म हो गए क्योंकि उन्हें पैसे देने वालों के पास पुराने नोट थे। ऐसे में उन्हें अपने परिवार का पेट पालना मुश्किल था। इन सब के अलावे भी बहुत सारे कष्ट हुए हैं।

कौशल जी, सहमत हूँ। मैंने तो आपसे कहा ही कि सामान्य मानवीय धरातल पर आपका सोचना बिलकुल सही है। सरकार ने बिना मुक्कमल तैयारी के बहुत बड़ा फ़ैसला ले लिया। उस फ़ैसले के पीछे व्यवहारिक योजना का अभाव था; लेकिन यह भी नहीं कहा जा सकता कि नोटबंदी के फ़ैसले से सिर्फ़ कष्ट या नुकसान हुआ है।

श्वेता मुझे तो वह फ़ैसला सरकार द्वारा ख़ुद की कमाई योजना का हिस्सा लगता है। नए नोट छापने की प्रक्रियाओं से होने वाले लाभों से भरा फ़ैसला।

कौशल ऐसा हो सकता है। आपका यह सोचना ग़लत नहीं है, क्योंकि देश में भ्रष्टाचारियों की कमी नहीं है। बावजूद इसके मैं तो इतना कहूँगा कि नोटबंदी का फ़ैसला दूरगामी फ़ायदेमंद है। इस फ़ैसले से देश के भीतर छिपा छिपा कर रखे हुए बेहिसाब नोट बाहर आएंगे। ख़ुद RBI का भी कहना है कि अब तक जारी किए गए नोटों में से सिर्फ़ 40 प्रतिशत नोट ही बाज़ार में हैं। इसके अतिरिक्त टेररिस्ट, नक्सल, दहशतगर्द जैसी क्रियाओं की फाइनेंसिंग पर भी अंकुश लगेगा। फर्जी नोट बेकार हो जाएंगे। बैंकिंग प्रणाली ज्यादा मजबूत होगी, सरकारी कोष में धन संग्रहित होगा और लोगों को अधिक सुविधाएं मिलेंगी।

श्वेता देखिए, आपके जो विचार हैं वो सभी मुमकिन हैं ; लेकिन सभी के साथ बहुत सारे आयाम जुड़े हुए हैं। आम जनता को उन सभी पहलुओं से कुछ भी लेना देना नहीं होता। उसे अपने रोज़मर्रा की जिंदगी को सहूलियत देनी होती है। इस फ़ैसले से अगर जमा रखे गए नोट और सारे फ़र्जी नोट बेकार हो जाएंगे तो साफ है कि दूर-दराज के इलाकों में रहने वाली आबादी का जो बैंकों तक नहीं पहुंचेगी उसके पास रखी जमा पूंजी बेकार हो जाएगी और उसे अपने रोज़मर्रा के जीवन में परेशानी आएगी। क्या यह पहलू नहीं है?

कौशल बिल्कुल है। सरकार के फ़ैसले में व्यवहारिक योजना की कमी तो है ही, पर पूरी तरह से ग़लत नहीं है।

श्वेता आप यह भी सोचिए कि क्या नोटबंदी के फ़ैसले से निवेश या व्यापार में विस्तार होगा? शायद नहीं क्योंकि देश का हर मध्यम वर्गीय कारोबारी नोटबंदी से हुए उथल-पुथल से लगातार जूझ रहे हैं। उन्हें यह भय लगा हुआ है कि उनकी अर्जित संपति पर अनिश्चित, अयाचित हमला हो सकता है। इसलिए वे सामान्य व्यापार करने में भी झिझक रहे हैं। भारत का बाज़ार सदा नगदी का बाज़ार रहा है। यहाँ के लोग जमा पूंजी के माध्यम से बाज़ार की मांग और आपूर्ति के अनुसार काम करते आए हैं। सरकार के इस निर्णय ने इस पूरे क्षेत्र को पंगु बना दिया है। अति ज़रूरी चीजों के अलावा सभी उत्पादों की मांग गिरेगी क्योंकि इनका ज़्यादातर हिस्सा नगदी पर ही निर्भर रहा है। सामान्य वर्ग से लेकर निचले वर्ग तक से चीजों की मांग गिरेगी क्योंकि यह तबके कई महीनों तक नगदी की समस्या से जूझेगा। अलावे इसके यह तबके आगामी कई महीनों तक नोट बदलवाने या अपनी पूंजी निकालने के लिए लाइन में अपना समय और ऊर्जा निवेश करेंगे। गिरती मांग, रुका हुआ उत्पादन और व्यापार को सुचारु ढंग से चलाने के लिए लगने वाली असल अर्थ की कमी जैसे सभी कारक मिलकर देश की अर्थव्यवस्था में मंदी

लाएँगे।

कौशल हाँ, इन सभी पहलूओं पर सरकार का चिंतन कमजोर नज़र तो आता ही है। लेकिन क्या कुछ अच्छा करने के लिए हमें नई योजना पर काम नहीं करना चाहिए? आपने जिन पहलुओं की चर्चा की है वो सभी एक सामान्य जीवन से जुड़े हुए पहलू हैं । उनमें आतंकवाद, फ़र्जी मुद्रा, जमाखोरी आदि जैसी समस्याओं का पक्ष नज़र नहीं आता।

श्वेता हमें निश्चय ही नई योजनाओं पर काम करना चाहिए। लेकिन पूरे देश के लिए किए जाने वाले फ़ैसले या योजना का निर्णय करते समय, उसके लक्ष्य को पाने के लिए ऐसी व्यवस्था नहीं होनी चाहिए जिससे सामाजिक नुकसान या कष्ट कम और नतीजे ज्यादा टिकाऊ साबित हों?

कौशल बिल्कुल ऐसा होना चाहिए। मैं तो ख़ुद यह मानता हूँ कि इस फ़ैसले के पीछे सरकार की व्यवहारिक योजना बहुत कमजोर रही है। उससे आम जनजीवन पर गहरा असर पड़ा है।

श्वेता जी हाँ, काफी गहरा असर पड़ा है। वैसे मुझे लगता है कि नोटबंदी के फ़ैसले को हम अलग अलग नज़रिये से विश्लेषित कर रहे हैं, जिसके कारण मेरा चिंतन देश के बरक्स आम जनता की ओर झुक गया है और आपका विश्लेषण देशहित के सापेक्ष हो गया है।

कौशल मुझे भी यही लग रहा है। परंतु हम नोटबंदी जैसे बड़े और अहम फ़ैसले को सिर्फ़ एक पक्ष से नहीं देख सकते हैं। हर पहलू पर काफी गंभीरता से विचार करना होता है।

श्वेता आप सही कह रहे हैं। अब इस निर्णय का असल आउटपुट तो कुछ समय के बाद ही समझ में आएगा।

कौशल हाँ ,ये तो है। थोड़ा समय गुज़रने देना चाहिए; तभी हमें हक़ीक़त समझ में आएगी।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब** में

व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

भारत का संविधान

भाग चार क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयास और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

"भारत का संविधान" की उद्देशिका में लिखा है-

हम, भारत के लोग, भारत को एक [संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को : सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता- प्राप्त कराने के लिए – तथा उन सब में – व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए – दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर 1949 ई॰ को एतद द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

पढ़ना

वहीं, भारत के नागरिकों के मूल कर्तव्य को बताते हुए संविधान का भाग 4, अनुच्छेद 51 क निरूपित करता है कि, भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे:

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परीक्षण करे।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयभाव रखे।

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।

(झ) सार्वजनिक संपति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता पिता या संरक्षक है, छह से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

प्रश्न 1. भारत के नागरिकों को उनके मूल कर्तव्यों को स्पष्ट करने की चर्चा 'भारत का संविधान' में कहाँ है?

प्रश्न 2. 'भारत का संविधान' कितने वर्ष तक के शिशुओं को शिक्षा का प्रावधान करता है?

प्रश्न 3. भारत के नागरिकों को 'भारत का संविधान' किनकी स्वतंत्रता देता है?

सुनना

[1-3] ध्यान से सुनिए और प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का संविधान समिति निर्माण पर भाषण

विधान बनाने का जो काम बाकी है उसे जल्द से जल्द पूरा करना चाहिए। ताकि हम अपने बनाए विधान के मातहत रहने लग जाएँ और काम शुरू कर दें। हम विधान को बनाने में सब की सहायता चाहते हैं। हम उसे ऐसा सुंदर बनाना चाहते हैं जिसमें जन-मत प्रधान रहे और सेवा तथा जनता की उन्नति उद्देश्य रहे। और सबको इस बात का विश्वास रहे कि वे अपने धर्म, संस्कृति, भाषा और विचार सबको सुरक्षित रख सकते हैं। उनकी तरक्की में किसी किस्म की बाधा उत्पन्न नहीं हो सकती। इसको बनाने में विदेशों का तजुर्बा और विधान से हम लाभ उठाएंगे। अपनी संस्कृति और परिस्थिति से जो कुछ मिल सकता है उसे लेंगे। जहां जरूरत होगी आज की प्रचलित सीमाओं को चाहे वह शाषण पद्धति की हों या सुविधाओं की लांघ कर नई सीमाएं बनाएँगे। हमारा उद्देश्य है कि हम ऐसा विधान बनाएँ जिसमें जनमत की प्रधानता रहे और व्यक्ति को केवल स्वतंत्रता ही न मिले वो स्वतंत्रता लोक हित के लिए साधन भी बन जाए। आज तक इस देश के लोग देश को आज़ाद करने के लिए संकल्प किया करते थे और अपनी कार्य-सिद्धि के लिए त्याग और बलिदान की प्रतिज्ञा किया करते थे। आज दूसरे प्रकार का संकल्प और प्रतिज्ञा का दिन आया है। हममें से कोई ऐसा न समझे कि त्याग का दिन बीत चुका और भोग का समय आ गया। जो देश को उन्नत करने का महान कार्य हमारे सामने है उसमें हमने आज तक जितने त्याग की भावना दिखलाई है उसके कहीं अधिक दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ तत्परता, त्याग और कार्यक्षमता दिखलाने का समय है। इसलिए एक बार फिर से भारत की सेवा में लग जाने का संकल्प करना है और ईश्वर से प्रार्थना करनी है कि जिस तरह उसने हमारे पहले संकल्प को पूरा किया, उसी तरह से यह इसको भी पूरा करे।

प्रश्न 1. वक्ता के अनुसार ईश्वर से क्या करना है?

प्रश्न 2. वक्ता के अनुसार विधान कैसे बनेगा?

प्रश्न 3. वक्ता कैसा विधान बनाना चाहता है?

परिशिष्ट

१. श्रव्य पाठ

२. शब्दावली

पाठ 01

संस्कार

स्वामी विवेकानन्द जी का जगप्रसिद्ध शिकागो भाषण हिंदी में

धरती पर सबसे प्राचीन सन्यासी-समाज की ओर से मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। सभी धर्मों की जन्मभूमि भारत एवं सभी वर्ग और समुदाय के लाखों-करोड़ो हिंदुओं की ओर से मैं पुनः आपका धन्यवाद करता हूँ।

मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्ताओं को भी है जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ़ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूँ जिसने इस धरती के सभी देशों और धर्मों के परेशान और सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इजराइलियों की पवित्र स्मृतियाँ सँजो कर रखी हैं जिनके धर्मस्थलों को रोमन हमलावरों ने तोड़ तोड़ कर खंडहर बना दिया था।

पाठ 02

स्वास्थ्य और मोटापा

योग दिवस

आज की परिस्थिति में आपका निरोगी रहना बहुत आवश्यक है। उसमें योग और प्राणायाम आपकी ज़रूर मदद करेंगे । अपनी इम्यूनिटी के लिए योग करिए। अपनी एनर्जी बढ़ाने के लिए योग करिए। अपने आत्मविश्वास के लिए योग करिए। अपने आत्मबल के लिए योग करिए। अपना उत्साह बढ़ाने के लिए योग करिए और अपने मन की शांति के लिए भी योग करिए। साथियों, बीते पाँच वर्षों में पूरा विश्व योग से जुड़ा है। योग ने पूरे विश्व को जोड़ा है। अब इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को हमें अपने परिवार के स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह समर्पित करना है। हम ख़ुद योग करें और दूसरों को भी प्रेरित करें ताकि हमारा परिवार और हमारा समाज स्वस्थ रहे।

पाठ 03

कोविड-19

नमस्कार, मैं हूँ अमिताभ बच्चन। देखिए हम सब मिलकर नोवल कोरोना वायरस या कोविड 19 को फैलने से रोक सकते हैं। इसके लिए हमें बचाव के कुछ तरीके अपनाने होंगे। खाँसते या छींकते समय हमेशा अपने मुँह को रुमाल से या टिश्यू से ढँकें। इस्तेमाल किए हुए टिश्यू को तुरंत ढक्कनदार कचरे के डिब्बे में डाल दें। अपनी आँख, नाक और मुँह को अपने हाथ से न छूएं। अपने हाथों को समय-समय पर साबुन पानी से लगभग 20 सेकंड तक धोएं। भीड़-भाड़ वाली जगह पर जाने से बचें। अगर आपको खाँसी, बुख़ार है या सांस लेने में तकलीफ़ हो रही है तो आप दूसरों से दूरी बनाए रखिए। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत अपने डॉक्टर से सलाह लें। अस्पताल में आप अपने मुँह पर मास्क या रुमाल ज़रूर रखें। अधिक जानकारी से लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की एक हेल्प लाइन शून्य एक एक दो तीन नौ सात आठ शून्य चार छ: (01123978046) पर संपर्क कीजिए। अपनी सुरक्षा के लिए हमारी मदद कीजिए।

पाठ 04

मंगलयान मिशन

हौसला बढ़ाते डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के 20 अनमोल विचर

भारत रत्न डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम, एक ऐसी महान हस्ती हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश सेवा में लगा दिया। जहाँ बतौर वैज्ञानिक उन्होंने भारत को मिसाइल टेक्नॉलॉजी में विश्व स्तरीय बना दिया वहीं एक राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने करोड़ों हिंदुस्तानियों को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की प्रेरणा दी। आइए आज हम इस महान देशभक्त, लेखक और वैज्ञानिक के अनमोल विचारों को जानते हैं।

- अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो ।
- इससे पहले कि सपने सच हो आपको सपने देखने होंगे।
- ईश्वर की संतान के रूप में, मैं मुझे होने वाली किसी भी चीज़ से बड़ा हूँ।
- मैं इस चीज़ को स्वीकार करने के लिए तैयार था कि मैं कुछ चीज़ें नहीं बदल सकता।
- महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।
- अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि ये समाज के तीन प्रमुख सदस्य कर सकते हैं। पिता, माता और गुरु ।
- आइए हम अपने आज का बलिदान कर दें ताकि हमारे बच्चों का कल बेहतर हो सके।

पाठ 05

भारतीय भाषाएँ

रेग्युलर मांपे जाना वाला SRS दिखाता है कि न सिर्फ़ एक साथ पूरे देश के TFR में सुधार हो रहा है बल्कि ये सुधार उन राज्यों में भी हो रहा है जहाँ TFR ज़्यादा है। 2017 की रिपोर्ट के अनुसार 1971 से लेकर 1981 के बीच TFR 5.2 से घट कर 4.5 और 1991 से लेकर 2017 के बीच 3.6 से घटकर 2.2 हो गया है। SRS ने ये भी बताया कि शहरी और ग्रामीण इलाक़ों में TFR बदल जाता है। यह महिलाओं की साक्षरता पर भी निर्भर करता है। निरक्षर महिलाएँ औसतन 2.9 बच्चों को जन्म देती हैं। वहीं साक्षर महिलाएँ औसतन 2.1 बच्चे को जन्म देती हैं। डेटा से पता चला है कि कक्षा 10 पास महिलाएँ औसतन 2 बच्चों को जन्म देती है जबकि 12वीं पास महिला औसतन 1.8 बच्चों को जन्म देती है। वहीं TFR रेट ग्रेजुएट और अन्य पढ़ी लिखी महिलाओं के लिए 1.4 है। इसी के साथ ही शहरी और ग्रामीण इलाकों का TRF रेट भी अलग अलग है। 1971 से लेकर 2017 तक शहरी महिलाओं का TFR 4.1 से घटकर 1.7 हो गया जबकि ग्रामीण महिलाओं का TFR 5.4 से घटकर 2.4 हो गया।

पाठ 06

पुरातन भारतीय मानसिकता

आज़ादी मिलने के बाद आधी रात को नेहरू ने दिया था ऐतिहासिक भाषण

हम इन सब बातों को कोई जादू से दूर नहीं कर सकते ; लेकिन फिर भी हमारा पहला फ़र्ज़ है कि इन सवालों को लेकर जनता को आराम पहुँचाएँ और पूरे तौर से भी इन सवालों को हल करने की कोशिश करें। लेकिन इसके पहले एक और सवाल है और वह यह कि सारे हमारे देश में अमन हो, शांति हो, आपस के लड़ाई झगड़े बिल्कुल बंद हों; क्योंकि जब तक लड़ाई झगड़े होते हैं उस वक्त तक कोई और काम माकूल तरीके से नहीं हो सकता। तो यह पहली मेरी आपसे दरख़्वास्त है और आज जो नई गवर्नमेंट बनी है उसने भी पहली दरख़्वास्त हिंदुस्तान से की है जो आप शायद कल सुबह के अखबारों में पढ़ें – वह यह है कि यह जो आपस की नाइत्तिफ़ाकी, आपस के झगड़े हैं वे बंद किए जाएँ। क्योंकि आखिर अगर नाइत्तिफ़ाकी है भी तो किस तरह से वो हल होगी इन झगड़ों से और मारपीट से। आपने देख लिया कि एक जगह झगड़ा होता है तो दूसरी जगह उसका बदला होता है। उसका कोई अंत नहीं है और ये बातें कुछ आज़ाद लोगों को ज़ेब नहीं देती है। ये गुलामी की बातें हैं। हमने कहा कि हम प्रजातंत्रवाद इस देश में चाहते हैं। प्रजातंत्रवाद में फिर डेमोक्रेसी में इस तरह की बातें नहीं होती हैं। हमें जो सवाल हों, हमें आपस में सलाह मशविरा करके एक दूसरे का ख्याल करके उनको हल करना है और उन पर अमल करना है, अपने फ़ैसले पर। इसलिए पहली बात तो यही है कि हमें फ़ौरन अपने इस किस्म के सारे झगड़े बंद करने हैं।

पाठ 07

दोक्दो का मुद्दा

प्रधानमंत्री मोदी और साउथ कोरिया के राष्ट्रपति ने नॉएडा में सैमसंग के मोबाइल प्लांट का किया उद्घाटन

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हमें बहुत कम दर पर इंटरनेट डाटा उपलब्ध है। देश की एक लाख से अधिक ग्राम पंचायतों तक फाइबर नेटवर्क पहुँच चुका है। ये सारी बातें देश में हो रही डिजिटल क्रान्ति का संकेत है। उन्होंने यह भी कहा कि GEM यानि गवर्नमेंट ई मार्केट के जरिए सरकार अब सीधे उत्पादकों से सामान की भी खरीदादारी कर रही है। इससे छोटे और लघु उद्योगों को भी फ़ायदा हुआ है तो सरकारी खरीददारी में भी पारदर्शिता बढ़ी है। बिज़ली, पानी का बिल भरना हो; स्कूल, कॉलेज में एडमिशन हो; पीएफ हो या फिर पेंशन लगभग हर सुविधा ऑन लाइन मिल रही है। देश भर में फैले लगभग तीन लाख कॉमन सर्विस सेंटर गाँव वालों की सेवा में काम कर रहे हैं। जब बारी दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जे-इन की आई तो उन्होंने भारत दक्षिण कोरिया के बीच दशकों के संबंधों का उल्लेख करते हुए देश के डिजिटल क्रान्ति की सराहना की। उन्होंने कहा कि कोरिया और भारत एक साथ मिलकर तरक़्क़ी के रास्ते खोल सकते हैं। सैमसंग कंपनी नोएडा में अपनी मैनुफेक्चर यूनिट का विस्तार कर रही है। इसके लिए कंपनी ने 4915 करोड़ का निवेश किया है। सैमसंग के इस निवेश से मेक इन इंडिया को भी गति मिलेगी। इस यूनिट के जरिए सैमसंग मोबाइल उत्पादन को दोगुणा करने पर विचार कर रहा है। अभी सैमसंग देश में लगभग 7 करोड़ स्मार्ट फोन बनाता है जोकि 2020 तक 12 करोड़ हो सकता है। इस मोबाइल मैनुफेक्चर यूनिट से जहाँ एक तरफ़ देश में युवाओं को रोज़गार मिलेगा तो दूसरी तरफ़ मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया कैम्पेन को भी बढ़ावा मिलेगा।

पाठ 08

रोज़गार और बेरोजगारी

तीन तलाक़ देने पर क्या होगा?

अगर कोई मुस्लिम पति अपनी पत्नी को एक ही जगह में एक साथ तीन तलाक़ देता है; यानी यह कहता है या लिखता है कि मैं तुझे तीन तलाक़ देता हूँ या तुझे तलाक़, तलाक़, तलाक़; तो इसे कहा जाता है ट्रीपल तलाक़। ट्रीपल तलाक़ होते ही उन दोनों की शादी खत्म हो जाती है और उन दोनों के बीच में पति पत्नी वाला कोई भी रिश्ता नहीं रह जाता है। एक, दो और तीन तलाक़ में फर्क यह है कि अगर कोई पति अपनी पत्नी को एक या दो तलाक़ देता है तो उसके बाद वो दोनों फिर से शादी कर सकते हैं। लेकिन अगर एक पति अपनी पत्नी को तीन तलाक़ दे देता है तो उसके बाद वे दोनों आपस में शादी नहीं कर सकते। तीन तलाक़ के बाद वे दोनों पूरी तरह से आज़ाद हो जाते हैं। उनमें से कोई भी कहीं भी किसी से भी शादी कर सकता है। तीन तलाक़ के बाद अगर पत्नी ने किसी दूसरे आदमी से शादी कर ली और उसके साथ रहने लगी और कभी उस दूसरे पति ने उसे तलाक़ दे दिया या उस दूसरे पति की डेथ हो जाती है, तो उसके बाद वह उस पहले आदमी से जो उसका पति था उससे शादी कर सकती है। पहले पति से तीन तलाक़ मिलने के बाद उसने जो दूसरे आदमी से शादी की थी इसको कहा जाता है हलाला। तीन तलाक़ का हलाला से डायरेक्ट कनैक्शन है ; क्योंकि अगर एक पति अपनी पत्नी को तीन तलाक़ दे देता है तो उसके बाद वह उससे फिर से शादी नहीं कर सकता। लेकिन अगर वो औरत किसी दूसरे आदमी से शादी कर ले, उसके साथ रहने लगे और वो आदमी उसको कभी तलाक़ दे दे या उसकी डेथ हो जाए तो उसके बाद वह पहले वाले पति से शादी कर सकती है। 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने तीन तलाक़ को इनवैलिड क़रार कर दिया था कि अगर कोई पति अपनी पत्नी को एक साथ तीन तलाक़ देता है तो वह इनवैलिड है ; उस तलाक़ को नहीं माना जाएगा। अब इस पर कानून भी बन चुका है।

पाठ 09

भारतीय साज

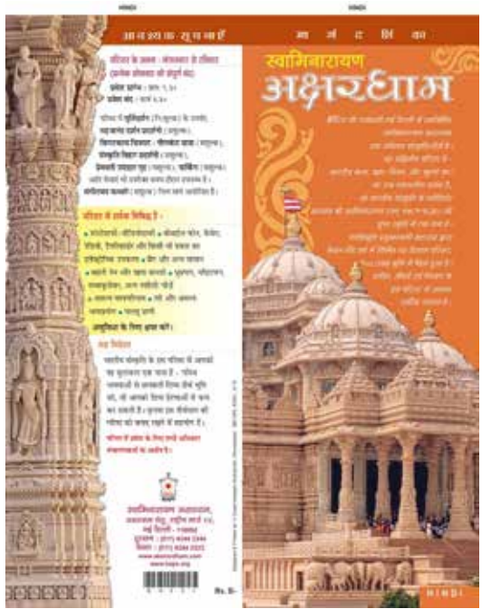

पाठ 10

प्रथम सूचना रिपोर्ट

बचत खाता कैसे खोला जा सकता है

▹ खाता खोलने के लिए बैंक के निर्धारित प्रारूप में ही आवेदन करना होगा। आवेदन स्वयं खाताधारक द्वारा बैंक के प्राधिकृत अधिकारी की उपस्थिति में किया जाना चाहिए और आवेदक को आवेदनपत्र के सभी स्तम्भों में सूचना भरनी होगी। हर आवेदक को इस आशय का घोषणापत्र देना होगा कि उसने बचत खाते के नियमों को पढा है और वह उन्हें स्वीकार करता है।

▹ निरक्षर जमाकर्ता, जो लिखने में असमर्थ है, को खाता खोलने के फॉर्म पर अपने अंगूठे का निशान लगाने के लिए स्वयं बैंक में आना होगा। बैंक और आवेदक दोनों को परिचित साक्ष्य की उपस्थिति में अंगूठे का निशान लगवा लिया जाएगा। ऐसे निरक्षर जमाकर्ता को अपना नवीनतम फोटोग्राफ बैंक को देना होगा, जिसे बैंक को परिचित व्यक्ति द्वारा अधिप्रमाणित किया जाएगा। इस प्रकार जमाकर्ता को हर बार खाते से धनराशि निकालते समय अपने अंगूठे के निशान को अधिप्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। वह बैंक के अधिकारी की उपस्थिति में अपने अंगूठे का निशान लगा सकता है।

▹ निरक्षर व्यक्तियों के एकल या संयुक्त बैंक खातों में चेक बुक सुविधा नहीं दी जाती।

▹ हर खाताधारक को खाता खोलते समय अपना अद्यतन पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ प्रस्तुत करना होगा।

▹ बैंक के साथ संतोषजनक तरीके से परिचालित खाता रखनेवाले वर्तमान खाताधारक बैंक को नये खाते का परिचय दे सकता है। जब भी बचत खाता खोला जाएगा और वर्तमान खाताधारक से परिचय प्राप्त किया जाएगा, तब निम्नलिखित शर्तों का पूरा करना ज़रूरी होगा :

- परिचयकर्ता का खाता कम से कम छ: महीने पुराना होना चाहिए और
- परिचयकर्ता का खाता संतोषजनक तरीके से परिचालित और सक्रिय होना चाहिए
- परिचयकर्ता का खाता केवायसी मानदंडों का अनुपालन करने वाला हो। मतलब यह कि प्रस्तावित परिचयकर्ता के बैक के पास रखे गए खाते के विषय में केवायसी की आवश्यकताओं को पूरा किया हो।

▹ परिचय के तौर पर धारक के फोटोग्राफ के साथ निम्न दस्तावेज भी स्वीकार किए जा सकते हैं:
- वैध पासपोर्ट
- पैन कार्ड
- ड्राइविंग लाइसेंस
- मतदाता पहचान पत्र
- रक्षा पहचान पत्र
- केन्द्रीय / राज्य सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कर्मचारियों के पहचान पत्र
- ज्येष्ठ नागरिक कार्ड.

▹ यदि परिचयकर्ता दिया हुआ परिचय वापस लेता है तो बैंक पूर्णत: अपने विवेकाधिकार के तहत खाते के परिचालन पर तुरंत रोक लगा सकता है, जिसके लिए जमाकर्ता को पूर्वसूचना देना ज़रूरी नहीं है; और खाते पर आहरित किए गए चेक लौटाने / पारित न करने तथा खाता बंद करने की कार्यवाही बैंक के लिए उचित ही होगी।

पाठ 11

साहित्य माध्यम और जीवन

टीवी महाभारत

सबके जीवन में ऐसा प्रसंग अवश्य आता है जब हृदय में सत्य कहने का निश्चय होता है, किंतु मुख से सत्य निकल नहीं पाता है। कदाचित् दूसरों की भावनाओं का विचार आता है मन में। दूसरों को दुःख होगा, यह भय भी शब्दों को रोकता है। तो ये सत्य क्या है? जब भय रहते हुए भी कोई तथ्य बोलता है तो वो सत्य कहलाता है। वास्तव में सत्य कुछ और नहीं, निर्भयता का ही दूसरा नाम है ; और निर्भय होने का कोई समय नहीं होता, क्योंकि निर्भयता आत्मा का स्वभाव है। क्या प्रत्येक क्षण सत्य बोलने का क्षण नहीं होता; स्वयं विचार कीजिएगा।

समय के आरंभ से ही मनुष्य को एक प्रश्न सदा पीड़ा देता है कि वह अपने संबंधों में अधिकतम सुख और कम से कम दुःख किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के कार्य अथवा विचार स्वीकार नहीं करता, उसमें परिवर्तन करने का प्रयत्न करता है तो संघर्ष जन्म लेता है। यदि मनुष्य स्वयं अपनी अपेक्षाओं पर अंकुश रखे; अपने विचारों को परखे , किसी अन्य व्यक्ति में परिवर्तन करने का प्रयत्न न कर, स्वयं अपने भीतर परिवर्तन करने का प्रयास करे तो क्या संबंधों में संतोष प्राप्त करना इतना कठिन है? अर्थात क्या स्वीकार ही संबंध का वास्तविक अर्थ नहीं है? स्वयं विचार कीजिए।

पाठ 12

नोटबंदी

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का संविधान समिति निर्माण पर भाषण

विधान बनाने का जो काम बाकी है उसे जल्द से जल्द पूरा करना चाहिए। ताकि हम अपने बनाए विधान के मातहत रहने लग जाएँ और काम शुरु कर दें। हम विधान को बनाने में सब की सहायता चाहते हैं। हम उसे ऐसा सुंदर बनाना चाहते हैं जिसमें जन-मत प्रधान रहे और सेवा तथा जनता की उन्नति उद्देश्य रहे। और सबको इस बात का विश्वास रहे कि वे अपने धर्म, संस्कृति, भाषा और विचार सबको सुरक्षित रख सकते हैं। उनकी तरक्की में किसी किस्म की बाधा उत्पन्न नहीं हो सकती। इसको बनाने में विदेशों का तजुर्बा और विधान से हम लाभ उठाएंगे। अपनी संस्कृति और परिस्थिति से जो कुछ मिल सकता है उसे लेंगे। जहां ज़रूरत होगी आज की प्रचलित सीमाओं को चाहे वह शाषण पद्धति की हों या सुविधाओं की लाँघ कर नई सीमाएं बनाएँगे। हमारा उद्देश्य है कि हम ऐसा विधान बनाएँ जिसमें जनमत की प्रधानता रहे और व्यक्ति को केवल स्वतंत्रता ही न मिले वो स्वतंत्रता लोकहित के लिए साधन भी बन जाए। आज तक इस देश के लोग देश को आज़ाद करने के लिए संकल्प किया करते थे और अपनी कार्य-सिद्धि के लिए त्याग और बलिदान की प्रतिज्ञा किया करते थे। आज दूसरे प्रकार का संकल्प और प्रतिज्ञा का दिन आया है। हममें से कोई ऐसा न समझे कि त्याग का दिन बीत चुका और भोग का समय आ गया। जो देश को उन्नत करने का महान कार्य हमारे सामने है उसमें हमने आज तक जितने त्याग की भावना दिखलाई है उसके कहीं अधिक दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ तत्परता, त्याग और कार्यक्षमता दिखलाने का समय है। इसलिए एक बार फिर से भारत की सेवा में लग जाने का संकल्प करना है और ईश्वर से प्रार्थना करनी है कि जिस तरह उसने हमारे पहले संकल्प को पूरा किया, उसी तरह से यह इसको भी पूरा करे।

정답 원고가 필요합니다.

पाठ 01 विवाह

सुनना

1. ② 2. ①
3. × 4. ○

पढ़ना

1. ③ 2. ④
3. ④ 4. ②

पाठ 02 परिवार

सुनना

1. ③ 2. ①, ③
3. × 4. ○

पढ़ना

1. ② 2. ④
3. ③ 4. ④

पाठ 03 कॉलेज जीवन

सुनना

1. ③ 2. ①
3. ○ 4. ×

पढ़ना

1. ② 2. ④
3. ③ 4. ③

पाठ 04 भावनाएँ

सुनना

1. ③ 2. ②
3. × 4. ×

पढ़ना

1. ① 2. ②
3. ③ 4. ①, ④

पाठ 05 अवकाश

सुनना

1. ① 2. ②
3. × 4. ○

पढ़ना

1. ② 2. ③
3. ① 4. ③

पाठ 06 अस्पताल

सुनना

1. ③ 2. ②
3. ○ 4. ×

पढ़ना

1. ① 2. ③
3. ④ 4. ④

पाठ 07 फल और सब्ज़ियाँ

सुनना

1. ④ 2. ①
3. ○ 4. ○

पढ़ना

1. ① 2. ④
3. ② 4. ④

पाठ 08 यातायात

सुनना

1. ② 2. ③
3. × 4. ×

पढ़ना

1. ④ 2. ③
3. ③ 4. ④

पाठ 09 संचार

सुनना

1. ① 2. ③
3. ○ 4. ×

पढ़ना

1. ② 2. ③
3. ①, ③ 4. ①

पाठ 10 लड़ाई-झगड़ा

सुनना

1. ④ 2. ③
3. × 4. ○

पढ़ना

1. ① 2. ④
3. ①, ② 4. ④

पाठ 11 हवाई अड्डा

सुनना

1. ① 2. ④
3. ○ 4. ×

पढ़ना

1. ① 2. ④
3. ③ 4. ④

पाठ 12 प्रकृति

सुनना

1. ② 2. ④
3. ○ 4. ×

पढ़ना

1. ① 2. ④
3. ④ 4. ③

단어	품사	뜻	비 고
अंकगणित	명사 (남)	산수; 산술, 계산	B2-4-प
अंकन	명사 (남)	표시, 표기; 기입; 셈, 계산	B2-11-मु
अंगीकृत	형용사	승인된, 인정된; 채택된, 수용된, 받아들인	B2-12-प
अंचल	명사 (남)	지역, 구(區); 주변, 주변지역; 가장자리, 변경	B2-5-मु
अंततः	부사	결국, 드디어, 마침내	B2-6-वा
अंतरग्रहीय	형용사	행성 간	B2-4-मु
अंतराल	명사 (남)	(시간, 장소 등의) 간격, 틈; 차이	B2-3-प
अंतरिक्ष	명사 (남)	공중(空中), 하늘과 땅 사이의 빈 곳; 우주; 천계	B2-4-मु
अंतर्गत	형용사	담긴; 포함된; 숨겨진	B2-1-मु
अंतर्वस्तु	명사 (남)	내용; 요지	B2-10-प
अंत्येष्टि	명사 (여)	장례, 영결식	B2-1-मु
अंश	명사 (남)	부분, 일부, 일부분; 지분, 몫; 배당; 분수; 온도, 각도, 방위	B2-9-प
अक्षुण्ण	형용사	온전한, 부서지지 않은, 손상되지 않은; 경험이 없는, 미숙련의	B2-12-प
अखंड	형용사	나뉘지 않는, 불가분의; 부서지지 않는, 온전한; 중단되지 않는, 끊임없는, 연속적인	B2-6-प
अखंडता	명사 (여)	불가분, 불가분성	B2-12-प
अग्नि	명사 (여)	불; 불의 신	B2-1-मु
अचेत	형용사	의식이 없는; 침착하지 못한, 불안한, 동요된, 들뜬; 부주의한; 알지 못하는; 이해 못하는; 무딘	B2-8-प
अछूता	형용사	손대지 않은; 오염되지 않은, 깨끗한; 다루지 않은	B2-3-मु
अजनबी	형용사/ 명사 (남)	낯선, 알지 못하는/ 낯선 사람, 모르는 사람	B2-11-मु
अज्ञात	형용사	알려지지 않은, 드러나지 않은; 익명의; 모르는	B2-9-वा
अड़ना	동사 (자)	정지하다, 멈추다; 주장하다, 고집하다	B2-6-मु
अतृप्त	형용사	만족하지 못하는; 채워지지 않은	B2-1-मु
अत्यधिक	형용사	매우 많은, 풍부한; 극심한	B2-3-मु
अत्याधुनिक	형용사	초현대적인, 아주 최근의; 최첨단의	B2-4-वा
अद्यतन	형용사	현대의, 오늘날의	B2-10-सु
अद्वितीय	형용사	유일한, 유일무이한; 독특한; 신기한	B2-9-सु
अधिकांश	명사 (남)/ 형용사/ 부사	대부분, 많은 부분/ 많은/ 대개, 대부분	B2-2-वा
अधिकृत	형용사	인정받은, 공인된; 권한을 부여받은; 대리의; 종속된, 귀속된	B2-10-प
अधिनियम	명사 (남)	규정, 법규, 조례	B2-12-प
अधिनियमित	형용사	법으로 제정된, 법제화된	B2-12-प
अधिपति	명사 (남)	지배자, 통치자; 주인; 왕; 우두머리	B2-7-वा
अधिप्रमाणित	형용사	입증된, 인증된; 진짜의, 진본의	B2-10-सु
अधिमान्य	형용사	선호하는, 우대하는; 우선권의	B2-5-वा
अधीन	형용사	권한 아래 있는, 지배를 받는; 종속된, 귀속된; 강요된	B2-7-मु
अधीनस्थ	형용사	하위의, 아래의; 부수적인, 보조적인	B2-7-मु
अध्येता	명사 (남)	학생; 연구자, 학자	B2-1-वा
अनंत	형용사	끝없는, 무한한, 영원한; 무수한, 무궁한	B2-4-वा
अनंतर	부사	후에, 바로 다음에; 잇따라; 연속해서	B2-2-मु
अनजान	형용사	무지한, 무식한; 모르는	B2-11-मु
अनमोल	형용사	귀중한, 매우 값진, 가격을 매길 수 없는	B2-4-सु
अनसुलझा	형용사	풀리지 않은, 해결되지 않는	B2-7-वा
अनाचार	명사 (남)	부도덕한 행위; 인륜에 반하는 행위, 패륜행위	B2-6-वा
अनिवार्य	형용사	필수의, 의무적인; 불가피한	B2-3-प
अनिश्चित	형용사	정해지지 않은, 불확실한	B2-12-वा
अनिष्ट	명사 (남)	유해, 해악; 악행, 재앙; 잘못	B2-10-प
अनुचित	형용사	부적절한, 부당한, 마땅하지 않은	B2-1-वा
अनुपम	형용사	비할 데 없는, 견줄 바 없는; 독특한, 특이한	B2-11-वा
अनुपात	명사 (남)	비율, 비례	B2-2-मु
अनुपालन	명사 (남)	준수; 실시, 이행	B2-10-सु
अनुप्रास	명사 (남)	두운(법)	B2-11-मु
अनुभूत	형용사	경험한; 증명된, 깨달은; 아주 예민한; 부드러운	B2-1-वा
अनुयायी	명사 (남)	추종자, 신봉자, 열심히 따르는 자; 지지자	B2-6-प
अनुवांशिक	형용사	유전적인, 세습되는	B2-2-मु
अनुष्ठित	형용사	시작된, 수행된	B2-9-प
अनुसंधान	명사 (남)	연구; 탐구, 조사	B2-4-मु
अनुसरणकर्ता	명사 (남)	추종자, 신봉자, 따르는 자	B2-3-वा
अनुसूची	명사 (여)	[법률] 조항, 별표(別表); 일정	B2-5-मु
अन्नप्राशन	명사 (남)	안나쁘라샨(아이가 젖을 떼고 이유식을 먹기 시작할 때 치르는 힌두교 의례)	B2-1-मु
अन्याय	명사 (남)	불공정, 불공평; 부당, 불의	B2-10-वा
अन्वेषण	명사 (남)	조사, 탐구, 탐색, 탐사; 규명	B2-10-मु
अपच	명사 (남)	소화불량, 체증	B2-2-प
अपराधी	형용사/ 명사 (남)	범죄의; 죄가 있는, 유죄의/ 범죄자, 범인	B2-3-वा
अपवाद	명사 (남)	예외, 이례; 제외, 배제; 비난, 비방	B2-2-मु
अपहरण	명사 (남)	유괴, 납치; 강탈, 탈취	B2-7-मु
अपेक्षाकृत	부사	비교적, 비교해서 말하면; 상대적으로	B2-4-वा
अप्रत्याशित	형용사	예기치 않은, 예상 밖의, 뜻밖의; 느닷없는	B2-8-प

अप्रासंगिक	형용사	무관한, 관련 없는; 조리에 닿지 않는; 무의미한	B2-6-मु
अभंग	형용사/ 명사 (남)	나뉘지 않는, 온전한; 부서지지 않는; 연속의, 계속의/ 아방그(찬가의 일종)	B2-9-प
अभाव	명사 (남)	부재, 없음; 결핍, 부족, 궁핍	B2-8-मु
अभिगम	명사 (남)	접근, 가까이 감; 입장, 들어섬	B2-6-वा
अभिनव	형용사	새로운; 최신의, 최근의; 경험 없는, 미숙한	B2-9-मु
अभिन्न	형용사	분리할 수 없는, 연결된; 결합된, 합쳐진; 가까운, 친밀한	B2-11-प
अभिप्राय	명사 (남)	의도, 목적, 취지; 본지, 원뜻	B2-11-मु
अभियांत्रिकी	명사 (여)	공학 기술; 공학	B2-4-प
अभियान	명사 (남)	캠페인, 운동; 임무; 탐험, 원정	B2-4-मु
अभियुक्त	명사 (남)	피고; 피의자/ 고소 당한; 죄가 있는; 연결된	B2-10-मु
अभिव्यक्ति	명사 (여)	표현, 표명; 징후, 나타남	B2-4-प
अभिशाप	명사 (남)	저주; 악담, 비방, 중상	B2-2-मु
अभ्यस्त	형용사	습관적인, 익숙해진; 능숙한, 숙련된	B2-4-प
अमन	명사 (남)	평화, 안녕; 고요	B2-6-मु
अमुक	형용사	이러이러한, 여차여차한	B2-5-वा
अम्लपित्त	명사 (남)	가슴앓이, 가슴쓰림, 탄산증(呑酸症)	B2-2-प
अयाचित	형용사	부적절한, 비합리적인; 청하지 않은, 구하지 않은	B2-12-वा
अरबी	명사 (여)/ 형용사	아랍어/ 아랍의, 아랍과 관련된	B2-9-मु
अरुण	명사 (남)/ 형용사	태양; 새벽, 여명; 붉은 빛/ 붉은, 불그스름한	B2-11-मु
अर्जित	형용사	축적된, 수집된; 획득한, 취득한	B2-9-मु
अर्थ-व्यवस्था	명사 (여)	경제, 경기	B2-8-मु
अर्थशास्त्री	명사 (남)	경제학자	B2-8-मु
अर्पित	형용사	제공된; 봉헌된, 헌납된; 맡긴, 위탁된	B2-7-प
अलंकार	명사 (남)	꾸밈, 장식; 장식품, 장신구; [문학] 수사법, 수사적 표현	B2-11-मु
अलगाववादी	명사 (남)/ 형용사	분리주의자/ 분리주의의	B2-12-मु
अलगोज़ा	명사 (남)	알고자(쌍으로 된 목관 악기)	B2-9-वा
अवधारणा	명사 (남)	개념; 이론, 구상; 이해; 가설	B2-1-मु
अवयव	명사 (남)	부분; (팔다리 등의) 신체 일부	B2-5-वा
अवशेष	명사 (남)	나머지, 잔여; 찌꺼기; 유물, 흔적	B2-4-प
अवस्थित	형용사	존재하는; 위치한, 놓인; 준비된	B2-7-वा
अवांछित	형용사	원치 않는, 반갑지 않은, 불필요한	B2-8-प
अशोधित	형용사	미완성의, 처리하지 않은; 정화하지 않은	B2-2-प
अशोभनीय	형용사	망측한, 보기 흉한, 외설적인; 적절치 못한	B2-10-प
अश्लील	형용사	음란한, 외설적인, 추잡한; 저속한; 나쁜, 못된	B2-10-प

असंतुलित	형용사	균형이 맞지 않은, 치우친	B2-2-मु
असंभव	형용사	불가능한, 실현 가능성이 없는	B2-3-वा
असभ्य	형용사	무례한, 예의 없는, 버릇없는; 교양 없는, 세련되지 못한, 투박한; 저속한, 미개한	B2-9-मु
असम	형용사	울퉁불퉁한; 평탄하지 않은; 같지 않은	B2-9-वा
असमर्थ	형용사	불가능한, 할 수 없는; 무능한	B2-3-प
असमिया	명사 (여)/ 명사 (남)/ 형용사	아삼어/ 아삼 사람/ 아삼의, 아삼과 관련된	B2-5-मु
असलियत	명사 (여)	실체, 본체; 진리, 진실	B2-8-मु
असहज	형용사	부자연스러운; 특이한, 흔치 않은; 산만해진, 산란해진; 불안해하는, 동요된	B2-8-प
असामान्य	형용사	보통과 다른, 일반적이지 않은, 특이한; 드문, 흔치 않은	B2-3-वा
असुरक्षित	형용사	안전하지 않은, 위험한; 불안한	B2-8-प
अस्त	형용사/ 명사 (남)	가라앉은, 잠긴; 기운; (해가) 진; 몰락한/ 침몰, 잠김; 일몰; 쇠퇴, 쇠락	B2-1-प
अस्तित्व	명사 (남)	존재, 현존, 실존, 유(有)	B2-1-प
अहिंसा	명사 (여)	불살생, 비폭력	B2-6-प
आँकड़ा	명사 (남)	수치, 통계; 숫자	B2-2-मु
आंत	명사 (남)	장, 내장, 창자	B2-2-प
आंदोलन	명사 (남)	(사람들이 조직적으로 벌이는) 운동, 행동, 캠페인	B2-12-प
आंवला	명사 (남)	아믈라, 아말라키 (열매)	B2-2-प
आउटपुट	명사 (남)	산출, 결과, 출력(output)	B2-12-वा
आकलन	명사 (남)	추정, 추측, 계산; 평가, 판단	B2-8-मु
आकांक्षा	명사 (여)	염원, 원망(願望), 바람, 기대	B2-1-वा
आकृति	명사 (여)	형상, 형태, 모양; 도형, 도표	B2-9-मु
आगामी	형용사	장래의, 미래의, 오는; 다음의	B2-12-वा
आग्रह	명사 (남)	강한 요청, 간청, 요구; 열심, 열의; 강조, 강변, 주장	B2-8-प
आचरण	명사 (남)	행위, 품행, 행동; 실천, 실행	B2-7-वा
आज़ाद	형용사/ 부사	자유로운; 해방된; 독립된/ 자유롭게; 독립적으로	B2-6-मु
आज़ादी	명사 (여)	자유, 해방, 독립	B2-6-मु
आड़ा	형용사	가로지르는, 가로 놓인, 사선의, 대각선의	B2-9-मु
आत्म	형용사	자기자신의, 자아의	B2-2-मु
आत्मबल	명사 (남)	정신력, 의지력, 결단력, 자주성	B2-2-मु
आत्महत्या	명사 (여)	자살	B2-8-प
आत्मा	명사 (여)	영혼, 정신; 마음; 의식	B2-11-मु
आदर	명사 (남)	존경, 경의; 존중	B2-12-प

आदेश	명사 (남)	명령, 지령; 지시, 지정	B2-7-मु
आध	형용사	절반의	B2-6-मु
आधिकारिक	형용사	공식적인, 권위있는; 정부의, 당국의	B2-3-प
आधिपत्य	명사 (남)	지배, 소유; 영향력, 패권	B2-7-मु
आध्यात्मिक	형용사	영적인, 정신적인, 영혼의	B2-1-वा
आपत्ति	명사 (여)	문제, 위기, 위험; 이의, 반대, 항의	B2-6-मु
आपत्तिजनक	형용사	불쾌한, 바람직하지 못한, 모욕적인; 재앙의	B2-10-प
आपसी	형용사	서로의, 상호의	B2-2-वा
आपूर्ति	명사 (여)	공급, 조달, 수급	B2-3-प
आभार	명사 (남)	짐, 부담; 고마움, 감사, 사의(謝意); 책임, 의무	B2-11-वा
आभास	명사 (남)	그림자, 자취, 환영; 전조, 조짐; 망상, 착각	B2-11-प
आमदनी	명사 (여)	수입, 소득	B2-12-मु
आमोद	명사 (남)	기쁨, 즐거움, 재미	B2-6-मु
आय	명사 (여)	수입, 세입, 소득	B2-8-मु
आयकर	명사 (남)	소득세	B2-12-मु
आयाम	명사 (남)	차원, 규모, 면, 관점; 너비, 폭	B2-5-मु
आयुर्वेद	명사 (남)	아유르베다, 인도 전통의학	B2-2-प
आयुर्वेदिक	형용사	아유르베다와 관련된	B2-2-प
आरंभिक	형용사	처음의, 초기의; 초급의, 초등의; 머리말의, 서문의, 서론의	B2-7-वा
आरोप	명사 (남)	비난, 혐의; 고발, 기소	B2-9-मु
आरोपण	명사 (남)	강요, 부과; 이식; 전가, 탓함	B2-9-मु
आर्य	명사 (남)	아랴의, 아랴와 관련된; 훌륭한; 존경받는; 고귀한/ 아랴인; 훌륭한 자; 고귀한 자; 귀족	B2-5-मु
आर्यभट्ट	명사 (남)	아랴밧뜨(인도의 수학자이자 천문학자)	B2-4-प
आलस्य	명사 (남)	게으름, 태만	B2-11-मु
आलोक	명사 (남)	빛, 광채, 윤; 깨달음, 계몽	B2-11-प
आवरण	명사 (남)	덮개, 싸개; 표지	B2-10-प
आवृत्ति	명사 (여)	반복, 되풀이; 빈도, 빈발, 재발; 재판(再版)	B2-9-प
आवेदक	명사 (남)	지원자, 응시자, 신청자	B2-10-सु
आशय	명사 (남)	의도, 취지; 의미	B2-10-सु
आशावादी	형용사/ 명사 (남)	낙관하는, 낙관적인, 낙천주의의/ 낙관주의자, 낙천주의자	B2-11-प
आश्रम	명사 (남)	(수행자, 순례자들이 머무는) 은신처; 힌두인들의 삶의 네 단계	B2-1-मु
आश्रय	명사 (남)	지지, 원조; 피난, 은신; 비호, 보호	B2-11-मु
आस	명사 (여)	갈망, 열망; 기대, 바람	B2-6-वा
आहरण	명사 (남)	인출; 빼앗음, 강탈; (명령 등의) 완수; (나쁜 것을)축출	B2-11-प

आहरित	형용사	인출된, 뽑아낸	B2-10-सु
आहार	명사 (남)	음식, 음식물; 식사, 섭취	B2-2-मु
आह्वान	명사 (남)	호소, 탄원; 호출, 부름, 소환	B2-12-प
इंगित	명사 (남)	지시, 암시, 표시, 싸인	B2-7-वा
इंच	명사 (남)	(단위) 인치(inch)	B2-9-मु
इंटरेक्शन	명사 (남)	상호 작용, 상호 간 영향(interaction)	B2-3-मु
इंद्रिय	명사 (여)	감각기관, 감각기능; 생식기관	B2-1-मु
इंसानी	형용사	사람의, 인간의	B2-4-वा
इंस्टीट्यूट	명사 (남)	기관, 연구소(institute)	B2-8-मु
इच्छित	형용사	원하는, 바라는, 희망하는; 요구되는	B2-3-प
इतर	형용사	다른, 그 외의	B2-5-मु
इतिहासकार	명사 (남)	사학자, 역사연구가	B2-4-प
इत्मीनान	명사 (남)	여가, 여유	B2-5-वा
ईंधन	명사 (남)	연료; 땔감, 장작	B2-4-मु
ईएमएस	명사 (남)	국제특급우편, EMS(Express Mail Service)	B2-10-प
उकेरना	동사 (타)	새기다, 파다, 각인하다	B2-11-वा
उग्र	형용사	사나운, 험악한; 격렬한, 맹렬한; 신랄한	B2-6-मु
उच्च	형용사	높은; 뛰어난, 최고의	B2-2-मु
उछाल	명사 (여)	급상승; (한 곳에서 다른 곳으로) 건너 뜀; 도약, 약진	B2-8-मु
उजागर	형용사	드러난; 나타난	B2-2-वा
उड़िया	명사 (여)/ 형용사	우리야어/ 우리야어로 된, 우리야어와 관련된	B2-5-मु
उत्कर्ष	명사 (남)	탁월, 걸출; 훌륭함, 최고	B2-12-प
उत्कृष्ट	형용사	탁월한, 걸출한, 뛰어난; 훌륭한, 최고의	B2-6-प
उत्तम	형용사	최고의, 최상의, 훌륭한	B2-1-मु
उत्पत्ति	명사 (여)	출생; 시작; 출생지; 환생; 창조; 이익	B2-1-मु
उत्पन्न	형용사	출생한, 태어난; 생겨난	B2-11-मु
उत्पाद	명사 (남)	제품; 생산, 제조; 수확	B2-4-वा
उत्पादक	형용사/ 명사 (남)	생산하는; 생산적인/ 생산자	B2-7-सु
उत्सुकता	명사 (여)	열의, 열정; 열망	B2-9-वा
उथल-पुथल	명사 (여)	혼란, 대재앙; 소동, 소란	B2-12-वा
उदारता	명사 (여)	관대함, 후함	B2-11-मु
उदित	형용사	떠오른; 나타난; 분명한, 뚜렷한; 활짝 핀, 기쁜; 언급된; 생산된	B2-11-मु
उद्देशिका	명사 (여)	(책의) 서문, (법령 따위의) 전문(前文), (말의) 서두	B2-12-प
उद्देश्य	명사 (남)	의도, 목적; 동기; 주제	B2-4-मु

उन्नत	형용사	높은; 탁월한; 발전한	B2-4-वा
उन्नति	명사 (여)	높이; 증가; 승진; 발전	B2-4-वा
उप-	접두사	하위-, 부-, 준-	B2-9-मु
उपक्रम	명사 (남)	벤처, 기업; 준비; 시도, 착수	B2-10-सु
उपग्रह	명사 (남)	위성; 행성	B2-4-मु
उपचार	명사 (남)	치료, 처치; 의식, 의례	B2-2-मु
उपनयन	명사 (남)	우쁘나얀(성스러운 실을 수여하는 힌두교 의례)	B2-1-मु
उपभोक्ता	명사 (남)	소비자; 사용자	B2-10-प
उपमहाद्वीप	명사 (남)	아(亞)대륙	B2-4-प
उपयुक्त	형용사	적절한, 적합한, 알맞은	B2-2-मु
उपयोगी	형용사	유용한; 도움이 되는	B2-3-मु
उपरांत	부사	후에, 이후에; 다음에	B2-7-मु
उपरोक्त	형용사	앞서 말한, 위에서 언급한	B2-9-सु
उपलब्धि	명사 (여)	성과, 업적; 달성, 성취	B2-12-प
उपादेय	형용사	유용한, 유익한	B2-1-प
उपासना	명사 (여)	경배; 숭배	B2-12-प
उपाहार	명사 (남)	가벼운 식사; 간식	B2-9-सु
उबटन	명사 (남)	(밀가루, 콩가루, 강황, 아몬드, 기름 등으로 만든) 마사지 크림; 힌두 결혼 의례 중 하나로 신랑 신부 몸에 바르는 연고	B2-6-मु
उम्मीदवार	명사 (남)	지원자, 후보자	B2-3-प
उलझाना	동사 (타)	얽다; 엮다	B2-8-वा
उल्लिखित	형용사	언급한; 기술한	B2-3-प
उल्लेखनीय	형용사	언급할 만한, 말할 만한; 주목할 만한	B2-11-प
उषा	명사 (여)	새벽, 동틀 녘	B2-11-मु
ऊँघना	동사 (자)	졸다	B2-11-मु
ऊँचाई	명사 (여)	높이, 높음; 키; 고음; 고지; 고도	B2-4-प
ऊपरी	형용사	위쪽의, 더 위에 있는; 바깥 표면의, 외부의; 추가의	B2-2-मु
ऊर्जा	명사 (여)	에너지, 힘	B2-1-मु
ऊर्ध्वमुखी	형용사	위쪽을 향한, 상승하고 있는	B2-9-मु
ऋणात्मक	형용사	빼는, 마이너스의; 부정적인; 음극의	B2-4-प
एकड़	명사 (남)	에이커(acre; 약 4, 050 평방미터)	B2-9-सु
एकमात्र	형용사	하나뿐인, 유일한	B2-5-मु
एसएमएस	명사 (남)	단문메시지서비스, SMS(Short Message Service)	B2-3-प
ऑफर	명사 (남)	제안, 제공; 할인 판매	B2-3-मु
औपचारिक	형용사	공식적인; 공적인	B2-4-मु

औषधि	명사 (여)	식물; 약초	B2-2-प
औसत	명사 (남)/ 형용사	평균/ 평균의	B2-8-मु
औसतन	부사	평균하여, 대체로	B2-5-सु
कक्षणयान	명사 (남)	(행성이나 달 주위를 도는) 우주선	B2-4-मु
कक्षित्र	명사 (남)	(행성이나 달 주위를 도는) 우주선	B2-4-मु
कटार	명사 (여)	단검, 단도	B2-6-मु
कठोर	형용사	단단한; 엄격한; 힘든, 가혹한	B2-5-प
कणिका	명사 (여)	작은 알갱이, 미립자	B2-11-प
क़दम	명사 (남)	발걸음; 발길	B2-5-प
कदाचित्	부사	아마도	B2-11-सु
कन्नड़	명사 (여)	깐나다어	B2-5-मु
कफ़	명사 (여)	기침; 가래, 점액	B2-2-प
कमाई	명사 (여)	소득, 수입, 번 것	B2-6-वा
कमान	명사 (여)	명령, 지휘; 지배	B2-7-वा
कमाना	동사 (타)	벌다; 획득하다, 얻다	B2-6-वा
क़यामत	명사 (여)	비운, 불운; 파멸, 종말	B2-6-मु
करताल	명사 (남)	까르딸(캐스터네츠와 비슷한 집게 모양의 악기)	B2-9-प
क़रार	명사 (남)	동의; 합의	B2-8-सु
क़रीबी	형용사	가까운; 친한	B2-3-वा
करुणा	명사 (여)	연민, 동정	B2-11-मु
करुणामय	형용사	상냥한, 다정한; 애절한, 가련한; 인정 많은, 자비로운	B2-11-वा
कर्णवेध	명사 (남)	까르나베드(귀를 뚫는 힌두교 의례)	B2-1-मु
कर्म	명사 (남)	행위; 의무; [문법] 목적어	B2-1-मु
कलाप	명사 (남)	공작새의 꼬리; 띠, 끈	B2-1-प
कलाबत्तू	명사 (남)	금박을 입힌 비단실	B2-6-मु
कल्पना	명사 (여)	상상(력)	B2-4-वा
कश्मीर	명사 (남)	까슈미르주	B2-12-मु
कश्मीरी / काश्मीरी	명사 (여)/ 형용사	까슈미르어/ 까슈미르의, 까슈미르와 관련된, 까슈미르어로 된	B2-5-मु
कसना	동사 (타)/ 동사 (자)	조이다; 조여 매다; 당기다/ 조여지다	B2-2-वा
कसाव	명사 (남)	긴장, 빽빽함; 압력	B2-9-मु
काज	명사 (남)	일, 업무; 사업; 의도	B2-5-मु
क़ानूनी	형용사	합법적인; 법과 관련된, 법의	B2-10-मु
कामकाज	명사 (남)	일; 사업	B2-5-वा

कामगार	명사 (남)	노동자, 작업자	B2-12-मु
कामयाब	형용사	성공적인; 성공한	B2-2-मु
क़ायदा	명사 (남)	규칙, 규정; 관습; 방법; 순서	B2-6-मु
क़ायम	형용사	확고한; 결정된; 서있는	B2-3-मु
कायर	형용사	소심한; 겁 많은	B2-6-मु
कारक	명사 (남)	[문법] 격(格)	B2-7-प
कारख़ाना	명사 (남)	공장, 작업장, 일터	B2-8-वा
कारणवश	부사	(특정한 이유) 때문에	B2-10-मु
कारीगर	명사 (남)	기능공, 장인; 수리공	B2-6-मु
कारोबार	명사 (남)	사업, 장사; 직업, 임무	B2-3-मु
कार्यक्षमता	명사 (여)	능력, 역량; 효율성, 잠재력	B2-12-सु
कार्यवाही	명사 (남)	조치; 진행; 진행자	B2-10-मु
कालखंड	명사 (남)	시대	B2-4-प
काव्य	명사 (남)	시	B2-11-मु
किनार	명사 (여)	끝, 가장자리, 모서리	B2-9-मु
किफ़ायती	형용사	경제적인, 알뜰한; 검소한	B2-3-मु
किरण	명사 (여)	빛; 광선	B2-11-मु
किरायेदार	명사 (남)	세입자; 임차인	B2-8-प
कुंभ	명사 (남)	물주전자; 꿈브멜라 축제	B2-11-मु
कुपोषण	명사 (남)	영양실조	B2-2-मु
कुमकुम	명사 (여)	사프란; (이마에 떨락을 찍는 데 사용되는) 붉은 가루	B2-11-मु
कुशलता	명사 (여)	솜씨; 편안함	B2-9-मु
कूटना	동사 (타)	빻다, 찧다, 뭉개다	B2-5-वा
कृच्छ	명사 (남)	통증; 고통; 유통성(有痛性) 배뇨 곤란, 통증 배뇨	B2-2-प
कृतज्ञ	형용사	은혜를 입은, 감사하는	B2-4-प
कृत्य	명사 (남)	행위, 일; 의무	B2-1-प
कृत्रिम	형용사	인위적인; 인조의; 가짜의	B2-7-वा
के पश्चात्	후치사 (복합)	~의 나중에, ~ 후에, ~ 뒤에	B2-1-मु
के मारे/ मारे के	후치사 (복합)	~ 이유로, ~ 때문에, ~로 인해	B2-6-मु
के रक्षार्थ	후치사 (복합)	~를 보호하기 위해	B2-10-वा
केंद्रित	형용사	중점을 이룬; 중심이 된; 중앙에 위치한	B2-8-वा
केशांत	명사 (남)	께샨뜨(학업을 마치고 집으로 돌아가기 위한 힌두교 의례)	B2-1-मु
कैंपेन	명사 (남)	캠페인, 운동(campaign)	B2-7-सु
कैश	명사 (남)	현금, 돈	B2-12-मु

कोंकणी	명사 (여)/ 형용사	꽁까니어/ 꽁깐 지역의; 꽁까니어로 된	B2-5-मु
कोटि	명사 (여)	등급; 서열; 범주, 범위	B2-2-मु
कोष	명사 (남)	창고, 저장고; 기금	B2-12-वा
कौशल	명사 (남)	기술; 능숙함	B2-4-वा
क्रांति	명사 (여)	혁명	B2-7-सु
क्रिया	명사 (여)	행위; 작용; 의식; 활동; 동사	B2-1-मु
क्रियाकलाप	명사 (남)	활동, 활약	B2-5-मु
क्रियान्वयन	명사 (남)	실행, 수행, 이행	B2-4-मु
क्रियाशील	형용사	활동적인, 작동하는, 반응하는	B2-10-वा
क्रीड़ा	명사 (여)	놀이, 게임, 유흥, 스포츠	B2-11-मु
क्लांति	명사 (여)	나른함, 권태, 피로	B2-11-प
क्षणिक	형용사	순간적인, 일시적인	B2-11-प
क्षतिपूर्ति	명사 (여)	보상, 배상	B2-10-प
क्षितिज	명사 (남)	수평선, 스카이라인	B2-11-मु
खंडहर	명사 (남)	폐허	B2-1-सु
खग	명사 (남)	하늘에서 움직이는 것, 새, 구름	B2-11-मु
खड़ी बोली	명사 (여)	카리볼리어(표준 힌디어의 모태가 되는 언어)	B2-11-मु
खनकदार	형용사	쨍그랑 거리는, 딸랑 거리는	B2-9-मु
खनिज	형용사/ 명사 (남)	광물(성)의/ 광물(질), 미네랄	B2-2-प
खपत	명사 (여)	소비; 판매	B2-8-मु
खपाना	동사 (타)	소비하다; 낭비하다; 흡수하다	B2-12-मु
खाताधारक	명사 (남)	예금주	B2-10-सु
खाद्य	형용사/ 명사 (남)	먹을 수 있는/ 음식, 식량	B2-9-सु
ख़ानदान	명사 (남)	가문, 혈통; 왕가	B2-6-मु
ख़ामोश	형용사	조용한, 침착한; 차분한	B2-8-प
ख़ासकर	부사사	특별히	B2-7-मु
ख़ुफ़िया	형용사	숨겨진, 감춰진; 비밀의, 은밀한	B2-12-मु
ख़ुराक	명사 (여)	복용량; 식량; 정량	B2-3-प
ख़ुलासा	명사 (남)	본질, 핵심; 폭로; 결과물	B2-12-मु
ख़ूनी	형용사/ 명사 (남)	피의; 핏빛의, 붉은/ 살인범	B2-2-प
ख़ूबी	명사 (여)	아름다움, 훌륭함; 공, 이점	B2-4-मु
गज़	명사 (남)	가즈(길이 단위, 대략 33인치)	B2-3-प
ग़ज़ल	명사 (여)	(우르두어나 페르시아어로 된) 가잘, 시, 노래	B2-6-मु
गठन	명사 (여)	조직, 구성	B2-7-मु

गठीला	형용사	건장한, 튼튼한; 잘 지어진	B2-2-무
गणना	명사 (여)	계산, 셈; 산수, 산술; 회계, 경리; 헤아림, 고려	B2-1-무
गणराज्य	명사 (남)	공화국	B2-10-명
गणितज्ञ	명사 (남)	수학자	B2-4-명
गति	명사 (여)	운동, 활동; 속력, 속도; 상태, 상황; 범위; 시도, 노력; 관습, 방법	B2-5-명
गतिविधि	명사 (여)	행위, 행동, 태도; 활동, 움직임; 이동; 절차, 방법	B2-2-동
गद्य	명사 (남)	[문학] 산문	B2-11-명
गमन	명사 (남)	움직임, 이동	B2-1-동
गरिमा	명사 (여)	존엄, 품위, 장엄	B2-9-부
गर्भ	명사 (남)	자궁; 임신; 태아	B2-1-무
गर्भधारण	명사 (남)	임신	B2-1-무
गर्भस्थ	형용사	태중의, 아직 태어나지 않은	B2-1-무
गर्भस्थापन	명사 (남)	수정, 수태	B2-1-무
गर्भाधान	명사 (남)	임신, 수태	B2-1-무
गर्व	명사 (남)	자부심, 긍지; 오만; 자만심, 허영	B2-1-부
ग़लत	형용사	잘못된; 실수의; 부정확한	B2-2-동
ग़लतफ़हमी	명사 (여)	오해,	B2-10-동
गवर्नमेंट	명사 (여)	정부	B2-6-무
गहराई	명사 (여)	깊이; 신중함; 심각함	B2-1-동
गहराना	동사 (자)/ 동사 (타)	깊어지다/ 깊게 하다	B2-7-무
गान	명사 (남)	노래, 노래 부르기	B2-6-무
गायक	명사 (남)	노래하는 사람, 가수	B2-9-동
गायन	명사 (남)	노래 부르기	B2-9-무
गिरावट	명사 (여)	넘어짐, 떨어짐; 낙하, 추락, 하락	B2-8-무
गिल्ली	명사 (여)	짧은 막대기; 둥근 모양 물체	B2-6-동
गीतात्मक	형용사	서정시의, 서정적인	B2-11-명
गुज़रना	동사 (자)	(시간이) 지나다, 지나가다; (길이) 지나가다, 거치다; 죽다	B2-1-명
गुजराती	명사 (여)/ 형용사	구자라띠어/ 구자라뜨의, 구자라뜨와 관련된; 구자라띠어로 된	B2-5-무
गुड़	명사 (남)	원당, 사탕수수액	B2-2-명
गुदा	명사 (여)	항문	B2-2-명
गुमराह	형용사	길을 잘못 든, 잘못 지도된; 타락한	B2-2-동
गुरुकुल	명사 (남)	구루꿀(인도 전통 교육기관), 학교, 서당	B2-1-무
गुरुत्वाकर्षण	명사 (남)	중력, 만유인력	B2-2-무
गुरुदेव	명사 (남)	스승님	B2-11-명

ग़ुलामी	명사 (여)	노예	B2-6-부
ग़ुस्सा	명사 (남)	화, 분노	B2-8-명
गुहार	명사 (여)	호소	B2-10-동
गृह	명사 (남)	집, 주택	B2-9-부
ग़ैर	형용사	다른, 다른 사람(것); (그 밖의, 외부의) 다른, 다른 사람(것); 관련 없는	B2-8-무
ग़ैर-सरकारी	형용사	비정부의; 민간의	B2-5-무
गैस	명사 (여)	가스	B2-2-명
गोत्र	명사 (남)	혈통; 씨족	B2-7-명
ग़ौर	명사 (남)	깊은 관심; 심사숙고	B2-8-명
गौरवशाली	형용사	웅장한, 장엄한; 영광스러운; 훌륭한	B2-12-명
ग्रसित	형용사	영향을 받은; 사로잡힌	B2-3-명
ग्रस्त	형용사	소유한, 점유한; 사로잡힌, 집착하는; 삼킨; (병 등으로) 고통받는	B2-2-무
ग्रह	명사 (남)	행성	B2-1-무
ग्राम	명사 (남)	무게 단위, 그램(gram)	B2-2-명
ग्रामीण	형용사/ 명사 (남)	시골에 거주하는; 마을의; 무례한/ 마을 거주자, 주민; 시골, 시골 사람	B2-3-명
ग्रीक	명사 (여)	그리스; 그리스어	B2-11-동
घटा	명사 (여)	짙은 구름; (많은 사람들의) 무리	B2-12-무
घटित	형용사	일어난, 벌어진	B2-10-무
घटी	명사 (여)	감소, 감축, 하락; 손실, 손해	B2-8-동
घड़ा	명사 (남)	항아리, 단지	B2-11-무
घरवाला	명사 (남)	남편; 가장	B2-6-무
घोंसला	명사 (남)	둥지; 작은 집, 오두막	B2-11-무
घोर	형용사	악랄한; 노골적인; 음산한; 심각한	B2-10-명
चंचल	형용사	흔들리는, 떨리는; 불안정한; 휘청거리는; 변덕스러운	B2-9-무
चंद्र	명사 (남)	달; 천문; 물; 금; 공작새 날개의 동그란 모양	B2-4-무
चकत्ता	명사 (남)	발진, 부스럼	B2-9-무
चक्रवर्ती	명사 (남)	황제, 절대자	B2-6-명
चपेट	명사 (여)	타격, 일격; 사고	B2-5-명
चमड़ी	명사 (여)	피부; 가죽	B2-9-동
चरकटा	명사 (남)	(가축 사료를 위해 목초 등을) 자르는 사람; 하찮은 일을 하는 사람	B2-6-무
चरण	명사 (남)	(신이나 위대한 인물의) 다리, 발; 단계; (시의) 행(行)	B2-3-명
चर्चा	명사 (여)	논의, 상의; 숙고; 논쟁	B2-3-무

चलन	명사 (남)	통용, 사용	B2-12-मु
चाकर	명사 (남)	하인, 시종	B2-6-मु
चाट	명사 (여)	핥기, 핥아먹기; 게걸스레 먹음; 짜뜨(남아시아 지역의 길거리 음식)	B2-9-मु
चारित्रिकता	명사 (여)	인성, 인격; 성품	B2-11-वा
चिंतन	명사 (남)	생각, 사고; 숙고, 고려; 기억	B2-1-वा
चिकित्सक	명사 (남)	의사	B2-1-प
चिकित्सा	명사 (여)	치료, 요법	B2-2-प
चित्रण	명사 (남)	그리기, 그림; 묘사	B2-11-वा
चित्रपट	명사 (남)	그림을 그리는 천, 캔버스; 영화를 상영하는 화면, 스크린	B2-9-मु
चिरस्थायी	형용사	영구적인, 영원한; 불멸의	B2-11-प
चिह्नित	형용사	표시된, 기호가 있는	B2-3-प
चुटकी	명사 (여)	소량; 손가락 튕기기; 빈정댐, 조롱	B2-6-मु
चुपका	형용사	조용한; 비밀스러운	B2-6-मु
चूकना	동사 (자)	(논의, 목표 등이) 빗나가다; 실수하다	B2-5-वा
चूड़ाकर्म/ चूडाकर्म	명사 (남)	쭈다까르마(삭발하는 힌두교 의례)	B2-1-मु
चूरमा	명사 (남)	쭈르마(통밀을 버터와 설탕으로 조리한 전통과자)	B2-2-प
चूर्ण	명사 (남)	가루; 가루물질	B2-2-प
चेतना	명사 (여)	의식, 자각; 감각; 회상	B2-1-प
चैनल	명사 (남)	채널	B2-10-प
चोटी	명사 (여)	(산의) 정상, 꼭대기; 여성의 땋은 머리	B2-11-मु
छंद	명사 (남)	(운문의) 음보, 운율	B2-9-प
छपाई	명사 (여)	인쇄, 인쇄술; 출판	B2-10-प
छलकना	동사 (자)	흘러 넘치다; 그득하다; 물결치다	B2-9-मु
छवि	명사 (여)	아름다움; 훌륭함; 탁월, 걸출; 이미지	B2-10-वा
छाना	동사 (자)/ 동사 (타)	퍼지다; 번지다; 분산되다/ 덮다; 씌우다	B2-6-मु
छाला	명사 (남)	물집, 수포	B2-2-प
छिटकाना	동사 (타)	(흩)뿌리다; 흩다, 확산시키다; 쫓아내다	B2-11-मु
छुपना	동사 (자)	숨다, 가려지다	B2-11-मु
छेदना	동사 (타)/ 명사 (남)	(구멍을) 내다, 뚫다; 깎아내다; 절개하다; (상처, 해를) 가하다/ 천공 기구	B2-1-मु
ज़ख़्म	명사 (남)	상처, 부상	B2-6-मु
जगना	동사 (자)	깨다, 일어나다	B2-11-मु
जन-मत	명사 (남)	여론	B2-12-मु

जनरल	형용사/ 명사 (남)	일반적인, 보통의/ 장군, 대장(general)	B2-10-मु
जनाब	명사 (남)	선생님; 나리	B2-6-मु
जनेऊ	명사 (남)	자네우(힌두교도들이 상반신에 대각선으로 걸치는 실), 성사(聖絲)	B2-1-मु
जन्मभूमि	명사 (여)	모국, 조국; 출생지, 발생지	B2-1-मु
जन्मस्थल	명사 (남)	출생지	B2-6-प
ज़बरदस्त	형용사	강력한, 압도적인; 엄격한	B2-12-मु
ज़बरदस्ती	명사 (여)	강요, 억압	B2-8-प
जमाकर्ता	명사 (남)	예금주	B2-10-मु
जमाख़ोरी	명사 (여)	(특히 남모르게) 비축, 저장	B2-12-वा
जमाव	명사 (남)	집회, 집합; 접착; 합체	B2-2-वा
ज़रा	형용사/ 부사/ 명사 (남)	적은; 작은/ 좀, 약간/ 조금, 약간	B2-8-मु
ज़रिया	명사 (남)	수단, 도구, 방법	B2-1-प
ज़रूरतमंद	형용사	궁핍한, (경제적으로) 어려운	B2-3-प
जलन	명사 (여)	작열감; 연소; 질투, 선망	B2-2-प
जलमार्ग	명사 (남)	수로, 물길	B2-7-मु
जागीर	명사 (여)	토지, 영지, 봉지; 소유, 보유자산	B2-6-मु
जातकर्म	명사 (남)	자뜨까르마(아이의 탄생 후 치러지는 힌두교 의례)	B2-1-मु
जारी	형용사	유포하는; 진행하는, 실행하는; 만연한	B2-8-वा
जाला	명사 (남)	거미줄, 망; 구속; 백내장	B2-3-वा
ज़िंदादिल	형용사	활기찬, 멋진, 대담한	B2-8-प
जीवंत	형용사	생생한, 싱싱한; 활기찬	B2-5-मु
जीवनयापन	명사 (남)	생계, 생활	B2-3-वा
जीविका	명사 (여)	생계, 가계; 생활	B2-6-मु
जुआ	명사 (남)	도박; 멍에, 굴레	B2-6-वा
जूझना	동사 (자)	싸우다, 투쟁하다, (문제와) 씨름하다	B2-5-प
जोखिम	명사 (여)	위험, 위기; 모험	B2-3-प
जोड़ना	동사 (타)	더하다, 보태다; 잇다, 연결하다; 결합하다; (손을) 모으다	B2-1-वा
जोड़ा	명사 (남)	한 쌍, 한 벌, 한 세트	B2-2-मु
ज्ञात	형용사	알고 있는	B2-4-प
ज्ञातव्य	형용사	알아야 하는, 알 가치가 있는; 이해할 수 있는, 지각할 수 있는	B2-5-मु
ज्ञानार्जन	명사 (남)	지식획득, 교육	B2-12-प
ज्यामिति	명사 (여)	기하학	B2-4-प
ज्येष्ठ	형용사/ 명사 (남)	손위의, 가장 나이가 많은/ 맏이, 장남; 제슈트(힌두력 세 번째 달)	B2-10-मु

ज्योतिष	명사 (여)	천문학, 점성술	B2-1-मु
ज्वलनशील	형용사	불타오르는, 가연성의	B2-10-प
झिझक	명사 (여)	주저, 망설임, 위축, 움찔거림	B2-12-वा
झुँझलाना	동사 (자)	(화가 나서) 씩씩거리다, 짜증나다	B2-6-मु
झूठापन	명사 (남)	허위, 거짓	B2-10-वा
झेंप	명사 (여)	수줍음, 부끄러움; (얼굴을) 붉힘; 분함, 유감	B2-6-मु
टापू	명사 (남)	섬, 도서	B2-7-वा
टिकाऊ	형용사	지속되는, 내구력이 있는; 든든한, 확고한, 안정적인	B2-12-वा
टीचर	명사 (남)	선생님, 교사	B2-3-मु
टेक	명사 (여)	버팀, 지지; 지주(支柱), 버팀목; 완고, 집요; (노래나 시의) 후렴	B2-6-मु
टैक्स	명사 (남)	세금, 관세	B2-12-मु
ठुमरी	명사 (여)	투므리(인도 고전 음악의 창법 중 하나)	B2-11-प
डकार	명사 (남)	트림; 분출	B2-2-प
डग्गा	명사 (남)	닥가(따블라와 비슷한 타악기)	B2-9-मु
डटना	동사 (자)	확고하다; 제지되다, 억제되다	B2-6-मु
डमरू	명사 (남)	다므루(두 개의 작은북이 연결된 타악기로 힌두교에서는 시바 신의 악기로 알려져 있음)	B2-9-वा
डरावना	형용사	무서운, 공포에 질린, 놀란, 무시무시한, 끔찍한, 두려운	B2-8-प
डली	명사 (여)	조각, 덩어리; (작은) 정보, 소식	B2-2-प
डाउनलोड	명사 (남)	다운로드(download)	B2-3-मु
डाटा/ डेटा	명사 (남)	데이터, 자료	B2-7-सु
डायरी	명사 (남)	일기, 일지	B2-10-मु
डिजिटल	명사 (남)	디지털(digital)	B2-7-सु
डुगडुगी	명사 (여)	작은북; 선언, 포고	B2-9-वा
डुग्गी	명사 (여)	작은북	B2-9-मु
डोगरी	명사 (여)	도그리어(인도 잠무까슈미르주의 잠무 지역에서 사용되는 언어)	B2-5-मु
डोरिया	명사 (남)	가는 줄무늬가 있는 옷; 줄무늬 왜가리	B2-9-मु
ड्रिंक	명사 (여)	술; 음료, 마실 것	B2-8-प
ढँकना	동사 (타)	덮다; 깔다; 숨기다	B2-3-मु
ढक्कनदार	형용사	뚜껑이 있는	B2-3-मु
ढिलाई	명사 (여)	느슨함, 헐거움; 나태, 게으름	B2-8-वा
ढील	명사 (여)/ 형용사	느슨함, 헐거움, 이완; 나태, 게으름/ 느슨한, 헐거움; 나태한, 게으른	B2-8-मु
ढीलापन	명사 (남)	태만; 느슨함, 이완	B2-2-प
ढुलकाना	동사 (타)	떨어뜨리게 하다; 미끄러지게 하다; 내리게 하다; 기울게 하다	B2-11-मु

ढोलक	명사 (남)	돌라끄(장구처럼 생긴 작은북)	B2-9-वा
तंतुमय	형용사	섬유가 많은; 실로 이루어진	B2-2-मु
तंत्र	명사 (남)	시스템, 제도; 본질, 이론, 교리; 매력; 실; 주술	B2-3-प
तंबाकू	명사 (남)	담배	B2-9-सु
तक़दीर	명사 (여)	운명; 행운	B2-6-मु
तकनीक	명사 (여)	테크닉, 기술, 기법	B2-3-मु
तकनीकी	형용사	기술의, 기술적인	B2-4-वा
तक़रीबन	부사	대략, 대체로; 거의	B2-5-प
तजुर्बा	명사 (남)	경험	B2-12-सु
तट	명사 (남)	강둑, 강기슭, 강변, 해변, 해안	B2-11-मु
तड़प	명사 (여)	괴로움, 시달림, 고통; 전전긍긍; 섬광	B2-6-मु
तड़पना	동사 (자)	고통받다, 시달리다; 전전긍긍하다;	B2-6-मु
तत्त्व	명사 (남)	근본 진리, 첫 번째 원리; 근본적인 속성, 실체; 요소, 본질; 요인, 인자	B2-10-मु
तत्परता	명사 (여)	민첩, 신속; 성실; 준비	B2-12-सु
तत्सम	명사 (남)/ 형용사	[문법] 산스끄리뜨어 어휘로부터 차용한 어휘/ 그것과 같은, 유사한; 한정적인	B2-11-मु
तथ्य	명사 (남)/ 형용사	사실, 현실; 실체, 본질; 자료, 데이터/ 정확한, 진짜의	B2-2-वा
तनिक	부사/ 형용사	약간, 조금/ 약간의, 조금의	B2-6-वा
तपता	형용사	무더운, 뜨거운, 찌는 듯한	B2-11-वा
तबक़ा	명사 (남)	계급, 계층, 지위, 신분; 층; 겹	B2-5-मु
तबाह	형용사	파괴된, 파멸한, 폐허가 된, 붕괴된, 몰락한	B2-6-मु
तरक़्क़ी	명사 (여)	발달, 발전; 성장, 전진; 진보; 진급, 승진	B2-7-सु
तलवार	명사 (여)	검	B2-6-मु
तलाक़	명사 (남)	이혼	B2-8-सु
तलाशना	동사 (타)	찾다, 구하다, 물색하다	B2-10-वा
तवज्जो	명사 (여)	관심, 주의; 호의	B2-5-मु
तह	명사 (여)	겹, 층, 접음; 바닥; 근간, 기반; 심오함	B2-2-मु
तात्पर्य	명사 (남)	목적, 취지, 의도; 의미	B2-11-मु
तामरस	명사 (남)	(진한 분홍빛을 띠는) 연꽃	B2-11-मु
तार	명사 (남)	철사; 전선; 전보; 실, 섬유	B2-9-वा
ताल	명사 (남)	리듬, 박자; 박수; 심벌즈; (손바닥으로) 철썩 때리기	B2-9-प
तालवाद्य	명사 (남)	타악기	B2-9-मु
तालाबंदी	명사 (여)	(움직임 행동에 대한) 제재, (사무실, 공장, 직장 등의) 폐쇄, 봉쇄	B2-8-मु
तालिका	명사 (여)	목록; 표; 일정	B2-2-मु

तिजोरी	명사 (여)	금고	B2-12-मु
तिन	명사 (남)	지푸라기	B2-9-मु
तीक्ष्णता	명사 (여)	날카로움; 열기; 얼얼함, 매움; 열정; 기민함	B2-9-मु
तीर्थ	명사 (남)	성지, 순례지	B2-9-मु
तीव्र	형용사	극심한; 치열한; 열정적인; 빠른; 날카로운, 예리한	B2-6-मु
तूरानी	형용사/ 명사 (남)	투르크와 관련이 있는, 투르크의/ 투르크; 몽골	B2-5-मु
तेज़ी	명사 (여)	날카로움, 예리함; 강렬함; 뜨거움, 열기; 빠름	B2-3-मु
तैरता	형용사	떠오르는; 유동적인; 뜰 수 있는	B2-3-वा
तोंद	명사 (남)	(신체) 큰 배, 올챙이 배	B2-2-मु
तोड़	명사 (남)	파괴, 균열; 유속	B2-1-मु
तोड़ना	동사 (타)	꺾다; 부수다, 깨트리다, 망가트리다; (규칙, 약속 등을) 깨다; 해체하다; (잔돈으로) 바꾸다; (관계를) 끊다	B2-1-मु
तौर	명사 (남)	방법, 방식; 태도, 예의	B2-2-मु
त्राहि	불변화사	나를 구해주소서! 자비를 베푸소서!	B2-5-प
त्रिकोणमिति	명사 (남)	[과학] 삼각법	B2-4-प
त्रिभंग	형용사	(끄리슈나 신의 다리, 목, 허리가 굽은 자세) 뜨리방가 자세; 삼각의, 삼각과 관련이 있는	B2-9-प
थामना	동사 (타)	붙잡다; 버티다; 지지하다	B2-5-प
दबदबा	명사 (남)	위엄, 위력; 소음; 화려, 압도, 경탄	B2-3-वा
दम	명사 (남)	호흡, 숨; 순간; 활력	B2-2-मु
दमा	명사 (남)	천식	B2-2-प
दर	명사 (여)	가격; 비율	B2-7-मु
दरख़्वास्त	명사 (여)	신청, 요청, 요구; 청원, 탄원	B2-6-मु
दर्ज़	명사 (남)/ 형용사	기록; 등록; 포함/ 기록된; 삽입된	B2-5-वा
दर्शाना	동사 (타)	보여주다, 전시하다	B2-7-मु
दशक	명사 (남)	10년; 10년 단위	B2-7-प
दशमलव	명사 (남)	십진법; 소수점	B2-4-प
दस्तावेज़	명사 (여)	서류, 문서; 증서	B2-3-प
दहशतगर्द	명사 (남)	테러리스트, 테러범	B2-12-वा
दाँव	명사 (남)	내기; 차례; 기회; 통제; 덫, 모략, 교활; 벌칙, 벌금; (경기) 타격	B2-6-वा
दाक्षिणात्य	형용사/ 명사 (남)	남쪽의, 남부의/ 남쪽, 남부	B2-5-मु
दाद	명사 (여)	(피부병) 백선; 대상포진	B2-6-मु
दाना	명사 (남)	낟알; 곡물; 알갱이; 종자; 여드름	B2-2-प
दायरा	명사 (남)	원, 동그라미; 범위, 인근; 궤도; 그룹	B2-10-प
दार्शनिक	명사 (남)/ 형용사	철학자/ 철학의, 철학적인	B2-11-प

दाव	명사 (남)	산불; 화재, 불; 낫,	B2-6-मु
दावेदारी	명사 (여)	(법적) 주장, 자처; 확신	B2-7-मु
दास	명사 (남)	노예; 하인	B2-3-वा
दाहिना	형용사	오른쪽의, 오른편의	B2-9-मु
दिखलाई	명사 (여)	보여주기	B2-11-वा
दिनांक	명사 (남)	날짜	B2-10-मु
दिल्लगी	명사 (여)	농담, 익살; 조롱; 우정; 의향	B2-6-मु
दिव्य	형용사	신성한; 훌륭한, 멋진; 종교적인	B2-9-मु
दिव्यता	명사 (여)	신성(神性); 초자연성; 경이	B2-9-मु
दिहाड़ी	명사 (여)	하루; 하루 업무; 일당	B2-12-वा
दीक्षा	명사 (여)	(종교적) 입회, 입문; 창시; 설교; 자기 헌신	B2-1-मु
दीपोत्सव	명사 (남)	등불축제; 디왈리	B2-7-प
दीवानख़ाना	명사 (남)	홀, 회관; 접견실, 응접실	B2-6-मु
दुगुना	형용사	두 배의, 이중의	B2-6-वा
दुबारा	부사	두 번, 다시	B2-9-प
दुरुस्त	형용사/ 감탄사	옳은, 수정한, 정확한; 적합한/ 맞아!, 바로 그거야!	B2-2-मु
दुष्प्रभाव	명사 (남)	악영향; 부작용	B2-3-प
दूरगामी	형용사	멀리 가는, 멀리 미치는, 광범위한, 커다란	B2-7-वा
दूरभाष	명사 (남)	전화기, 전화	B2-9-मु
दूषित	형용사	부패한, 타락한, 손상된, 오염된	B2-10-प
दृढ़	형용사	굳은, 단단한, 견고한, 탄탄한, 강한	B2-2-मु
दृढ़तापूर्वक	부사	확고하게, 확실하게	B2-4-मु
दृढ़संकल्प	형용사	단호한, 확고한	B2-12-प
दृष्टिकोण	명사 (남)	관점, 견해, 견지; 시각	B2-4-मु
देय	형용사	주어진, ~하기로 되어 있는; 허용된; 지불해야하는	B2-10-प
देवदासी	명사 (여)	사원에 속한 무희, 데바다시; 매춘부	B2-9-प
देवानांप्रिय	명사 (남)	신을 사랑하는 사람	B2-6-प
देशद्रोही	명사 (남)	반역자, 배반자	B2-12-मु
देशभक्त	명사 (남)	애국자	B2-4-मु
देह	명사 (여)	몸, 신체; 몸통	B2-1-मु
दौरा	명사 (남)	여행, 순회; (지병의) 발작, 경련	B2-7-प
द्रविड़	명사 (남)/ 형용사	남인도 드라비다 지역; 드라비다인/ 드라비다의, 드라비다와 관련된	B2-5-मु
द्रुतगामी	형용사	빠른, 빨리 움직이는	B2-10-वा
द्वेष	명사 (남)	악의, 악감정; 적의	B2-6-मु

द्वेषपूर्ण	형용사	악의적인, 악의로 가득한, 적의 있는; 시기하는	B2-6-मु
धंधा	명사 (남)	일, 사업; 공예; 직업	B2-6-मु
धनराशि	명사 (여)	자금, 재물; 총액	B2-10-सु
धन्य	형용사	감사하는, 고맙게 여기는; 칭찬받을 만한; 만족하는; 운이 좋은, 길한, 복된, 복받은	B2-9-सु
धरातल	명사 (남)	지역, 구역; 땅; 땅바닥; 지표면, 지면; 수면; 수준, 층	B2-12-वा
धाँधली	명사 (남)	사기; 사기꾼	B2-6-मु
धातु	명사 (여)	필수원소, 5원소 (흙, 물, 불, 공기, 대기); (화학) 원소; 금속; 광물; [문법] 어간	B2-9-सु
धामा	명사 (남)	(수수나 등나무로 만든) 바구니	B2-9-सु
धारक	명사 (남)/ 형용사	소지하고 있는 사람; 소지하고 있는, 붙잡고 있는, 억제하는	B2-10-सु
धारणा	명사 (여)	생각, 사상; 결의, 신념; 관념, 상념	B2-2-वा
धारा	명사 (여)	경향; 흐름; (물)줄기; 전류; (법)항, 조	B2-3-मु
धुनना	동사 (타)	(삼·솜 등을) 쳐서 가리다, 두드리다; 빗질하다; 때리다	B2-6-मु
धूसरित	형용사	먼지로 뒤덮인; 먼지색의, 회색의	B2-6-मु
ध्रुवीय	형용사	북극의; 남극의; 극지의	B2-4-मु
ध्वनि	명사 (여)	음(音), 소리; 음향; 암시	B2-9-सु
नकार	명사 (남)	거절, 거부; 부정	B2-8-मु
नकारात्मक	형용사	거절하는; 부정적인; 소극적인	B2-6-वा
नक़्क़ाशी	명사 (여)	조각; 조각작품; 자수	B2-10-प
नक्सल	명사 (남)	낙살라이트(Naxalite, 인도 무장반군 조직과 공산주의 정치운동의 통칭)	B2-12-वा
नक्सली	명사 (남)	낙살라이트 당원	B2-12-मु
नगदी	명사 (남)	현금	B2-12-वा
नज़र-अंदाज़	형용사	눈에 띄지 않는, 간과하는; 무시하는	B2-6-वा
नम्र	형용사	겸손한, 공손한; 고분고분한, 복종적인; 온화한	B2-9-सु
नर्तक	명사 (남)	무용가, 댄서	B2-9-प
नवनिर्मित	형용사	새로 만들어진	B2-9-सु
नवाबी	형용사/ 명사 (여)	나왑(무갈시대 지방 통치자)에 관한, 나왑과 같은; 귀족다운; 호화로운, 사치스러운/ 나왑의 직위; 나왑의 행동양식이나 생활; 사치스러운 생활방식	B2-6-मु
नवीनतम	형용사	최신의	B2-10-सु
नशीला	형용사	취하게 만드는, 알코올이 든, 중독성의	B2-6-वा
नस	명사 (남)	혈관, 정맥, 신경	B2-1-मु
नसीहत	명사 (여)	교훈, 충고, 경고; 설교; 처벌	B2-3-वा
नाइत्तिफ़ाक़ी	명사 (여)	불화, 부조화, 불일치	B2-6-मु

नाट्य	명사 (남)	연극; 드라마; 극적 재연; 연기	B2-9-प
नाद	명사 (남)	울림, 공명; 고함; 노래	B2-9-सु
नापना	동사 (타)	재다, 측정하다	B2-2-मु
नाम-मात्र	형용사/ 부사	명목상의; 아주 얼마 안되는; 하찮은/ 명목상	B2-3-मु
नारा	명사 (남)	구호, 슬로건, 캐치프레이즈	B2-9-सु
नाश	명사 (남)	파괴, 파멸; 부재; 위기, 위험; 소멸, 제거; 포기, 버림	B2-9-प
नासा	명사 (남)	미국항공우주국, NASA	B2-4-मु
निकाय	명사 (남)	조직, 단체; 더미; 무리	B2-3-प
निगम	명사 (남)	베타 경전; 베다 구절; 계율; 법인	B2-12-मु
निज	형용사	자신의; 개인적인; 특별한; 사실의	B2-11-सु
नितंब	명사 (남)	엉덩이	B2-2-मु
नित्य	형용사/ 부사	불멸의, 사라지지 않는, 영원한; 매일의, 일상의/ 항상, 늘, 언제나; 끊임없이, 지속적으로; 매일, 날마다	B2-6-मु
निदर्शन	명사 (남)	입증; 본보기; 지도력; 방향	B2-1-वा
निदान	명사 (남)/ 부사	주요 원인; 증상; 진단, 진찰; 결과/ 결국, 마침내, 전적으로	B2-2-मु
निदेशक	명사 (남)	책임자, 관리자; (영화, 연극의) 감독, 연출자	B2-2-मु
निधि	명사 (여)	보고(寶庫); 기금, 자금, 펀드	B2-12-मु
निपटना	동사 (자)	풀려나다, 벗어나다, 해방되다; 끝나다, 마치다; 해결되다; 처리되다; 자리잡다; 변제되다	B2-3-प
निपुणता	명사 (여)	기술, 솜씨; 탁월함	B2-9-सु
निमित्त	명사 (남)/ 후치사	원인, 이유; 암시; 할당/ (~를) 위하여	B2-7-वा
निम्न	형용사	(위치, 높이가) 낮은, 밑의; 바닥 가까이의, 아랫부분의; (지위, 신분이) 낮은, 미천한; (수준이 보통보다) 낮은, 저조한; 밝지 않은, 은은한	B2-5-मु
निम्नांकित	형용사	아래 적힌, 아래 언급된, 하기의, 다음에 나오는	B2-10-प
निम्नानुसार	부사	다음과 같이	B2-1-मु
नियंत्रण	명사 (남)	지배, 관리; 통제, 제어, 규제	B2-4-मु
नियत	형용사	정해진, 확정된; 규정된; 억제된, 절제된, 통제된; 정해진, 확정된; 규정된; 억제된, 절제된, 통제된; 임명된, 배치된, 지정된	B2-3-प
नियामक	명사 (남)/ 형용사	제어하는 사람, 키잡이/ 통제하는, 제어하는	B2-3-प
नियोजन	명사 (남)	임명; 고용; 지시, 명령; 계획	B2-1-वा
निरक्षर	형용사	글을 모르는, 문맹의, 까막눈의; 배우지 못한; 무식한, 무지한	B2-5-सु
निराधार	형용사	근거 없는, 사실 무근의; 무력한	B2-6-वा
निरूपण	명사 (남)	조사; 설명; 규정	B2-5-सु
निरूपित	형용사	설명된, 분석된; 규정된; 제시한	B2-8-वा
निरोग	형용사	병이 없는, 건강한	B2-2-सु

निर्धारण	명사 (남)	확정, 결정; 부과(賦課)	B2-2-वा
निर्भय	형용사	겁 없는, 두려움 없는, 무서워하지 않는	B2-11-सु
निर्भयता	명사 (여)	대담무쌍, 대담	B2-11-सु
निर्भर	형용사	의존하는, 의지하는	B2-5-सु
निर्विवाद	형용사	반론의 여지가 없는, 부인할 수 없는, 명백한	B2-7-वा
निवारक	형용사	예방하는, 방지하는; 막는, 없애는; 멈추게 하는	B2-3-प
निवेश	명사 (남)	입장; 거주; 투자	B2-7-सु
निशान	명사 (남)	표, 표시, 표식; (신체의) 점; 날인, 인; 흔적, 자국	B2-10-प
निशाना	명사 (남)	과녁, 표적, 목표(물); (비난, 조롱, 풍자의) 대상	B2-12-मु
निश्चयी	명사 (남)	확신, 자신감	B2-2-मु
निश्चित	형용사	확실한, 확고한; 결정된, 확정적인; 정해진	B2-1-प
निष्क्रमण	명사 (남)	외출; 물러남; 비움; 니슈끄라만(신생아가 태양을 보러 처음 외출하는 힌두교 의례)	B2-1-मु
निष्पक्ष	형용사	중립적인, 중립의; 공평한, 공정한	B2-7-मु
निष्पादन	명사 (남)	수행, 이행, 완수, 달성	B2-5-मु
निहायत	부사/ 형용사	극도로, 극히/ 지나친, 극도의	B2-7-वा
निहितार्थ	명사 (남)	함축된 의미, 내포된 의미, 숨은 뜻	B2-11-वा
नींव	명사 (여)	기초, 근간, 토대	B2-1-मु
नीड़	명사 (남)	둥지, 보금자리	B2-11-मु
नीम	명사 (남)	님나무(멀구슬나무과의 상록 교목)	B2-5-प
नीलकंठ	명사 (남)/ 형용사	목과 날개 부분이 푸른 빛을 띠는 작은 새; 공작새; 시바 신/ 푸른 목을 지닌	B2-4-प
नुमा	접미사	보여주는, ~인 듯한, ~과 같은	B2-7-वा
नृत्यकला	명사 (여)	무용, 무용예술	B2-9-प
नेटवर्क	명사 (남)	네트워크, 망	B2-4-मु
नेविगेशन	명사 (남)	항해, 네비게이션	B2-4-मु
नेहरू	명사 (남)	자와하르랄 네루(인도 초대 총리)	B2-6-सु
नैदानिक	형용사	임상의; 약물의	B2-3-प
नैवेद्य	명사 (남)	(신에게 바치는) 공물	B2-11-प
नोटबंदी	명사 (남)	(2016 인도 화폐개혁 시 시행된) 지폐 통용 금지	B2-12-मु
पंक्तिबद्ध	형용사	줄 서 있는	B2-9-प
पंगु	형용사/ 명사 (남)	절름발이의; 기형의/ 절름발이	B2-12-वा
पंचभूत	명사 (남)	(인도 철학에서 말하는 모든 물질의 기원인) 다섯 가지 요소, 흙, 물, 불, 공기, 대기	B2-1-मु
पंचायत	명사 (여)	빤짜야뜨(구성원들에 의해 선출되거나 지명된 대표자 5인이 이끄는 마을 회의·모임), 인도 촌락 단위로 구성된 자치 기구	B2-7-सु

पंजीकृत	형용사	기재된, 등록된	B2-3-प
पंथनिरपेक्ष	형용사	세속적인, 세속의	B2-12-प
पखवाड़ा	명사 (남)	2주일, 2주간	B2-8-मु
पखावज	명사 (남)	빠카와즈(장구 모양의 작은 북)	B2-9-मु
पड़ाव	명사 (남)	(잠시 멈추거나 환승하는) 장소; 정류장; 야영지; (군대) 진지, 진영; 단계	B2-1-मु
पढ़ाना	동사 (타)/ 동사 (사)	가르치다, 공부시키다/ 읽게 하다	B2-1-सु
पत्थरबाज़ी	명사 (여)	돌팔매질, 돌멩이질	B2-12-मु
पत्र	명사 (남)	편지; 신문; 서류; 잎, 이파리	B2-10-प
पदबंध	명사 (남)	[문법] 구(句, 구절	B2-11-मु
पदम	명사 (남)	빠담(야생 체리나 앵두)	B2-9-प
पदवी	명사 (여)	지위, 등급; 칭호	B2-11-प
पदार्थ	명사 (남)	물질; 본질; 목적; 의미	B2-2-प
पद्य	명사 (남)	운문; 시	B2-11-प
परमात्मा	명사 (남)	최고신, 지고의 존재, 궁극의 존재	B2-1-वा
परहेज़	명사 (남)	(도덕·종교·건강의 이유로 인한 음식·술 등의) 자제, 절제	B2-6-वा
परिकल्पना	명사 (여)	가설; 가정; 상상	B2-4-प
परिक्रमा	명사 (여)	(주위를) 돌아 거닐기; 순행, 순회, 회전	B2-4-मु
परिचयकर्ता	명사 (남)	안내인	B2-10-सु
परिचायक	명사 (남)	(무엇인가에 대한) 실례, 증표; 암시	B2-9-वा
परिचालन	명사 (남)	운행, 운영	B2-10-सु
परिचालित	형용사	작동되는, 운행되는	B2-10-सु
परिणय	명사 (남)	결혼; 힌두 결혼식날 신랑이 신부를 성화 주위로 이끄는 행동	B2-1-मु
परिणामतः	부사	결과적으로, 그 결과로, 따라서	B2-2-वा
परिप्रेक्ष्य	명사 (남)	관점, 시각, 인식체계; 배경, 사정	B2-1-प
परिभाषित	형용사	설명된, 정의된	B2-1-प
परिमाप	명사 (남)	치수, 크기; 양; 주위, 둘레	B2-4-प
परियोजना	명사 (여)	프로젝트, 기획, 과제	B2-4-मु
परिवर्तन	명사 (남)	변화, 변동; 전환; 변경, 개조; 이동, 이전	B2-11-सु
परिशेष	명사 (남)/ 형용사	나머지, 잔여/ 남은	B2-11-प
परिष्कार	명사 (남)	정화, 정제; 장식, 단장	B2-9-मु
परिष्कृत	형용사	정화된, 정제된; 잘 갖추어진; 잘 꾸며진	B2-1-वा
परीक्षण	명사 (남)	심사, 시험, 채점, 테스트; 조사, 검사	B2-3-प
पर्यावरण	명사 (남)	환경	B2-12-प
पलना	동사 (자)	양육되다, 길러지다	B2-1-मु

पलायन	명사 (남)	탈주, 탈출, 도피, 내버리고 떠남	B2-8-मु
पश्चिमी	형용사	서쪽의, 서부의, 서향의; 서양의, 서구의	B2-8-मु
पसारना	동사 (타)	퍼트리다, 흩어 놓다; (손발을) (내)뻗다, 펴다	B2-11-मु
पहर	명사 (남)	3시간에 해당하는 시간 단위(밤낮이 각각 4개의 पहर로 구성)	B2-6-मु
पाँव	명사 (남)	발; 정강이	B2-4-वा
पारदर्शिता	명사 (여)	투명; 멀리 봄, 원시(遠視)	B2-7-सु
पारित	형용사	통과된, 지나버린	B2-10-सु
पार्किंग	명사 (남)	주차; 주차 지역	B2-9-सु
पार्सल	명사 (남)	소포; 꾸러미, 짐	B2-10-प
पालतू	형용사	길들여진, 애완의, 사육된	B2-9-सु
पावन	형용사/ 명사 (남)	성스러운, 경건한, 거룩한, 순수한/ 회개; 고행	B2-11-वा
पावर	명사 (남)	힘; 전기	B2-11-प
पिटना	동사 (자)	두들겨 맞다; 지다, 패배하다; (타악기 등이) 연주되다	B2-6-मु
पित्त	명사 (남)	쓸개, 담낭; 담즙; 분노	B2-2-प
पिसना	동사 (자)	가루가 되다; 고통받다, 엉망이 되다; 탈진하다	B2-2-प
पीड़ित	형용사	고통받는, 괴로워하는, 시달리는; 병든; 억압당하는; 파괴된, 붕괴된	B2-10-मु
पीढ़ी	명사 (여)	혈통; 가계; 가문; 집안; 세대	B2-2-वा
पीनक	명사 (여)	(술이나 약에 의한) 인사불성, 무기력한 상태	B2-6-मु
पुंसवन	명사 (남)	뿐사와나(임신한 지 3개월 전후에 치르는 힌두교 의례)	B2-1-मु
पुण्य	명사 (남)	미덕; 선, 덕행/ 상서로운, 성스러운	B2-9-सु
पुनश्च	명사 (남)/ 부사	추신(追伸)/ 다시, 또	B2-11-प
पुरातन	형용사	옛날의, 고대의, 구식의/ 과거, 고대	B2-4-प
पुष्ट	형용사	잘 먹는, 영양이 좋은; 건장한, 튼튼한; 확인된; 돋우는	B2-2-वा
पूँजी	명사 (여)	자본, 자본금, 자금	B2-12-वा
पूरब	명사 (남)/ 형용사	동(東), 동쪽/ 동부의; 동쪽의; 이전의	B2-1-सु
पूरबी	형용사	동쪽의, 동부의; 동양의	B2-11-प
पूर्ण	형용사	완전한, 온전한; 가득한, 빈 공간이 없는; 모든; 전체의	B2-1-वा
पूर्णत:	부사	완전히, 전적으로	B2-10-सु
पूर्णतया	부사/ 형용사	절대적으로, 철저히, 완전히/ 순전한, 완전한	B2-4-प
पूर्वक	접미사	~하게, ~를 가지고 ~와 함께	B2-11-मु
पूर्वज	명사 (남)/ 형용사	조상, 선조/ 먼저 태어난	B2-2-वा
पूर्वसूचना	명사 (여)	예보, 예측; 사전 공지나 경고; 전조, 암시; 예감	B2-10-सु
पृथक	형용사	분리된, 해체된, 따로 떨어진; 다른	B2-1-वा
पृथ्वी	명사 (여)	지구; 땅, 대지, 육지	B2-1-मु

पेश	불변화사	전에, 정면에, 앞에; 출석한, 출두한	B2-9-प
पैमाना	명사 (남)	측정도구, 계량도구; 척도, 기준	B2-2-प
पोषक	형용사	도움이 되는; 영양이 되는, 자양(분)이 되는	B2-2-प
पोस्टकार्ड	명사 (남)	엽서, 그림엽서	B2-10-प
प्यासा	형용사	목마른, 갈증나는; 갈망하는, 열망하는	B2-6-मु
प्रकोप	명사 (남)	격노, 격분, 분노, 진노; 맹위, 맹렬, 격렬	B2-5-प
प्रक्षेपण	명사 (남)	던짐, 투척, 사출(射出); 투사, 투영; 발사	B2-4-मु
प्रक्षेपित	형용사	던져진, 투척된, 사출된, 쏘아 내보낸; 투사된, 투영된; 발사된	B2-4-वा
प्रगट	형용사	드러난, 나타난; 명백한, 분명한	B2-4-प
प्रचलन	명사 (남)	동향, 추세; 용법, 사용; 유행, 널리 퍼짐, 보급	B2-4-प
प्रचुर	형용사	풍부한, 많은; 충분한	B2-12-मु
प्रजनन	명사 (남)	생식, 번식	B2-1-वा
प्रजातंत्रवाद	명사 (남)	공화주의	B2-6-मु
प्रणाली	명사 (여)	제도, 체제; 체계; 방법	B2-3-वा
प्रतिकार	명사 (남)	복수, 보복, 대갚음; 보상; 응징; 반대	B2-6-मु
प्रतिपादित	형용사	설명된, 해설된; 공표된; 결정된, 규정된	B2-1-वा
प्रतिपाल्य	형용사/ 명사 (남)	보호받는; 부양되는/ 피보호자; 피부양자	B2-12-प
प्रतिबंधित	형용사	제한된; 금지된	B2-7-मु
प्रतिमा	명사 (여)	상(像), 우상; 이미지; 아이콘	B2-7-प
प्रतिरक्षीकरण	명사 (남)	면역(법), 면역 조치; 예방접종	B2-3-प
प्रतिलिपि	명사 (여)	복사, 카피(copy), 모사(模寫); 필사(筆寫), 수사(手寫)	B2-12-मु
प्रतिष्ठा	명사 (여)	명예, 평판, 명성, 명망; 위신, 체면, 면목; 품위, 품격; 개안(開眼), 신상 설치	B2-12-प
प्रतिष्ठित	형용사	명예로운, 평판 좋은, 명망 높은, 존경받는; 위엄 있는, 품위 있는; 설립된, 설치된	B2-4-मु
प्रतीक	명사 (남)	상징; 부호, 기호	B2-11-मु
प्रतीत	형용사	~인 듯한, ~로 느껴지는, ~인 것처럼 보이는, ~로 여겨지는; (가정, 추정으로) 아는, 짐작되는, 추측되는; 알려진	B2-1-वा
प्रत्यक्ष	형용사/ 부사	(눈에) 보이는, 눈 앞의; 분명한, 명백한, 선명한; 직접적인/ 눈 앞에서, 직접	B2-12-मु
प्रथा	명사 (여)	관습, 풍습, 관례; 제도; 규범, 규칙	B2-12-प
प्रदत्त	형용사	주어진, 수여된, 제시된	B2-10-वा
प्रदर्शन	명사 (남)	보여주기; 전시, 전람, 진열; 시위, 시위행위; 상영, 공연, 상연(上演); (생각, 의견 등의) 발로(發露), 시현(示現)	B2-4-मु
प्रदर्शनी	명사 (여)	전람회, 전시회, 박람회; 디스플레이(display)	B2-9-सु
प्रदर्शित	형용사	보여지는; 전시된, 진열된; 실린	B2-4-प

प्रधानता	명사 (여)	중요성; 유명함; 탁월함, 뛰어남; 우세함	B2-12-सु
प्रबंधन	명사 (남)	관리; 경영	B2-4-मु
प्रभावकारिता	명사 (여)	유효; 효능, 효험	B2-3-प
प्रभावकारी	형용사	효과적인; 영향력 있는; 인상적인	B2-3-प
प्रभावी	형용사	효과적인; 영향력 있는, 효력이 있는; 시행되는	B2-3-प
प्रभुत्व	명사 (남)	지배, 통치; 위엄; 위대함	B2-12-प
प्रमाणित	형용사	증명된, 입증된, 보증된; 확실한, 신뢰할 만한	B2-2-वा
प्रमुखता	명사 (여)	중요성; 두드러짐, 현저함; 지배, 우월	B2-9-मु
प्रमेय	형용사/ 명사 (남)	입증 가능한; 추정 가능한; 확인되는/ [수학] 정리(定理)	B2-4-प
प्रमोद	명사 (남)	환희, 기쁨, 유쾌	B2-6-मु
प्रयत्न	명사 (남)	노력; 시도	B2-7-मु
प्रयुक्त	형용사	쓰인, 사용된; 이용된, 응용된, 적용된; 결합된, 연결된, 연합된	B2-4-प
प्रयुक्ति	명사 (여)	적용, 응용	B2-5-वा
प्रवाहिनी	명사 (여)	흐르게 하는 것, 강(江)	B2-11-प
प्रविष्ट	형용사	들어간, 입장한	B2-4-वा
प्रशांत	형용사	움직임 없는, 멈춘; 평화로운; 고요한; 죽은	B2-4-मु
प्रसाद	명사 (남)	기쁨; 은혜, 호의; 청정, 깨끗함; 건전; 신에게 바치는 공물	B2-11-मु
प्रसारित	형용사	전파된, 보급된; 방송되는; 발표된; 펼쳐진, 팽창된	B2-9-प
प्रसिद्ध	형용사	유명한, 저명한	B2-1-सु
प्रसिद्धि	명사 (여)	명성; 평판	B2-9-मु
प्रस्तावित	형용사	제안된; 상정된	B2-10-सु
प्रांत	명사 (남)	지방, 지역; 주(州); 영토	B2-7-मु
प्राकृतिक	형용사	자연의, 자연계의, 자연적인; 천연의; 자연스러운, 당연한; 물질세계의	B2-1-मु
प्राचीनकाल	명사 (남)	고대; 옛날	B2-1-मु
प्राचीनतम	형용사	가장 오래된	B2-1-प
प्राणायाम	명사 (남)	호흡 제어 훈련	B2-2-सु
प्राणी	명사 (남)/ 형용사	생명체, 생물, 동물; 사람, 인간/ 생명이 있는	B2-6-मु
प्रातः	명사 (남)/ 부사	이른 아침, 조조(早朝), 새벽/ 이른 아침에, 새벽에	B2-6-मु
प्रातःकालीन	형용사	이른 아침의	B2-11-मु
प्राथमिकता	명사 (여)	우선, 우선권; 맨 처음; 선행	B2-3-प
प्राधान्य	명사 (남)	우세, 우월; 지배	B2-6-मु
प्राधिकृत	형용사	권한이 있는; 공인된; 적법한	B2-10-मु
प्राप्ति	명사 (여)	득함, 얻음; 획득, 취득, 습득, 입수; 수령, 수취; 달성, 성취; (연극 등의) 대단원; 도달, 당도	B2-1-मु

प्रारूप	명사 (남)	밑그림, 초안; 구성방식, 서식	B2-10-सु
प्रावधान	명사 (남)	조항; 규정	B2-1-प
प्रासंगिक	형용사	관련 있는; (전후사정과) 관계된; 유의미한	B2-3-मु
प्रासंगिकता	명사 (여)	관련(성); 연계(성)	B2-1-प
प्रियदर्शी	형용사	모두에게 다정한, 모두에게 사랑을 베푸는	B2-6-प
प्रीमियम	명사 (남)/ 형용사	(한 번에 또는 정기적으로 내는) 보험료; 할증료/ 프리미엄(premium)	B2-10-प
प्रेरणा	명사 (여)	고무, 고취, 격려, 권장; 자극, 자격(刺激); 영감; 발상, 착상; 유도, 유발; 감흥	B2-4-सु
प्रेरणास्त्रोत	명사 (남)	영감의 원천	B2-9-प
प्रेषित	형용사	고무된, 자극된; 전달된, 보내진	B2-11-वा
प्रौद्योगिकी	명사 (여)	기술	B2-4-मु
फलक	명사 (남)	판; 박(箔); 면; 장(場), 영역	B2-8-वा
फ़व्वारा	명사 (남)	분수	B2-9-सु
फ़ायदेमंद	형용사	유익한, 이로운; 유용한	B2-12-वा
फ़ारसी	명사 (여)	페르시아어	B2-9-मु
फ़िज़ूल	형용사	헛된, 소용없는; 불필요한	B2-2-वा
फुर्तीला	형용사	활기 넘치는, 활발한; 재빠른	B2-2-वा
फैलाना	동사 (타)	퍼트리다; (팔, 다리를) 뻗다; 펼치다	B2-1-सु
बँधना	동사 (자)	묶이다, 고정되다; 투옥되다; 통제되다; (서약, 계약 등에) 매이다	B2-1-प
बंगाल	명사 (남)	벵갈	B2-9-वा
बंगाली	형용사/ 명사 (여)	벵갈의, 벵갈과 관련된/ 벵갈어	B2-9-वा
बंदी	명사 (남)/ 명사 (여)	포로; 죄인, 죄수/ 묶음; 폐함, 폐쇄, 정지; 투옥	B2-12-मु
बंदूक़	명사 (여)	총포(銃砲), 총, 소총	B2-8-प
बंध	명사 (남)	매듭, 묶음; 감금, 억류	B2-10-प
बंधुता	명사 (여)	형제애; 동료애, 동지애	B2-12-प
बखान	명사 (남)	찬사, 칭찬; 서술, 기술, 설명	B2-11-वा
बचकाना	형용사	유치한, 어린애 같은	B2-7-वा
बछड़ा	명사 (남)	수송아지	B2-1-वा
बजाय	부사	대신에	B2-2-मु
बड़ा-बूढ़ा	형용사/ 명사 (남)	늙은, 나이 든/ 어르신; 노인	B2-6-मु
बढ़ना	동사 (자)	자라다; 크다; 나아가다; 전진하다; 증가하다; 심해지다	B2-2-मु
बढ़ाना	동사 (타)	증가시키다; 올리다; 기르다; 증진시키다	B2-1-मु

बढ़ोतरी	명사 (여)	증가, 증대; 추가	B2-8-वा
बतलाना	동사 (타)	이야기하다, 말하다; 알리다	B2-7-मु
बतौर	불변화사	~처럼, ~와 같이; ~로서	B2-4-मु
बदनाम	형용사	악명 높은; 오명을 입은	B2-8-प
बदनामी	명사 (여)	악명, 악평; 오명; 불명예, 망신	B2-8-प
बदले	부사	대신에	B2-5-मु
बरक़रार	형용사	확립된; 고수하는; 굳은, 단단한; 안정된; 살아 있는	B2-2-प
बरतना	동사 (타)	다루다, 취급하다; 수행하다	B2-5-मु
बलिदान	명사 (남)	봉헌, 제물을 바침; 순국, 순교	B2-4-मु
बहुतायत	명사 (여)	풍부; 과잉, 과다	B2-2-वा
बहुधा	부사	종종; 대체로, 일반적으로	B2-9-मु
बहुविचित्र	형용사	가지각색의, 다양한; 변덕스러운; 놀라운, 경이로운	B2-9-प
बाँसुरी	명사 (여)	방수리(인도 전통 관악기)	B2-9-वा
बांग्ला	형용사/ 명사 (여)	벵갈의, 벵갈과 관련된/ 벵갈어, 방글라어	B2-5-मु
बांग्लादेश	명사 (남)	방글라데시	B2-6-प
बाज़ी	명사 (여)	내기, 도박, 노름	B2-6-मु
बाध्य	형용사	얽매인, ~해야 하는; 강요된; 의무가 있는	B2-10-मु
बालक	명사 (남)	남자아이, 소년; 아들	B2-1-मु
बावरची	명사 (남)	요리사	B2-6-मु
बाहरी	형용사	밖의, 바깥쪽의; 외부의, 외래의; 외면의, 표면적인; 별개의	B2-4-वा
बाह्य	형용사	밖의, 바깥쪽의, 표면의, 외형상; 외부의	B2-4-वा
बिंदु	명사 (남)	(액체) 방울; 점; (어떤 물질의) 작은 부분; 비자음 기호	B2-7-मु
बिंब	명사 (남)	상(像); 영상(映像, 影像), 반영; 형상, 인상; 심상(心象), 표상(表象); 해와 달의 표면	B2-11-मु
बिखरना	동사 (자)	흩어지다; 산란(散亂)하다; 산재(散在)하다; 헝클어지다; 붕괴되다; 분해되다; 분열되다; 파열되다	B2-11-मु
बिखेरना	동사 (타)	흩뜨리다, 산란(散亂)시키다; 헝클어뜨리다, 어지르다, 산재(散在)시키다; 붕괴시키다, 분열시키다, 파열시키다	B2-11-मु
बिछना	동사 (자)	펴지다; 깔리다, 놓이다	B2-6-मु
बिल	명사 (남)	법안; 계산서(bill)	B2-7-मु
बिसात	명사 (여)	체스판	B2-6-मु
बीचोंबीच	부사/ 명사 (남)	한가운데에, 정가운데에/ 한가운데, 정가운데	B2-9-मु
बीजगणित	명사 (남)	대수학	B2-4-प
बुज़ुर्ग	형용사/ 명사 (남)	늙은, 나이 든; 노인	B2-6-मु
बुनियादी	형용사	기본의, 기초적인	B2-3-मु

बुलावा	명사 (남)	부름, 호출; 소환	B2-6-मु
बूँद	명사 (여)	방울; 정액	B2-6-मु
बेगम	명사 (여)	귀부인, 상류층 여성, 부인; 아내, 처; 왕비, 왕후; (카드 게임의) 여왕	B2-6-मु
बेढब	형용사	다루기 힘든; 태도나 방식이 좋지 않은; 보기 흉한, 못생긴	B2-6-मु
बेलनाकार	형용사	원통형(의)	B2-9-मु
बेहिसाब	형용사	셀 수 없는; 무한의; 매우 많은	B2-12-वा
बैंकिंग	명사 (남)	은행업무(banking)	B2-3-वा
बोआई	명사 (여)	씨 뿌림, 파종(播種)	B2-8-मु
बोड़ो	명사 (여)	보로어	B2-5-मु
बोलचाल	명사 (여)	(일상적) 대화, 회화; 구어, 구두어; 구어체; (대화하는) 관계	B2-11-प
ब्याज	명사 (남)	이자(利子)	B2-12-मु
भंगिमा	명사 (여)	구부러짐, 비틀림; 굴곡, 경사	B2-9-प
भंडार	명사 (남)	창고, 저장고; 기금; 금고	B2-12-मु
भर	형용사	모든, 전체의, 전부의 가득한; [명사, 동사와 연결되어] 범위의 한정, 한도; 명사와 함께] 전부, 전체	B2-2-मु
भरा	형용사	가득 찬	B2-5-मु
भली-भाँति	부사	잘, 제대로; 전적으로; 완전히	B2-10-मु
भार	명사 (남)	짐, 하물; 무게, 중량; 책임, 임무, 책무, 부담	B2-4-प
भारतवासी	형용사/ 명사 (남)	인도에 거주하는; 인도 토종의/ 인도인	B2-11-वा
भारतीयता	명사 (여)	인도다움, 인도적인 특질	B2-11-मु
भाव	명사 (남)	감정, 느낌, 기분; 정신, 의식; 취지, 의향; 관념, 생각; 존재; 가격, 시가(時價)	B2-9-प
भाषाई	형용사	언어의, 언어와 관련된	B2-5-मु
भिन्नता	명사 (여)	분리, 구분; 다름, 차이	B2-9-मु
भीतरी	형용사	안의, 내부의; 숨겨진	B2-2-वा
भूटान	명사 (남)	부탄	B2-6-प
भूभाग	명사 (남)	영토; 대지	B2-6-प
भेदभाव	명사 (남)	차별; 불평등	B2-12-प
भैंस	명사 (여)	암컷 물소	B2-9-वा
भैंसा	명사 (남)	수컷 물소	B2-9-वा
भोलानाथ	명사 (남)	시바 (신)	B2-11-प
भौगोलिक	형용사	지리의, 지리상의, 지리적인	B2-5-मु
भौतिक	형용사	물질의, 물질적인; 물리적인; 5대원소 (땅, 물, 불, 바람, 하늘)와 관련된; 육체의, 신체의; 유령의	B2-1-वा

भ्रम	명사 (남)	주회(周回), 배회, 방황; 혼란, 혼동; 착각; 의심, 의혹; 실신; 환각(幻覺)	B2-9-वा
भ्रष्टाचार	명사 (남)	타락, 악행, 불품행(不品行); (관료 등의) 부패, 오직(汚職)	B2-4-मु
भ्रष्टाचारी	형용사	부패한, 타락한	B2-12-मु
भ्रातृत्व	명사 (남)	형제지간; 형제애	B2-12-प
भ्रामक	형용사	혼동시키는, 혼란을 주는; 악한, 교활한; 잘못된	B2-8-मु
मँगवाना	동사 (사)	(~로 하여금) 요구하게 하다, 요청하게 하다	B2-12-मु
मंगल	형용사/ 명사 (남)	상서로운; 길조의/ 화성; 화요일	B2-4-मु
मंच	명사 (남)	단(壇), 단상(壇上); 연단(演壇), 강단; 무대	B2-1-मु
मंज़ूरी	명사 (여)	받아들임, 승인; 인정, 찬성; 동의	B2-3-प
मंत्रालय	명사 (남)	부(部), 부처(部處) (행정 기관 분류 단위)	B2-3-प
मज़बूती	명사 (여)	견고함, 단단함, 굳음; 확고함; 강력함	B2-4-वा
मजलिस	명사 (여)	많은 사람들이 모이는 곳; 회의; 모임, 집회	B2-6-मु
मढ़ना	동사 (타)	덮어씌우다; (금박 등을) 입히다; (죄 등을) 전가하다, 탓하다	B2-9-मु
मणि	명사 (여)	보석	B2-4-प
मणिपुरी	형용사/ 명사 (여)	마니뿌르의, 마니뿌르와 관련된/ 마니뿌리어	B2-5-मु
मतदाता	명사 (남)	투표자, 유권자, 선거인	B2-10-मु
मद	명사 (남)	취함, 취한 상태, 도취; 중독; 열정, 열광, 열중; 오만, 거만, 자만	B2-6-मु
मददगार	명사 (남)	도와주는 사람; 조력자; 지지자	B2-2-मु
मदिरापान	명사 (남)	폭음; 음주벽, 음주광	B2-9-मु
मधुमय	형용사	꿀같이 달콤한, 감미로운; 아름다운; 즐거움을 주는	B2-11-मु
मधुमेह	명사 (남)	당뇨병	B2-2-मु
मधुर	형용사	단, 달콤한, 감미로운; 사랑스러운; 즐거운, 유쾌한, 쾌활한	B2-11-मु
मनवाना	동사 (사)	(~로 하여금) 받아들이게 하다, (~라고) 여기게 하다	B2-4-वा
मनहूस	형용사	불길한, 상서롭지 못한; 운이 없는	B2-6-मु
मनीषी	형용사/ 명사 (남)	생각이 깊은, 사색적인; 현명한/ 성자, 현자	B2-1-प
मनोविज्ञान	명사 (남)	심리학	B2-1-प
मनोवैज्ञानिक	형용사/ 명사 (남)	심리적의, 심리학과 관련된/ 심리학자	B2-1-मु
मनोहर	형용사	사랑스러운; 아름다운, 예쁜; 매혹적인, 매력적인; 상쾌한, 기분 좋은	B2-11-मु
मयूर	명사 (남)	공작새	B2-4-प
मराठी	명사 (여)/ 형용사	마라티어/ 마라티어로 된, 마라티어와 관련된	B2-5-मु
मल	명사 (남)/ 형용사	오물, 배설, 분뇨, 인분(人糞); 때, 불순물; 부정(不淨)한 것; 죄, 악/ 더러운, 부정(不淨)한, 불결한; 나쁜, 사악한	B2-2-प
मलयालम	명사 (여)/ 형용사	말라얄람어/ 말라얄람어로 된, 말라얄람어와 관련된	B2-5-मु

मशविरा	명사 (남)	조언, 충고	B2-6-मु
मसलन	부사	예를 들어, 예컨대	B2-1-वा
मस्तिष्क	명사 (남)	뇌; 두뇌, 머리	B2-1-मु
महत्ता	명사 (여)	중요성, 중대성	B2-4-प
महत्त्वाकांक्षी	형용사	야망을 가진, 포부를 지닌	B2-4-मु
महर्षि	명사 (남)	대선인, 위대한 현인	B2-1-प
महाद्वीप	명사 (남)	대륙	B2-4-वा
महानगर	명사 (남)	대도시, 메트로폴리탄	B2-10-प
महामारी	명사 (여)	유행병, 전염병	B2-8-मु
महारानी	명사 (여)	왕비, 여왕	B2-7-प
महासागर	명사 (남)	대양, 대해	B2-4-मु
महिमा	명사 (여)	중요성; 위대함, 위력; 훌륭함, 멋짐; 영광	B2-11-वा
महुआ	명사 (남)	마후아 나무(북인도의 평야와 숲에 서식하는 나무)	B2-11-प
माँग	명사 (여)	가르마	B2-9-प
माक़ूल	형용사	적절한, 적당한	B2-6-मु
मातहत	형용사/ 명사 (남)	종속된; 부차적인, 부수적인/ 부하, 하급직원; 아랫사람	B2-12-मु
मातृभूमि	명사 (여)	모국, 조국	B2-7-प
मानक	명사 (남)/ 형용사	표준, 기준, 척도/ 표준의, 기준의	B2-12-मु
मानदंड	명사 (남)	기준, 척도; 규격; 규범	B2-2-मु
मानववाद	명사 (남)	인본주의, 인간주의, 휴머니즘	B2-12-प
मानवीय	형용사	인간의, 인간과 관련된; 인간적인	B2-5-मु
मानसून	명사 (남)	우기; 장맛비; 계절풍, 몬순	
मानाववादी	형용사/ 명사 (남)	인본주의의, 인간주의의/ 인본주의자, 인간주의자	B2-6-प
मान्य	형용사	존경하는, 존경할 만한, 훌륭한; 신뢰할 만한, 확실한, 인정받은; 유효한, 효력 있는	B2-4-प
माप	명사 (여)	측정, 측량, 계측, 계량; 규모; 기준, 척도; 양(量), 분량	B2-4-प
मायना	명사 (남)	의미, 뜻	B2-1-वा
मारक	형용사	죽이는; 파괴적인	B2-5-प
मारपीट	명사 (여)	구타, 두들겨 팸, 폭력(행위); 싸움	B2-6-मु
मार्क	명사 (남)	표시, 흔적, 자국(mark)	B2-7-वा
मार्केट	명사 (남)	시장, 마켓(market)	B2-7-मु
मार्स	명사 (남)	화성(mars)	B2-4-मु
मालिका	명사 (여)	선, 줄; 열, 행	B2-9-प
मास	명사 (남)	달, 월(月)	B2-2-मु
मास्क	명사 (남)	마스크(mask)	B2-3-प

मित्रता	명사 (여)	우호, 우정, 우애	B2-11-वा
मिशन	명사 (남)	임무; (특정 임무를 맡은) 사절단; 전도(mission)	B2-4-मु
मिश्र	형용사	혼합된, 섞인, 서로 다른 종류로 이루어진	B2-9-मु
मिस्र	명사 (남)	이집트	B2-6-प
मिस्सा	명사 (남)/ 형용사	(콩 등의) 겨; 다양한 종류의 콩을 섞어 만든 가루/ 혼합된 콩가루도 만든	B2-6-मु
मीडिया	명사 (남)	미디어(media)	B2-7-वा
मीनार	명사 (여)	첨탑, 뾰족탑	B2-6-मु
मुंडन	명사 (남)	문단(아이의 머리를 처음 깎는 힌두교 의례)	B2-1-मु
मुक़ाबला	명사 (남)/ 후치사	대치, 대립, 도전; 반대, 저항, 대적; 경쟁, 경합, 경연; 비유, 대조/ (~에) 대항하여	B2-7-वा
मुख	명사 (남)	얼굴; 입; 문; (그릇의) 주둥이; (연극) 발단; 시작	B2-11-मु
मुखर	형용사	거침없이 말하는, 기탄없이 말하는; 수다스러운; 눈에 잘 띄는, 중요한	B2-7-वा
मुख्यतः	부사	주로; 대부분, 대개	B2-4-प
मुनि	명사 (남)	성자; 고행자; 수도자	B2-9-प
मुरझाना	동사 (자)	시들다, 쪼그라들다; 희미해지다	B2-11-वा
मुसीबत	명사 (여)	어려움, 슬픔; 고통; 곤경	B2-5-प
मुस्लिम	형용사	이슬람교의, 회교의	B2-8-मु
मुहरा	명사 (남)	앞면, 정면; 얼굴; 외모, 얼굴 생김새; 체스의 졸(卒)	B2-6-मु
मुहैया	형용사	준비된, (장비 등을) 갖춘; 접근가능한, 구할 수 있는	B2-3-मु
मूत्र	명사 (남)	소변, 오줌	B2-2-प
मूलतः	부사	원래, 본래; 태초에	B2-4-प
मूल्यवान्/ मूल्यवान्	형용사	가치 있는, 귀중한	B2-2-वा
मृत	형용사	죽은, 사망한, 생명이 없는; 탄원한, 구걸한; 쇠멸한, 쇠망한, 멸종된	B2-1-मु
मृदंग	명사 (남)	므리당그(남인도의 타악기, 까르나띡 음악에서 리듬 반주를 맡은 북의 일종)	B2-9-वा
मेवाड़ी	명사 (여)/ 형용사	메와리어/ 메와르의, 메와르와 관련된; 메와리어로 된	B2-5-मु
मेहराब	명사 (남)	아치형 구조물, 아치형 천장	B2-6-मु
मैथिली	명사 (여)/ 형용사	매틸리어/ 미틸라의, 미틸라와 관련된; 매틸리어로 된	B2-5-मु
मोटापन	명사 (남)	비만; 비대	B2-2-प
मोटापा	명사 (남)	비만; 비대	B2-2-मु
मोह	명사 (남)	망상, 환상, 환영, 환각; 무지, 어리석음; 애착, 애정, 사랑	B2-11-प
मौखिक	형용사	구어의, 구두의, 구술의; 목소리의, 발성의	B2-7-वा
मौरूसी	형용사	조상 전래의, 세습의	B2-6-मु
मौसमी	형용사	계절의, 계절성의; 기후의; 제철의, 알맞은, 시절의	B2-8-मु
मौसमी	명사 (여)	스위트 레몬	B2-8-मु
यंत्र	명사 (남)	기계, 기구, 도구	B2-9-मु
यज्ञोपवीत	명사 (남)	야교쁘비뜨(힌두교도들이 지니는 성사(聖絲) 수여를 기념하는 의례)	B2-1-मु
यथास्थिति	부사	현재 상황에 맞게; 형편 대로	B2-12-प
यश	명사 (남)	영광, 영예; 명성, 명예; 찬양, 찬사	B2-11-वा
यशोगान	명사 (남)	칭찬, 찬양, 찬사	B2-11-वा
यात्रा-वृत्त	명사 (남)	여행담, 여행기	B2-11-प
यान	명사 (남)	차량, 탈것, 운송 수단, 객차; 운동, 이동; 원정, 탐험	B2-4-मु
युक्त	형용사	연결된, 결합된; 연합된; 적절한, 적당한, 맞는	B2-2-मु
युवा	명사 (남)/ 형용사	젊음; 젊은이, 청년/ 젊은, 발랄한, 원기 왕성한	B2-7-मु
यूनान	명사 (남)	그리스	B2-6-प
यौन	형용사	성적인, 성(관계)에 관한; 생식의	B2-1-मु
यौनविज्ञान	명사 (남)	성 과학, 성 연구	B2-1-वा
रंग-बिरंगा	형용사	색색의, 알록달록한; 다채로운	B2-11-मु
रईस	명사 (남)/ 형용사	영토를 지닌 자, 귀족; 부자/ 부유한, 돈 많은	B2-6-मु
रक्तचाप	명사 (남)	혈압	B2-2-मु
रणनीति	명사 (여)	전략, 전술	B2-5-प
रद्दी	형용사/ 명사 (여)	낮은, 하위의, 열등한; 쓸모없는, 무가치한, 소용없는/ 못 쓰는 종이, 파지(破紙), 패지(敗紙), 휴지	B2-12-मु
रहन	명사 (여)	삶의 방식, 생활양식	B2-1-मु
राग	명사 (남)	감정; 사랑, 애정; 격정; 곡조, 가락; 발을 붉게 물들이는 빨간 염료	B2-9-मु
राजकर्मचारी	명사 (남)	(정부) 관료	B2-6-मु
राजकाल	명사 (남)	통치 기간, 치세	B2-6-प
राजकुमार	명사 (남)	왕자	B2-7-प
राजकुमारी	명사 (여)	공주	B2-7-प
राजनैतिक	형용사	정치의, 정치와 관련된; 정치적인	B2-12-प
राजभाषा	명사 (여)	공용어	B2-5-मु
राजवंश	명사 (남)	왕조, 왕가	B2-6-प
राजशाही	형용사	제왕의, 군왕의, 국왕의; 제왕에게 걸맞은	B2-7-वा
राजस्थानी	명사 (여)/ 형용사	라자스타니어/ 라자스탄의, 라자스탄과 관련된; 라자스타니어로 된	B2-9-वा

राज्यक्षेत्र/ राजक्षेत्र	명사 (남)	영토, 영역	B2-7-मु
राष्ट्रगान	명사 (남)	국가(國歌)	B2-11-प
राष्ट्रध्वज	명사 (남)	국기(國旗)	B2-12-प
राह	명사 (여)	통로, 복도; 길, 궤도, 노선; 과정; 접근 방법; 방법, 체계	B2-8-प
रिकार्ड/ रिकॉर्ड	명사 (남)	(글 등으로 남긴) 기록; 녹음, 녹화(record)	B2-4-मु / B2-10-मु
रिवाज	명사 (남)	관습, 관례	B2-9-वा
रूपी	접미사	~의 형태를 한, ~의 모양의	B2-11-मु
रूस	명사 (남)	러시아	B2-4-मु
रेलवे	명사 (여)	철로, 철도, 선로	B2-3-वा
रोमन	형용사	고대 로마의	B2-1-सु
लकड़ी	명사 (여)	나뭇가지; 목재	B2-9-वा
लगवाना	동사 (사)	(~로 하여금) 붙이게 하다, 연결하게 하다	B2-10-सु
लगाम	명사 (여)	고삐, 굴레	B2-12-मु
लघु	형용사/ 명사 (남)	작은, 짧은; 가벼운; 약한, 힘없는; 조금의, 약간의, 경미한; 하찮은, 사소한; 날쌘, 민첩한, 신속한; 어린/ 단음(短音), 단모음	B2-7-सु
लत	명사 (남)	중독	B2-6-वा
लताड़ना	동사 (타)	짓밟다, 짓뭉개다; 발길질하다, 걷어차다; 힐책하다, 책망하다; 퇴짜 놓다, 일축하다	B2-6-मु
लपसी	명사 (여)	라쁘씨(구운 밀가루에 시럽을 넣고 만든 반죽 또는 그 반죽에 우유기름을 넣고 만든 당과); 라쁘씨(소금 간을 하고 물에 끓인 밀죽)	B2-2-प
लयबद्ध	형용사	리드미컬한, 율동적인; 화음의, 화성의	B2-11-प
लाँघना	동사 (타)	건너다, 넘다, 가로지르다; 위반하다, 침해하다, 범하다	B2-12-सु
लाई	명사 (여)	끓인 쌀은 말려서 볶은 것	B2-5-मु
लागत	명사 (여)	예산, 경비; 가격	B2-4-मु
लादना	동사 (타)	(짐을) 싣다, 태우다, 적재하다	B2-7-वा
लाभार्थी	형용사/ 명사 (남)	이익이 있는, 이득을 보는/ 수혜자, 수령인	B2-3-प
लालिमा	명사 (여)	붉음, 붉은 기	B2-11-मु
लावण्यमय	형용사	아름다운, 우아한	B2-9-प
लिखित	형용사/ 명사 (남)	쓰인/ 편지, 서류	B2-10-मु
लिप्त	형용사	발린, 발라진; 몰두한, 몰입한; 빠진, 휩쓸린, 붙들린; 애착을 가진, 집착하는, 매혹된	B2-6-मु
लिहाज़	명사 (남)	신중, 세심; 고려; 염려, 배려	B2-5-मु
लुढ़कना	동사 (자)	미끄러지다, 구르다; 쓰러지다, 무너지다; 하락하다	B2-11-मु
लेप	명사 (남)	연고, 고약	B2-9-मु

लॉटरी	명사 (여)	복권(lottery); 추첨, 제비	B2-10-प
लोकतंत्रात्मक	형용사	민주주의의, 민주(주의)적인; 평등에 입각한	
लोन	명사 (남)	대출(금), 융자(금)(loan)	B2-12-मु
लौ	명사 (여)	불길, 불꽃	B2-9-मु
व	접속사	그리고, ~와(과)	B2-1-वा
वंदना	명사 (남)	경배, 참배, 기도	B2-9-प
वक्ता	명사 (남)	화자(話者), 말하는 사람	B2-1-सु
वज़ीर	명사 (남)	고관, 각료; 총리; 체스의 퀸	B2-6-मु
वनवास	명사 (남)	숲에 삶, 거주; 숲으로 추방, 유배	B2-7-प
वन्य	형용사	자연의; 숲의; 야생의, 야만의	B2-12-प
वर्गीकरण	명사 (남)	분류, 유형, 범주	B2-5-मु
वर्गीय	형용사	계급의, 계층의	B2-12-वा
वर्णमाला	명사 (여)	문자, 알파벳	B2-4-प
वर्णित	형용사	서술된, 기술된, 묘사된	B2-7-मु
वर्षीय	형용사	~살의, ~세(歲)의; ~년(年)의	B2-8-प
वसा	명사 (여)	지방, 비계, 기름	B2-2-मु
वस्तुस्थिति	명사 (여)	사태, 상황; 사실, 실제	B2-8-वा
वस्त्र	명사 (남)	천, 옷감, 피륙, 포목, 직물; 옷, 의복	B2-9-सु
वाणी	명사 (여)	소리, 목소리, 음성; 말, 언어; 사라스와띠 여신	B2-5-मु
वात	명사 (남)	공기, 바람; 통풍	B2-2-प
वातावरण	명사 (남)	대기(大氣), 공기; 분위기, 상태, 상황; 환경	B2-4-वा
वाद	명사 (남)	주장, 제의, 제안; 분쟁, 분규, 논란, 논쟁, 반박; - 주의	B2-1-वा
वादक	명사 (남)	연주자, 악사(樂士)	B2-9-मु
वादन	명사 (남)	연주	B2-9-मु
वाद्य	명사 (남)/ 형용사	악기/ 음악적인; 연주에 알맞은	B2-9-मु
वापसी	형용사/ 명사 (여)	돌아오는/ 돌아옴, 복귀, 귀환; 돌려줌, 반납, 환불; 귀촌, 귀향; 왕복표	B2-1-मु
वायरस	명사 (남)	바이러스(virus)	B2-3-प
वायु	명사 (여)	공기; 바람; 숨, 호흡	B2-1-मु
वासना	명사 (여)	바람, 열망, 욕망; 욕정, 성욕	B2-1-मु
वास्तविकता	명사 (여)	진실, 사실; 본질; 실재	B2-6-वा
विकार	명사 (남)	변화, 변형, 변이; 악화, 저하, 퇴보; (신체 기능의) 장애 (이상), 기형; 불안, 동요; [문법] 활용, 어형 변화	B2-2-मु
विचरना	동사 (자)	거닐다, 돌아다니다	B2-4-सु
विचारशील	형용사	사려 깊은; 숙고하는	B2-6-मु

विजेता	명사 (남)	승자; 정복자	B2-11-प
वित्त	명사 (남)/ 형용사	부, 재산; 자금, 재정, 재무/ 알려진; 이해된	B2-7-मु
विद्यारंभ	명사 (남)	아이가 학문의 길에 들어선 것을 축하하는 의식	B2-1-प
विद्वान्	형용사/ 명사 (남)	박식한, 학습된; 정통한/ 학자	B2-9-मु
विधान	명사 (남)	헌법, 법령; 규칙, 규정; 방법, 기법	B2-12-सु
विधायक	형용사/ 명사 (남)	입법의, 입법부의/ 입법자; 하원의원	B2-3-प
विधिवत्	부사	법에 따라; 규칙에 따라	B2-1-मु
विनष्ट	형용사	망가진, 파괴된	B2-6-वा
विनिमय	명사 (남)	교환; 환전	B2-3-वा
विनिमेय	형용사	교체할 수 있는, 교환할 수 있는	B2-3-प
विन्यास	명사 (남)	차서(次序), 조정; 배치, 배열, 안배; 체계, 구조; 정리	B2-5-वा
विपक्ष	명사 (남)/ 형용사	반대편, 반대당, 야당; 반대 사례/ 반대하는, 적대적인	B2-12-मु
विफल	형용사	실패한; 효과가 없는, 효과적이지 못한	B2-5-प
विभा	명사 (여)	빛남, 밝음; 광휘, 광채	B2-11-मु
विभागीय	형용사	부서의, 부서별의; 특정 분과와 관련된	B2-10-प
विभिन्नता	명사 (여)	고립, 격리, 분리; 별개, 독특; 다양성, 가지가지; 차이, 격차	B2-3-मु
विमर्श	명사 (남)	숙고, 논의, 토론; 조사, 연구, 비평; 자문, 협의, 충고	B2-12-मु
विरह	명사 (남)	이별, 헤어짐	B2-6-मु
विराजमान	형용사	빛나는, 반짝이는; 자리한, 참석한; 앉은	B2-4-प
विरोधी	형용사/ 명사 (남)	반대의, 대립의; 적의의, 적대적인; 반항의, 저항의/ 적, 반대자	B2-8-वा
विलंब	명사 (남)	지연, 지체, 미룸, 연기; 느림, 꾸물거림	B2-10-प
विलासिता	명사 (여)	호화로움, 사치; 관능적임, 요염함	B2-6-मु
विलासी	형용사	호화로운, 사치스러운; 관능적인, 요염한	B2-6-मु
विवादित	형용사	논란이 있는, 논쟁이 붙은	B2-9-मु
विविधता	명사 (여)	다양성, 가지가지, 각양각색	B2-1-प
विवेकाधिकार	명사 (남)	분별(력); 신중함	B2-10-सु
विशालतम	형용사	가장 큰, 가장 거대한	B2-1-प
विशालता	명사 (여)	광대(함), 막대(함)	B2-11-मु
विशिष्ट	형용사	특수한, 특별한; 구별되는, 독특한; 두드러진, 빼어난, 발군의, 현저한; 중요한, 유명한; 대표적인	B2-3-मु
विशेषज्ञ	명사 (남)	전문가, 권위자	B2-8-मु
विश्लेषण	명사 (남)	분석; 해석	B2-2-वा
विश्लेषित	형용사	분석된, 검토된	B2-2-वा
विश्वप्रसिद्ध	형용사	세계적으로 유명한	B2-6-प
विश्वविख्यात	형용사	세계적으로 잘 알려진	B2-11-प

विश्वसनीय	형용사	믿음직한, 믿을 수 있는, 신뢰할 만한	B2-8-मु
विषमता	명사 (여)	차이, 불균등, 불균형; 부조화	B2-8-मु
विषैला	형용사	독이 있는, 유독성의	B2-10-प
विस्तृत	형용사	확장된, 확대된; 널찍한; 상세한, 정교한; 대규모의, 광범위한	B2-3-मु
विस्फोटक	형용사/ 명사 (남)	폭발하는, 터지는/ 폭발물, 폭탄; 폭죽	B2-10-प
वीथिका	명사 (여)	골목, 좁은 길; 회랑; 갤러리	B2-11-प
वीर्य	명사 (남)	정액; 힘, 효능; 활력, 활기; 용맹, 용감, 용기	B2-1-मु
वृक्ष	명사 (남)	나무, 수목	B2-11-मु
वृद्धि	명사 (여)	증가, 인상, 확대; 성장, 번영, 발전, 진보; 이중모음	B2-1-प
वृहत्	형용사	큰, 거대한; 광범위한	B2-7-मु
वेद	명사 (남)	베다	B2-1-मु
वेदांग	명사 (남)	베당가(베다 학습에 필요한 여섯 가지 보조 학문)	B2-4-प
वेदारंभ	명사 (남)	베다람브(학업의 시작을 기념하는 힌두교 의례)	B2-1-मु
वेब	명사 (남)	웹(web)	B2-3-मु
वेबिनार	명사 (남)	웨비나(webinar)	B2-3-मु
वैक्सीन	명사 (남)	백신(vaccine)	B2-3-प
वैदिक	형용사	베다의, 베다와 관련된; 베다 시대의	B2-1-मु
वैध	형용사	법률의, 합법적인, 적법한; 적당한, 유효한	B2-10-सु
वैविध्य	명사 (남)	다양성	B2-5-मु
व्यंजित	형용사	가리킨, 지시된; 암시된; 기호로 표시된	B2-11-मु
व्यक्तिगत	형용사	자신의; 개인의, 개인적인, 사적인; 성격의, 개성의	B2-12-प
व्यतीत	형용사	지나간, 가버린; 죽은; 버림받은; 무시된	B2-6-मु
व्यथित	형용사	고통받는, 괴로워하는; 고뇌하는	B2-10-वा
व्यवसायी	형용사/ 명사 (남)	직업적인; 전문적인; 수고로운, 힘든/ 실업가, 사업가; 상인	B2-6-मु
व्यवहारिक	형용사	현실성 있는, 실현 가능한; 실용적인	B2-2-वा
व्यवहार्यता	명사 (여)	실행할 수 있음, (실행) 가능성; 실용성	B2-4-मु
व्याख्यायित	형용사	설명된, 이해된; 해석된	B2-11-वा
व्यापक	형용사	넓은, 널리 퍼진; 광범위한; 포괄적인; 보편적인	B2-5-मु
व्याप्त	형용사	만연한, 퍼진; 배어든, 스며든; 번진	B2-1-प
शतरंज	명사 (여)	체스게임, 서양장기	B2-6-मु
शरण	명사 (여)/ 명사 (남)	은신, 피난, 피신, 도피; 은신처, 피난처, 피신처, 도피처/ 피난자; 보호자	B2-1-सु
शर्म	명사 (여)	수치, 치욕, 창피, 부끄러움; 얌전함, 겸손	B2-8-प
शहरी	형용사	도시의; 도시에 거주하는; 문명화된	B2-5-सु
शाश्वत	형용사	죽지 않는, 불후의, 불멸의; 영원한, 영구한, 항구적인	B2-1-प

शिखा	명사 (여)	(삭발의례에서 머리 한 가운데 깎지 않고 남겨둔) 머리 다발; (공작새, 닭 등의) 볏	B2-4-प
शिलालेख	명사 (남)	비문(碑文), 비판(碑版)	B2-4-प
शिल्प	명사 (남)	기술; 공예, 수공예; 예술	B2-11-मु
शिल्पकला	명사 (여)	공예, 수공예	B2-11-प
शिविर	명사 (남)	야영지, 진영(陣營); 캠프	B2-11-वा
शिष्टता	명사 (여)	정중함, 공손함, 예의; 교양; 세련됨	B2-1-प
शीत	형용사/ 명사 (남)	추운, 차가운; 나른한, 졸린/ 추위, 차가움, 냉기; 서리, 결빙	B2-2-प
शीर्ष	명사 (남)	맨 위 (부분), 꼭대기, 정상	B2-6-प
शुद्धि	명사 (여)	정화; 세정; 깨끗함, 청결함, 순수함; 정화의례	B2-1-मु
शुल्क	명사 (남)	수수료; 요금; 세금; 관세	B2-3-मु
शुल्व	명사 (남)	제사의식; 규칙, 규정	B2-4-प
शैल	형용사/ 명사 (남)	바위의; 돌이 많은; 단단한/ 산; 바위, 암석, 커다란 돌	B2-12-मु
शैली	명사 (여)	양식, 스타일; 수단, 방법; 문체; 말씨; 관습, 풍속	B2-2-वा
शोषण	명사 (남)	착취, 수탈	B2-12-सु
श्रद्धांजलि	명사 (남)	헌사, 찬사; 경의, 존경의 표시	B2-7-प
श्रम	명사 (남)	수고, 노동, 노역; 피로, 소진, 탈진	B2-2-मु
श्रमिक	형용사/ 명사 (남)	노동의, 노동과 관련된; 노동자	B2-3-प
श्रवण	명사 (남)	귀; 청각(기관); 청취	B2-1-मु
श्रेय	명사 (남)	공(功), 공적; 선(善); 업적; 명예	B2-4-वा
श्वास	명사 (남)	호흡	B2-2-प
सँजोना	동사 (타)	정리하다, 정렬시키다; 보기 좋게 배치하다	B2-1-सु
सँभलना	동사 (자)	지지되다; 회복되다, 기운을 내다; 의식하다, 주의하다; 개선되다	B2-6-मु
सँभालना	동사 (타)	보살피다, 돌보다; 다루다, 처리하다	B2-7-प
संकलन	명사 (남)	수집; 편집, 편찬; 모음집	B2-1-प
संकल्पना	명사 (여)	개념, 관념	B2-1-वा
संकेत	명사 (남)	신호; 힌트, 암시; 상징, 기호	B2-7-सु
संक्रमित	형용사	감염된, 전염된	B2-3-प
संक्रामक	형용사	전염되는, 전염성의	B2-5-प
संख्यात्मक	형용사	수의, 수와 관련된, 숫자로 나타낸	B2-4-प
संगठन	명사 (남)	조직, 단체, 기구; 조합, 연합	B2-4-मु
संगीतमय	형용사	음악의, 음악적인	B2-9-सु
संग्रहण	명사 (남)	저장, 축적; 수집, 채집	B2-12-मु
संग्रहित	형용사	결집된; 축적된	B2-12-वा
संघर्ष	명사 (남)	다툼, 충돌; 투쟁, (물리적) 갈등; 마찰, 문지름; 악의, 적의, 적개심	B2-1-मु
संघीय	형용사	연방의, 연방정부의; 단체의, 조합의	B2-4-मु
संचार	명사 (남)	(생각이나 의견의) 소통, 전달; 통신; 보급, 전파	B2-4-मु
संचारित	형용사	전송된, 전달된; 유포된	B2-8-प
संचालन	명사 (남)	운영, 지휘, 진행; 융통, 운용; 관리, 감독	B2-5-वा
संज्ञेय	형용사	인식할 수 있는, 인지할 수 있는	B2-10-मु
संतोषजनक	형용사	만족스러운, 충분한	B2-10-सु
संथाली	명사 (여)/ 형용사	산탈리어/ 산탈의, 산탈과 관련된; 산탈리어로 된	B2-5-मु
संदिग्ध	형용사	의심스러운, 미심쩍은, 수상쩍은	B2-3-प
संपन्न	형용사	완성된, 성취된; 부유한, 풍족한, 유복한; 부족함 없는; 옳은, 올바른; 숙성된, 완전히 발달된; 얻은, 획득한; 발생한, 일어난; 운 좋은	B2-1-मु
संपुष्ट	형용사	확고부동한; 확인된	B2-10-वा
संपूर्णता	명사 (여)	완전성; 전체성; 완결성	B2-1-प
संप्रभुता	명사 (여)	통치권, 자주권	B2-12-प
संबद्ध	형용사	관련된; 연루된; 결합된, 연결된; 소속된	B2-3-वा
संबल	명사 (남)	지지, 후원	B2-9-वा
संयोग	명사 (남)	우연; 조합, 결합, 연결; 집합, 모임; 관계, 애착	B2-1-मु
संरक्षक	명사 (남)/ 형용사	보호자, 수호자; 관리자; 후원자/ 보호하는, 지키는; 후원하는	B2-12-प
संरक्षा	명사 (여)	보호, 수호	B2-11-वा
संवर्धन	명사 (남)	확대, 증대; 증진; 배양, 사육; 진흥	B2-12-प
संविधान	명사 (남)	헌법; 관리; 관습; 정돈; 희귀, 기이	B2-5-मु
संशय	명사 (남)	의심, 의혹	B2-4-वा
संशोधन	명사 (남)	개정, 수정, 정정, 교정; 개선; 정제, 정화	B2-5-मु
संस्करण	명사 (남)	(출간된 책의 형태로 본) 판, (출간 횟수를 나타내는) 판, (시리즈 간행물·방송물의 특정) 호; 의례, 의식; 정제, 제련	B2-11-प
संस्कृत	형용사/ 명사 (여)	교양 있는, 세련된; 정제된, 제련된; 산스끄리뜨어의/ 산스끄리뜨어	B2-9-प
संस्था	명사 (여)	관습; 상태, 상황; 모양; 종결; 모임, 사회단체	B2-8-मु
संस्थापक	명사 (남)	창립자, 설립자	B2-7-प
संहिता	명사 (여)	베다 결집서; 법전, 규정서, 규범서	B2-10-मु
सक्रिय	형용사	활동적인, 적극적인; 가동되는, 작동되는; 날렵한, 신속한	B2-10-वा
सक्षम	형용사	능력이 있는, 역량이 있는, 할 수 있는	B2-4-वा
सघन	형용사	밀집한, 빽빽한; 집중적인, 집약적인	B2-2-मु
सजीव	형용사	살아 있는; 생생한, 생기 있는, 선명한; 활기찬, 활발한	B2-10-प
सट्टा	명사 (남)	투기	B2-6-वा
सतत	부사	항상, 늘; 끊임없이; 계속해서	B2-12-प

सत्ता	명사 (여)	존재, 실재; 힘, 권한, 권위; 행정권; 통치, 지배	B2-7-मु
सत्यता	명사 (여)	진실성; 사실성; 정직성, 참됨	B2-10-वा
सत्यानाश	명사 (남)	파괴, 전멸, 절멸	B2-6-वा
सत्यापन	명사 (남)	입증, 증명, 검증	B2-3-प
सत्र	명사 (남)	회기(會期); 학기	B2-3-प
सदबुद्धि	명사 (여)	지혜, 지성, 슬기	B2-3-वा
सदमा	명사 (남)	충격, 가격; 고통, 괴로움; 후회; 큰 손실	B2-8-प
सधना	동사 (자)	성취되다, 이루어지다, 달성되다; 제자리에 놓아지다	B2-6-वा
सनद	명사 (남)	증서, 증명서	B2-6-मु
सनातन	형용사	아주 오래된, 시작을 알 수 없는; 오래 이어진; 영원한, 영구한, 영속하는; 확고한	B2-1-मु
सन्नाटा	명사 (남)	적막, 정적, 고요	B2-6-मु
सन्यासी	명사 (남)	은둔자, 산야시	B2-1-सु
सफलतापूर्वक	부사	성공적으로	B2-4-मु
सबूत	명사 (남)	증거, 증언	B2-8-मु
सब्सिडी	명사 (여)	보조금(subsidy)	B2-12-मु
समग्रता	명사 (여)	전체, 총액, 총수; 온전함, 완전한 상태	B2-5-मु
समझौता	명사 (남)	합의, 동의; 타협, 절충, 조정, 화해; 조약, 협정	B2-7-वा
समरसता	명사 (여)	조화, 화합	B2-12-प
समर्थक	명사 (남)/ 형용사	지지자, 조력자, 후원자; 양육자/ 지지하는, 옹호하는	B2-6-प
समवेत	형용사	모인; 축적된, 쌓인; 합친	B2-9-वा
समाजवादी	형용사/ 명사 (남)	사회주의의, 사회주의와 관련된/ 사회주의자	B2-12-प
समाना	동사 (타)/ 동사 (자)	채우다, 넣다, 담다; 붙이다, 박아 넣다/ 채워지다; 스며들다, 배어들다	B2-1-प
समापन	명사 (남)	끝, 마침	B2-10-वा
समावर्त्तन	명사 (남)	사마바르딴(학생기를 마치고 스승의 허락을 받아 집으로 돌아가는 것을 기념하는 힌두교 의례); 수료식	B2-1-मु
समाविष्ट	형용사	함유된, 포함된; 통합된; 체화된	B2-11-वा
समावेश	명사 (남)	포함; 관여, 개입, 연루; 합체, 합류	B2-9-प
समिति	명사 (여)	위원회, 협의회; 협회, 단체	B2-7-वा
समीकरण	명사 (남)	[수학] 방정식; 동등화, 균등화	B2-8-वा
समीर	명사 (남)	산들바람, 미풍	B2-11-मु
समुचित	형용사	적합한, 적절한; 당연한; 옳은	B2-8-वा
समुदाय	명사 (남)	단체, 그룹; 분파; 협회; 무리, 떼; 다수	B2-1-सु
समुद्री	형용사	바다의, 해양의, 대양의; 바다에서 난, 해산의	B2-7-मु

सम्मिलित	형용사	결합된, 연합의; 포함한; 참석한	B2-10-मु
सरकारी	형용사	정부의, 정부와 관련된; 행정의, 공무의; 공공의	B2-8-वा
सराहना	동사 (타)/ 명사 (여)	칭찬하다, 칭송하다, 찬사를 보내다/ 칭찬, 칭송, 찬사, 갈채	B2-7-मु
सरोवर	명사 (남)	호수; 연못	B2-11-मु
सर्जन	명사 (남)	버림, 풀어 줌; 창조; 제조, 제작	B2-9-सु
सर्प	명사 (남)	뱀	B2-4-प
सर्वत्र	부사	모든 곳에, 어디에나; 여기저기, 도처에; 모든 경우에	B2-6-मु
सर्वश्रेष्ठ	형용사	최고의, 최상의, 가장 훌륭한	B2-3-मु
सर्वाधिक	형용사	가장 많은, 최대의; 가장 큰	B2-1-मु
सर्विस	명사 (여)	서비스(service)	B2-3-वा
सर्वोपरि	형용사	최우수의; 가장 중요한	B2-4-प
सलीक़ा	명사 (남)	예절, 예의; (제대로 된) 방법; 재주, 솜씨; 행동거지	B2-2-वा
सशुल्क	형용사	유료의, 요금을 내는, 비용을 지불하는	B2-9-सु
सहन	명사 (남)	인내, 참을성; 관대, 관용	B2-1-मु
सहनशीलता	명사 (여)	인내, 참을성; 관용, 아량	B2-1-सु
सहायक	형용사	보조의, 보조하는, 돕는; 부수적인; 지류의, 지점의	B2-5-मु
सहित	부사	함께, 동반하여	B2-10-मु
सहिष्णुता	명사 (여)	용인, 관용, 아량; 인내, 참을성	B2-6-प
साँस	명사 (여)	숨, 호흡	B2-12-वा
सांसद	형용사/ 명사 (남)	의회의, 의회와 관련된/ (의회의) 의원	B2-3-प
साक्षर	형용사	글을 읽고 쓸 줄 아는, 배운; 문자로 구성된	B2-5-सु
साक्षरता	명사 (여)	문해	B2-5-सु
साक्ष्य	명사 (남)	증거, 증언; 증빙	B2-5-वा
सातत्य	명사 (남)	연속성, 지속성, 끊임없음	B2-1-वा
साधना	명사 (여)	(성취를 위한) 노력, 매진(邁進); 신에 대한 헌신, 구도	B2-12-मु
साधारणतः	부사	일반적으로; 대개, 보통	B2-9-प
साधारणतया	부사	일반적으로; 대개, 보통	B2-10-मु
सापेक्ष	형용사	상대적인; 비례하는	B2-12-वा
साबित	형용사	증명된, 증빙된; 견고한; 확고한, 흔들리지 않는	B2-7-मु
सामान्यतः	부사	보통, 대개, 일반적으로; 늘 그렇듯이	B2-2-मु
सामासिक	형용사	합성의; 종합한; 간결한, 간략한; 혼합된, 섞인	B2-12-प
सामूहिक	형용사	대규모의, 집단적인; 대중의, 대중적인; 공동의, 집산화된	B2-12-प
साम्राज्य	명사 (남)	제국, 왕국	B2-6-प
सायं	부사/ 명사 (남)	저녁에, 해 질 녘에/ 저녁, 해 질 녘	B2-9-सु

सारगर्भित	형용사	정수를 지닌, 의미심장한; 간결한, 함축된 의미를 지닌	B2-1-मु
सार्थक	형용사	유의미한, 의미 있는; 유효한, 유용한; 관계 있는	B2-7-वा
सार्थकता	명사 (여)	중요성, 중대성; 함의성; 유용성; 의미, 의의	B2-1-मु
सार्वजनिक	형용사	대중의, 공동의; 보편적인, 대중적인	B2-7-मु
सार्वभौमिक	형용사	일반적인, 전 세계적인; 보편적인	B2-1-सु
साहित्यकार	명사 (남)	문학가, 문인, 작가	B2-11-प
सिंधी	형용사/ 명사 (남)/ 명사 (여)	씬드주의, 씬드주와 관련된/ 씬드 지역 사람/ 씬디어	B2-5-मु
सिंधु	명사 (남)	강; 신두강; 대양, 바다; 신드 지역; 신드 지역 거주자	B2-4-प
सिंहासन	명사 (남)	왕좌, 옥좌; 왕위; 통치권	B2-6-मु
सिटी	명사 (여)	도시(city)	B2-12-मु
सिद्ध	형용사/ 명사 (남)	실현된, 완성된; 획득한; 증명된, 안정된; 성자의, 신성한; 초자연적 힘을 가진, 신격화된/ 성자, 성인; 초자연적 힘을 가진 사람	B2-1-प
सिद्धि	명사 (여)	성취, 달성; 획득, 취득; 실현	B2-12-सु
सियाही	명사 (여)	(검정) 잉크; 어둠, 암흑	B2-9-मु
सींग	명사 (남)	뿔	B2-9-वा
सीमंतोन्नयन	명사 (남)	씨마똔나얀(임신 6~8개월차에 치르는 힌두교 의례)	B2-1-प
सीमित	형용사	제한된, 한정된; 편협한, 협소한	B2-2-मु
सीरियल	형용사/ 명사 (남)	계속하는, 연속적인; 상습적인, 연쇄적인(serial)/ 연속(물); (라디오, 텔레비전 등의) 시리즈	B2-12-मु
सुगंधित	형용사	향기로운, 향긋한	B2-11-वा
सुगम	형용사	쉬운, 용이한	B2-5-वा
सुचारु	형용사	매우 아름다운, 사랑스러운; 매끈한, 매끄러운	B2-12-वा
सुदूर	형용사	매우 먼; 멀리 떨어진; 외딴, 외따로 떨어져 있는	B2-1-सु
सुधार	명사 (남)	개선, 개량; 수정, 바로잡아 고침; 향상	B2-5-सु
सुनिश्चित	형용사	확실한, 확고한; 분명한	B2-3-प
सुप्त	형용사	잠자는, 잠든; 자려고 누운; 휴면 상태의	B2-1-वा
सुप्रीम कोर्ट	명사 (남)	대법원(Supreme Court)	B2-8-सु
सुर	명사 (남)	음색, 음조	B2-9-मु
सुरक्षात्मक	형용사	방어하는; 보호하는, 지키는	B2-3-प
सुशोभित	형용사	화려하게 꾸며진, 멋들어진; 찬란한, 빛나는	B2-11-मु
सूचक	형용사/ 명사 (남)	가리키는, 지시하는; 나타내는; 알리는/ 신호; 지침; 지표	B2-2-मु
सूझना	동사 (자)	지각되다, 인지되다, 생각나다; 나타나다; ~인 것 같다	B2-6-मु
सूत्र	명사 (남)	실; 끈, 줄; 가닥, 맥락; 수뜨라(산스끄리뜨 문헌의 경구); (정보의) 원천, 소스; 공식	B2-4-प

सूरमा	명사 (남)	영웅; 용맹한 사람, 용사; 전사	B2-6-मु
सूर्य	명사 (남)	태양, 해	B2-11-मु
सूर्योदय	명사 (남)	일출	B2-11-मु
सृजन	명사 (남)	창조, 창작; 창세	B2-1-वा
सृजित	형용사	만들어진, 창조된	B2-5-मु
सृष्टि	명사 (여)	창조; 창세; 생산; 우주	B2-1-मु
सेंटर	명사 (남)	센터(centre); 중심, 중앙, 가운데; 중심지	B2-7-सु
सेंटीमीटर	명사 (남)	센티미터(cm, centimeter)	B2-9-मु
सेकंड	명사 (남)	초(秒, second)	B2-3-सु
सेतु	명사 (남)	다리, 교량	B2-9-सु
सेनापति	명사 (남)	지휘관, 장군, 사령관	B2-11-वा
सेमिनार	명사 (남)	세미나(seminar)	B2-3-मु
सोंठ	명사 (남)	말린 생강; 생강 가루	B2-2-प
सोपान	명사 (남)	층계, 계단; 사다리; 계층	B2-1-वा
सौंदर्य	명사 (남)	아름다움; 매력; 광채	B2-9-सु
स्टिक	명사 (남)	막대기(stick)	B2-9-वा
स्टोर	명사 (남)	가게, 상점(store)	B2-3-प
स्तंभ	명사 (남)	기둥, 막대기; (나무) 줄기, 몸통; 제한, 방해; 마비, 마취; 칼럼 (신문, 잡지 따위의 특별 기고)	B2-6-प
स्तरीय	형용사	표준의, 표준에 맞는; 수준의, 등급의	B2-4-सु
स्थगित	형용사	연기된, 지연된, 뒤로 미룬; 잠시 멈춘, 일단 중지된	B2-3-प
स्थापना	명사 (여)	설립, 건립; 창립	B2-6-प
स्थापित	형용사	설립한, 창립한; 건립한, 설치한, 세운; 확실히 자리잡은, 저명한; 위치한	B2-4-वा
स्पष्टता	명사 (여)	분명함, 명백함, 명확함; 선명함, 뚜렷함	B2-4-वा
स्मरण	명사 (남)	기억; 추억; 회상	B2-11-वा
स्मारक	명사 (남)/ 형용사	기념비, 기념물; 기념품/ 기념하는, 기리기 위한	B2-7-प
स्मृति	명사 (여)	기억; 회고, 회상; 추모, 추도; 법전	B2-1-सु
स्वदेशीकरण	명사 (남)	토착화; 현지화	B2-12-मु
स्वप्न	명사 (남)	꿈; 몽상, 공상	B2-7-प
स्वरूप	명사 (남)	본모습; 본성, (타고난) 성격, 특성; 종류; 외관, 모양, 형체; 분신(分身), 화현(化現)	B2-1-प
स्वरोज़गार	명사 (남)	자영업, 자가경영	B2-8-मु
स्वर्ण	명사 (남)	금, 황금	B2-4-प
स्वाभाविक	형용사	자연의, 자연스러운, 당연한; 타고난; 특이한	B2-9-मु

शब्दावली

स्वीकृति	명사 (여)	수락, 승낙, 받아들임; 승인, 허가	B2-1-सु
स्वैच्छिक	형용사	자발적인, 자진한, 원해서 하는	B2-3-प
हक़ीक़त	명사 (여)	현실, 진실	B2-12-वा
हड़प्पा	명사 (남)	하라파(Harappa), 파키스탄의 펀자브 지방에 있는 인더스 문명의 도시 유적	B2-4-प
हथेली	명사 (여)	손바닥	B2-9-वा
हथौड़ी	명사 (여)	(크기가 작은) 망치, 손망치	B2-9-सु
हमलावर	명사 (남)	공격자; 침략자	B2-1-सु
हरदम	부사	항상, 언제나, 늘	B2-10-वा
हर्निया	남성명사	탈장(脫腸)	B2-2-वा
हलुआ	남성명사	할루아(인도식 당과의 한 종류, 할와(हल्वा))	B2-2-प
हल्का	형용사	가벼운, 무겁지 않은; 얇은, 두껍지 않은; (양, 정도 등이) 약간의, 많지 않은; (딱딱하지 않고) 가벼운, 부드러운; 쉬운, 힘들지 않은, 가벼운; 약한, 순한; 사소한, 중요하지 않은; (색이) 연한, 옅은	B2-2-सु
हवाला	명사 (남)	언급; 참조, 인용, 발췌; 위임, 위탁	B2-12-सु
हस्ताक्षरित	형용사	서명된	B2-10-सु
हस्ती	명사 (여)	존재, 실재, 현존; 부, 재산; (은유) 중요한 사람, 유명 인사; 가치	B2-4-सु
हाजमा	명사 (남)	소화; 소화력	B2-2-प
हार्मोन	명사 (남)	호르몬(hormone)	B2-2-सु
हिंद	명사 (남)	인도	B2-5-सु
हिंदुस्तानी	형용사/ 명사 (남)	인도의, 힌두스탄의/ 인도인, 힌두스탄	B2-4-सु
हिंसा	명사 (여)	살해; 폭력	B2-8-प
हृष्ट-पुष्ट	형용사	튼튼한, 건장한	B2-2-वा
हेतु	명사 (남)	원인, 이유; 동기, 목적; 요지, 논점	B2-1-सु
हॉकी	명사 (여)	하키(hockey)	B2-6-वा
हौसला	명사 (남)	용기, 기운; 사기; 야망, 포부, 야심, 의욕	B2-4-सु